सतभैंया पोखरि

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-80-8

दाम : १००

पहिल संस्करण : २०१२

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 09572450405, 09931654742

Satbhaiya Pokhari *: A collection of Maithili Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.*

अनुक्रम-

बिहरन

जहिना बैशाख-जेठक लहकैत धरती अगिआएल वायुमंडलक बीच हवाकेँ खसने, अनायास मेघक छोट-छोट चद्दरि सूर्ज ओढ़ए लगैत, रेलगाड़ीक हुमड़ैत अवाज दौगए लगैत, रहि-रहि कऽ गुलाबी इजोतक संग छिटकए लगैत, तँ अनुमानित मन मानैले बेबस भऽ जाइत जे पानि-पाथर, ठनका संग बिहाड़ि आबि रहल अछि, तहिना रघुनन्दन आ सुलक्षणीक परिवारमे ज्योति कुमारीक जन्मसँ भेलनि।

भलहिं आइ-काल्हि बेटीक जन्म भेने माए-बाप अपन सुभाग्यकेँ दुर्भाग्य मानि मनकेँ कतबो किअए ने कोसथि जे परिवारमे बेटीक आगमन हिमालयसँ समुद्र दिस निच्चाँ मुँहे ससरब छी मुदा से दुनू बेकती सुलक्षणीकेँ नै भेलनि। जहिना गद्दा पाबि कुरसी गदगर होइत तहिना खुशीसँ दुनू प्राणी रघुनन्दनक मन गद-गद। से खाली परिवारे धरि नै सर-समाज, कुटुम-परिवार धरि सेहो छलनि। ओना आन संगी जकाँ रघुनन्दन नै छलाह जे तीन्थिे मासक पेटक बच्चाकेँ दुश्मन बनि पुरुषार्थक मोछ पीजबैत आ ने अपन रसगर जुआनी छोलनी धीपा-धीपा दगैत। दुनू परानी बेहद खुशी! किअए नै खुशी रहितथि, मन जे मधुमाछी सदृश मधुक संग मधुर मुस्कान दैत छलनि। पुरुष अपन वंश बढ़बै पाछू बेहाल आ नारीकेँ हाथ-पएर बान्हि बौगली भरि रौदमे ओँघरा देब कते उचित छी? दुनू प्राणीक वंश बढ़ैत देखि दुनू बेहाल। मन तिरपित भऽ तड़ैप-तड़ैप नचैत।

ओना तीन भाँइक पछाति ज्योतिक जन्म भेल, मुदा तइसँ पहिने बेटीक आगमनो नै भेल छलनि जे दोखियो बनितथि। भगवानोक किरदानी कि नीक छन्हि? नीको केना रहतनि, काजक तते भार कपारपर रखने छथि जे जखन टनकी धड़ै छन्हि तखन खिसिया कऽ किछुसँ किछु कऽ दैत छथि। मुदा से लोक थोड़े मानतनि, मानबो किअए करतनि जखन अपने अपने हाथ-पएर लाड़ि-चाड़ि जीबैए तखन अनेरे अनका दिस मुँहतक्कीक कोन जरूरति छै। किअए ने कहतनि जे अहाँ निर्माता छी तखन तराजूक पलड़ा एक रंग राखू, किअए केकरो जेरक-जेर बेटा दइ छिऐ आ केकरो जेरक-जेर बेटी। जँ देबे करै छिऐ ते बुइध किअए भंगठा दइ छिऐ जे बेटासँ धन अबै छै आ बेटीसँ जाइ छै। जइसँ नीको घरमे चोंगराक जरूरति पड़ि जाइ छै।

उच्च अफसरक परिवार तँए परिवारिक स्तर सेहो उच्च। भलहिं किअए ने माए-बाप छाँटि परिवार होन्हि। खगल परिवार जकाँ सदति गरजू नै।

परिवारक खर्च समटल तइसँ खुलल बजारक कोनो असरि नै। सरकारी दरपर सभ सुविधा उपलब्ध, जइसँ खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ मनोरंजनक ओसार चकमकाइत। भलहिं जेकर अफसर तेकर बात बुझैमे फेर होन्हि। जइसँ महगी-सस्ती बुझैमे सेहो फेर भऽ जाइत होन्हि। मुदा परोछक बात छी चारू बच्चाक प्रति समान सिनेह रहलनि। परिवारमे सभसँ छोट बच्चा रहने ज्योति सबहक मनोरंजनक वस्तु। मुदा गुरुआइ तँ ओहिना नै होइ छै, तँए सभ अपन-अपन महिक्का मनक टेमीसँ सदति देखथि, जप करथि। आखिर के एहेन छथि जे ऐ धरतीपर ज्ञान दानी नै छथि। भलहिं ओ अधखिजुए वा अधपकुए किअए ने होथि। जहिना कोनो माली केर बच्चा पिताक संग जामंतो रंगक फूलक फुलवारीमे जिनगीक अनेको अवस्था देखि चमकैत तहिना भरल-पूरल परिवारमे ज्योतियोकेँ भेल। देखलनि कलीमे जहिना अबैत-अबैत रंगो, सौन्दर्यो आ महको अबैत अछि, तहिना ने जिनगी छी। जँ मनुखकेँ डोरीसँ बान्हल जाय तँ डोरी तोड़ैक उपायो तँ हुनके करए पड़तनि।

समुचित वातावरण रहने ज्योति संगी-साथीक बीच नीकक श्रेणीमे आबि गेली। जहिना संगीक सिनेह तहिना शिक्षकोक सिनेह भेटए लगलनि। टिकट कटाओल यात्री जहिना निश्चिन्तसँ गाड़ीमे सफर करैत तहिना समतल जिनगी पाबि ज्योति आगू बढ़ए लागलि। जिनगीमे बधो अबै छै तइसँ पूर्ण अनभिज्ञ ज्योति। जेना कर्मकेँ धर्म बना जिनगीक बाट बनौने हुअए।

थम्हसँ निकलैत केराक कोसा, जहिना अपन घौड़क संग हत्थो आ छीमियोक अनुमान्ति परिचय दैत, फूलक कोढ़ी फूलक दैत तहिना बच्चेसँ कुमारी ज्योति सुफल जिनगीक अनुमानित परिचय दिअए लागलि। जेना-जेना बौद्धिक विकास होइत गेलनि तेना-तेना तीनू भाँइयो बुझए लगलाह जे ज्योति तेहेन चन्सगर अछि जे आगू किछु जरूर करत। जइसँ भैयारिये जकाँ ज्योतिक संग बेवहार करए लगलाह। लैंगिक प्रभाव ओतए अधिक देखि पड़ैत जतए भाए-बहीन्कि दूरी जते अधिक रहै छै। से रघुनन्दनक परिवारमे नै छलनि दोसर कारण इहो छलनि जे वैचारिक दूरी जेना आन-आन परिवारमे रहैत तेना सेहो नहिये जकाँ छलनि। परिवारक सभ अपन-अपन दायित्व बूझि अपन-अपन काजमे दिन-राति लागल रहैत। ओना ज्योतिकेँ सभ अपना-अपना नजरिये देखैत। गुरुक रूप रघुनन्दन देखथि तँ जगत-जननी जानकीक सुनैनापुर रूप माए देखथि। जइसँ एक-एक लूरि-बुइधकेँ धरोहर जकाँ सजबैत छलीह। भाइक मन सामा-चकेबाक संबंधमे ओझराएल। केना नै ओझराइत? आइ धरिक इतिहासक दूरी जे मेटाइत

देखथि! कतेक प्रतिशत परिवार अखन धरि इतिहासक पन्नामे लिखाएल अछि जइमे भाए-बहिनक शिक्षाक दूरी समतल हुअए। तँए सबहक सिनेहक अपन-अपन कारण। जनकपुरमे जहिना रामकेँ आ मथुरामे कृष्णकेँ देखि, देखिनिहारकेँ भेलनि तहिना ज्योतियोक परिवारमे।

बाल-बोध जहिना अपन मनोनुकूल वस्तु पाबि छाती लगबैत हृदैसँ खुशी होइत तहिना विज्ञान विषयसँ ज्योति सटि गेलि। नीक -विज्ञानक विषयमे-नम्बर आनि बिजलोका जकाँ ज्योति संगियो-साथी, शिक्षको आ मातो-पिताकेँ चमकाबए लगली। हाइ स्कूल पएर दैते जेना अपन आँट-पेट बूझि कोनो विद्यार्थी साइंस तँ कोनो कामर्स तँ कोनो आर्ट विषय चुनि आगू बढ़ैत तहिना ज्योतियो साइंस चुनि नेने रहए। घरसँ बाहर धरि सर्वत्र बहारे-बहार। ऋृषि-मुनिक लेल दुनियाँ जहिना समतल देखि पड़ैत, तहिना स्कूलक शिक्षकक संग दू-दूटा भाए पाबि ज्योतिक दुनियाँ सेहो समतल। जइसँ कोनो तरहक असोकर्ज घरसँ बाहर धरि नहिये। असोकर्ज तँ ओइठाम होइत जतए एक पेरिया चरि पेरियाक -चौबट्टी- मिलैक भौक होइक। भौक तँ ओतए ने बेसी बूझि पड़ैत जतए जेहेन चलनिहार होइत। जइठाम बेसी चलनिहार रहैत ओतए कच्चियो सड़क पक्किये जकाँ सक्कत आ पक्कियो कच्चिये जकाँ बनि जाइत।

साइंस कओलेजसँ ज्योति फिजिक्ससँ नीक नम्वर पाबि एम.एस.सी. केलक। जहिना अखराहापर लपटैत-लपटैत पहलवानक कश बनि जाइत तहिना ज्योतियोकेँ भेल।

'नारी मुक्ति संघ'क स्थापित अध्यक्ष होइक नाते पिता रघुनन्दनक सिनेह आरो बेसी ज्योतिपर। ज्योतिकेँ कओलेज पहुँचैत-पहुँचैत तेसरो भाय नोकरी पकड़ि लेलनि जइसँ आरो बेसी सुविधा भेटलनि। ओना काजकेँ कर्म बना करैक अभ्यास सुलक्षणी बच्चेसँ लगबैत आएल रहनि। जइसँ घरक काजक जहनि ज्योतिक जेहेन तक पकड़ि लेने तँए जहिनगर। सदति कर्मकेँ सहयोगी प्रेमी जकाँ दुलरबैत, प्रेम करैत। तँए कि ज्योति सुलक्षणीक बेटी नै?, परिवारक सभसँ बेसी सिनेही बेटी छियनि। मुदा सुलक्षनीक मनमे सदति एक कचोट कचोटिते रहनि जे कुल कन्या की? कुल तँ अनेको अछि- गुरुकुल, पितृकुल, मातृकुल इत्यादि। जे पश्न अखनो धरि नै सोझरेलनि।
एम.एस.सी. करिते दुनू बेकती रघुनन्दनकेँ जहिना बिनु हवोक पीपरक पात

डोलए लगैत, तहिना ज्योतिक प्रति सिनेह डोलए लगलनि। अनायास दुनूक मनमे प्रश्नपर प्रश्न उठए लगलनि। बीस बर्खक बेटी भऽ गेलि, बिआह करब माए-बापक कर्तव्य कर्म छी। कओलेजक अंतिम सीढ़ीक आगू टपि चुकलि, संग इहो जे पारदर्शी सीसा जकाँ ज्योतिक शरीर देखथि जे जुआनीक रंग सगतरि चमकि रहल छै। ओना कओलेजक आन छात्रा जकाँ नै, मिथिलाक धरोहर कुल-कन्या। जे गुरुकुलमे विद्याध्ययन करैत। दुनू प्राणीक दायित्व बूझि रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलनि-

"ज्योति बिआहै जोकर भेल जाइए से की विचार?"

संयासिनी जकाँ सुलक्षणी उत्तर देलखिन-

"अपन कोनो काज पछुआ कऽ नै रखने छी, जे बाकी अछि अहाँक छी। तइ बीच कि विचार देब।"

पत्नीक उत्तर सुनि रघुनन्दन तिलमिलाइत विचार करए लगलाह। एहेन उटपटांग उत्तर किअए देलनि? मुदा सोलहो आना तँ अनुमानोसँ कोनो बात नै बूझल जा सकैत अछि। नीक हएत जे पुन: प्रश्न उठा आगू बजबाबी। ई तँ निश्चित जे एको परिवारमे काजक हिसाबे सबहक सोचै-विचारै आ बुझैक ढंग फुट-फुट भऽ जाइ छै। भलहिं सासुसँ ऊपर किअए ने जेठ सासु मानल जाए, मुदा सासु तँ सासु होइत। जहिना देवालयक कपाट लग ठाढ़ भक्त हाथ जोड़ि अपन दुखड़ा भगवानसँ सुनबैत तहिना तड़पैत रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलखिन-

"संयासिनी जकाँ किअए घरसँ पड़ाए चाहै छी। की बिसरि रहल छी जे घरनी सेहो छी?"

पतिक गंभीर विचारकेँ आँकिते सुलक्षणीक करेज कलपि गेलनि मुदा पानिक बहैत बेगमे जहिना गोरसँ गोरिया-गोरिया गोर उठाओल जाइत तहिना सुलक्षणी ज्योतिक जिनगीक धारामे ठाढ़ भऽ बजली-

"अहूँ कोनो हूसल नै छी, सभ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ बच्चे बुझैए। मुदा एतए से बात नै छै। अहाँ लिये भलहिं ज्योति बच्चा हुअए मुदा ओ ओइ सीढ़ीपर पहुँचि गेलि अछि जतए मनुख अपन जिनगीक बाट चुनैक गुण प्राप्त कऽ लैत अछि। तँए दुइये प्राणी नै, बेटो-पुतोहुसँ विचारि लिअ।"

सेनट्रल बैंकक ब्रान्च मैनेजर भोगेश्वरक संग ज्योतिक बिआहक बात पक्का भऽ गेल। जहिना ज्योति तहिना भोगेश्वर। अद्भुत मिलानी। विषुवत रेखाक समान दूरीपर जहिना उत्तरो आ दछिनो समान मौसम समान उपजा-बाड़ी होइत अछि, तहिना दुनूक बीच। अलेल कमाइ तँए छिड़िआएल जिनगी

भोगेश्वरक। हजारो कोस हटि भोगेश्वर अपन परिवारसँ रहैत। नव-नव वस्तुसँ भरल बजार, जे दुनियाँक एक कोणसँ दोसर कोण पहुँचैत, भोगेश्वर चकाचौंधमे हरा अपन माइयो-बाप आ भाइयो-भौजाइसँ दूर भऽ गेल। किअए ने हएत? जखन सभकेँ अपन कर्मक फल भोगैक अधिकार छै तँ भोगेश्वर किअए ने भोगत। एक तँ दिन राति रूपैयाक पेंच-पाँचक गुत्थी खोलैक क्षमता तइपर जेकरे माए मरै तेकरे पात नै भात?'

नीक बर पाबि रघुनन्दन चंदाक तिजोरी -नारी मुक्ति संघक कोष- खोलि देलनि। कोनो अनचितो तँ नहिये केलनि। चंदो तँ मुक्तियेक लेल अछि। एक तँ मनी-ग्रुप अर्थशास्त्रसँ पी.चए.डी. तइपर सँ सेन्ट्रल बैकक शाखा-प्रबंधक, किअए नै भोगेश्वर अपन अधिकारक उपयोग करत। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। तइ बीच ज्योतिकेँ, मास दिन पूर्व देल आवेदनक, इन्टर-भ्यूक चिट्ठी भेटल। तहूमे बिआहक दिनसँ तीन दिन पूर्वक। दोहरी काज परिवारमे बजरि गेल। छोड़ैबला कोनो नै। तइपर ज्योति सेहो बिआहकेँ माइनस आ इन्टर-भ्यूकेँ पलसमे हिसाब लगबैत। बिआहक ओरियानक धुमसाही परिवारमे। मुदा ज्योति विपरीत दिशामे मुड़ि इन्टर-भ्यू दइले अड़ि गेलीह। इन्टर-भ्यूओ तँ लगमे नहिये जे दू-चारि घंटा समय लगा पुराओल जा सकैए। दछिन भारत लऽग नै। केतबो तेज दौड़ैबला गाड़ी भेल तैयो चौबीस घंटासँ पहिने नै पहुँचि सकैए। तहूमे बिआह सन शुभ काजमे बर-कन्याकेँ सुरक्षित रहब जरूरी अछि। सीमा केना पार कएल जा सकैए। गाड़ी-सवारीक कोन ठेकान। ज्योतिक प्रश्न परिवारकेँ स्तब्ध केने। जेठ भाय प्रेमकुमारक सिनेह ज्योतिपर उमड़ि पड़लनि। हिसाब लगबैत पिताकेँ कहलखिन-

“बिआहक दिनसँ चौबीस घंटा पहिने अवश्य पहुँचि जाएब। अहाँ सभ बिआहक ओरियान करू ज्योतिक संग जाइ छी।”

प्रेम कुमारक विचारसँ रघुनन्दन दुनू काज होइत देखि खुशी भेलाह। मुदा सुलक्षणीक मन आरो बेसी कड़ुआए लगलनि। खोलि कऽ बजती केना? एक तँ पुरुष-प्रधान परिवार तइपर सभ बापुतक एक विचार। स्त्रीगणक कोनो ठेकाने नै। कहैले ने चारि गोरे परिवारमे छी मुदा ननदि-भौजाइक संबंध केहेन होइ छै से कि केकरोसँ छिपल छै। नीक हएत जे पोल्हा कऽ बेटियेकेँ पूछि ली। मुदा विध-बेवहारपर नजरि पड़िते पुन: मन भगंठि गेलनि। बिनु विधि-बेवहारक बिआह केहेन हएत। रस्ते पेरे तँ सेहो लोक बिआह कऽ लइए मुदा परिवार केहेन बनै छै। आठो दिन तँ कम-सँ-कम विध-बेवहारमे लगबे करत।

ज्योतिक इन्टर-भ्यूओ आ बिआहो भऽ गेलनि। अद्भुत बिआह तँए समाजमे चर्चक विषय। चर्चो मुँह देखि मुंगबा परसैत। जेहेन मुँह तेहेन मुंगबा। कियो दुनू बेक्तीक -बर-कन्याक- शिक्षाक चर्च करैत तँ कियो युगक अनुकूल बर-कन्याक जोड़ाक। कियो विध-बेवहारक लह्रासक चर्च करैत तँ कियो समाजक अगुआएल नारी जातिक। कतौ भोज-भातक चर्च चलैत, तँ कतौ गमैया बरियातीक संग बजरूआ बरियातीक। मेल-पाँच बरियाती तँए सबहक बात दमगर। इनार पोखरिक घाटसँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा धरि संसद चलैत। मुदा सबहक मन ओइ बिन्दुपर अँटकि जाइत जतए भोगेश्वर आ ज्योतिक वैवाहिक बंधन रहए।

बिआहक तीन दिन पछाति भोगेश्वर दुरागमन प्रस्ताव केलनि। प्रस्ताव सुनि परिवारमे सबहक मनमे सभ रंगक विचारक संग उत्तरो उठलनि। मुदा आगू बढ़ि कियो बजैले तैयार नै। मने-मन सुलक्षणी सोचथि जे बिआहक साल तँ बर-कन्याक विध-बेवहार होइत अछि। जँ विध-बेवहारक कारण नै होइ छै तँ किअए साओन-भादो आ पूस-माघ बेटीक विदागरी नै होइए। बिनु विधि-बेवहारक बिआह तँ ओहने होइत जेहेन बिनु मसल्लाक तरकारी। कहैले ने लोक बजैत अछि जे फल्लां चीजक तरकारी खेलौं मुदा कि बिनु मसल्लेक बनल छलै। जँ मसल्लोक सागिरदीसँ तरकारी बनल तँ ओकर चर्च किअए ने होइ छै। तर-ऊपर मनकेँ होइतो कंठसँ निच्चे सुलक्षणी विचारकेँ अँटका रखलीह। रघुनन्दनक मनमे भिन्ने विचार औंढ़ मारैत रहनि। मुदा गारजनक हैसियतसँ धड़-फड़ा कऽ बाजबो उचित नै बूझि सुरखुराइत मनकेँ रोकने रहलाह। मुदा तैयो होन्हि जे बिनु कहने बुझता केना? भीतरे-भीतर मन बजैत रहनि जे जहिना बीजू -आँठीसँ जनमल साल-दू सालक आमक गाछ-गाछ कलमी डारिमे छीलि कऽ डोरीसँ बान्हि किछु मास जुटैले छोड़ि देल जाइत तहिना ने बिआहो छी। फागुनक कन्या जँ फागुनेमे सासुर चलि जाथि तँ समन जरब देखब सासुरमे नीक हएत? चैताबरक टाहि सासुरमे नव-कन्याक देब उच्चित हएत? आमक गाछीक मचकीक बारहमासा आ साओनक राधा-कृष्णक कदमक गाछक झुलाक अर्थे कि रहत? तहीले ने बिआह-दुरागमनक बीच समय रहैत अछि। भलहिं नै बनैबला रहत तँ पान-साल, तीन साल नै मुदा सालो तँ टपबए पड़त। जँ से नै टपत तँ केना सासु-ससुर, सारि-सरहोजि, सार-बहिनोइ, सर-समाजक बीच संबंध बनत। परिवारक बीच कम्मो दिनमे संबंध स्थापित भऽ सकैए मुदा समाज तँ नमहरो आ गहींरगरो होइत अछि। कोनो धारक पानिक पैमाना तँ तखन ने नापल जाएत जखन भादोक बढ़ल आ जेठक सटकल पेटक पानि नापल जाए। तहिना ने समाजो छी। अपना गरजे लोक थोड़े जुरशीतल आ फगुआ आन

मासमे कऽ लेत। जँ से करत तँ चरि टंगा आ दू टंगामे कि अनतर भेलै? एतबे ने बिनु सिंग-नाङरिक रहत। मुदा मन ममोड़ि कऽ रहि गेला। अनेको कारण अनेको मनकेँ घेर लेलकनि। ज्योतिक भाए-भौजाइ अखन धरि धर्मसूत्र आ गृहसूत्र पढ़नहि नै तँए कोनो चिन्ता मनमे रहबे ने करनि। नोकरिया रहने होइत जे जते जल्दी काज फरिया जाएत ओते जान हल्लुक हएत। अनेरे सी.एल. दुइर हएत? मुदा से सारेक मनमे नै रहनि भोगेश्वरक मनमे सेहो रहनि। बैंकमे घंटाक कोन बात जे मिनटोक महत छैक। हरिदम पाइयेक बरखा। अनेरे पा-भरि खाइले दिन-राति सासुर ओगरब कोन कबिल्ती हएत। स्त्रिये लऽ कऽ ने सासुर, आ जे संगे रहत तँ सबदिना सासुर नै भेल? जरूर भेल। अपना परिवारकेँ जँ सासुर बना सौंसे गाम जे ओझे बनि जाएत तँ केकरा सोझा जाइक आँखि-मुँह रहत। मुदा तीनू भाँइ प्रेमकुमार चुप्पी लाधि लेलनि जे अखन घरक गारजन माए-बाबू छथि तखन किछु बाजब उचित नै। मुदा मनमे तीनू भाँइकेँ शंका जरूर होन्हि जे स्त्रीगणक सोभाब होइत अछि जे पुरुखक टीकपर चढ़ि कऽ मुरगीक बाँग देब। तइ संग समाजोक डर। समाज तँ ओहन शक्ति छी जे बिनु डोरी-पगहाक रहनौं चपरासीसँ लाट सहाएब धरि सजौने अछि। हाकिम-हुकुम आ रिनिया-महाजन रहै वा नै। भलहिं बिलाइ बाझकेँ खाए वा बिलाइकेँ बाझ।

जखनसँ जमाइबाबूक दुरागमनक प्रस्ताव परिवारमे आएल तखनसँ सभ सकदम! चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप। जइसँ धारक पानि जकाँ बहैत बोल ठमकि कऽ भौर दिअए लगल। ओना बन्न मुँह रहितो आँखिक नाच जोर पकड़नहि, मुदा सिर्फ मूक नाच। जेठुआ गरेक सूर-सार देखते जहिना सचेत लोक पहिने बाल-बच्चा आ माल-जालक उपाय सोचि आगू डेग उठबैत अछि तहिना रघुनन्दनकेँ अपन भार परिवारक बीच उठबैक विचार भेलनि। फुरलनि- 'संग मिल करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज।' जाधरि नीक-अधलाक बीचक सीमा-सरहद नै बूझल जाएत ताधरि हारि-जीतक चर्चे बचकानी। मुदा समाजो आ परिवारोक तँ चलैक रास्ता अछिये। मनमे खुशी उपकलनि। खुशी उपकिते मुँह कलशलनि। मुदा पत्नी सुलक्षणीक मन महुराएले! किअए ने महुराएल रहतनि? जेकरा मुँहमे ने थाल-कादो लागल अछि आ ने पसीनाक सुखाएल टगहार अछि ओ किअए ने रूमालेसँ काज-चला लेत। मुदा जेकरा मुँहमे थालो आ तह-दर-तह सुखल पसीनेक टगहार छै ओ केना बिनु पानिये धोनहुँ चिक्कन हएत। कि अपनो मन मानत?

सहमत भऽ परिवारक सभ सुलक्षणीकेँ बजैक भार देलकनि। सुलक्षणी बजलीह-

“ओना साल भरि नै तँ छह मास, जँ सेहो नै तँ तीनिओ मास, जँ सेहो नै तँ एको पनरहिया नै रूकताह तँ केना हेतनि। जँ से नै मानताह तँ हमहूँ नै मानबनि।”

सासुक निर्णए सुनि अपन शक्तिक प्रयोग करैत भोगेश्वर बजलाह-

“अपन अधिकार क्षेत्रसँ अनचिन्ह भऽ बाजि रहल छथि। तँए......?”

भोगेश्वरक बात सुनि ज्योतिक हृदैमे तरंग उठलनि। तरंगित होइत मुँह तोड़ि उत्तर दिअए चाहलनि। मुदा इन्टर-भ्यू मन पड़िते ठमकि गेली। मुँह तँ बन्न रहलनि मुदा मनमे तीन परिवारक टक्कर उठलनि। रूइ सदृश बादलक टक्करसँ ठनका बनि सकैए तँ तीन परिवारक तीन जिनगीक रग्गर कते शक्तिशाली भऽ सकैए! दिन-रातिक सीमा-सरहद तोड़ि ज्योति पतिकेँ कहलनि-

“अधिकार आ कर्तव्य हर मनुखक धरोहर सम्पत्ति छिऐ नै कि खास-व्यक्तिक खास....?”

ज्योतिक विचार सुनि भोगेश्वरक देह सिहरि गेलनि। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत बजलाह-

“साते दिनक छुट्टी अछि। एक तँ अहुना आन-आन विभागसँ कम छुट्टी बैंकमे होइ छै, तहूमे एते सुविधा भेटै छै जे काज केनिहार ओहो छुट्टी काजेमे लगबए चाहैए।”

तइ बीच ज्योतिक मोबाइलिक घंटी टुनटुनाएल। मोबाइलिक अनभुआर नम्बर देखि सावधानीसँ ज्योति रिसीभ करैत बजलीह-

“हेलो।”

“हेलो।”

“अपने कतएसँ बजै छी?”

“विज्ञान शोध संस्थानसँ। सात दिनक भीतर आबि ज्वाइन कऽ लिअ। ओना चिट्ठिओ पठा देने छी।”

ज्वाइनिंगक समाचार सुनि ज्योतिक मन ओहिना खिल उठलनि जहिना फूलक कली कोनो वस्तुसँ दबा तरेतर तँ खिलैत रहैत, जे समए पाबि फुड़फुड़ा कऽ फूलक रूपमे आबि जाइत। अखन धरिक विचार ज्योतिक तर पड़ि गेलनि आ नव दुनियाँक नव विचार ऊपर चढ़ि गेलनि। रघुनन्दनकेँ कहलनि-

“बाबूजी, अपन कर्तव्य जइ रूपे अपने निमाहलौं बहुत कम लोक निमाहि पबैए। आग्रह करब जे केकरो जिनगीक रास्ताक बाधक नै बनिऐ।”

ज्योतिक बात सुनि जिज्ञासा करैत जेठ भाय प्रेमकुमार प्रश्न उठौलनि-
''कि रास्ताक बाधा?''
ज्योति- ''भाय सहाएब, अखन जबाबक उचित समए नै अछि। अखन एतबे जे काल्हि चलि कऽ हमरा शोध संस्थान पहुँचा दिअ।''
ज्योतिक बात सुनि सुलक्षणी पुछलखिन-
''आइ तीन्हिये दिन बिआहक भेलह हेन, बहुत विध-बेवहार पछुआएल छह?''
''जे पछुआएल अछि ओ पाछू हएत। मुदा कोनो हालतमे काल्हि जेबे करब। चाहे......?''
ज्योतिक संकल्पित विचार सुनि भोगेश्वर बजलाह-
''भाय-सहाएब, काल्हिये हमहूँ चलि जाएब। सभ संगे चलब, हम हाबड़ामे उतरि जाएब आ ई सभ आगू बढ़ि जइहथि।''
सएह भेल। ज्योतिकेँ शोध संस्थान पहुँचा तीनू भाँइ प्रेमकुमार घुरि कऽ घर आबि गेलाह।

उर्वर भूमिक बनल परतीमे जहिना जोत-कोर, नमीक संग बीआ पड़िते, किछुए दिन पछाति हरिया उठैत तहिना ज्योतिक उर्वर शक्तिमे अनुसंधानक नव-नव अंकुर पानिक हिलकोर जकाँ उठए लगलनि। एक नै अनेक। जहिना पोखरिमे झिझरी जकाँ पानिक हिलकोर चलैत रहैत तहिना ज्योतिक मनमे सेहो चलए लगलनि। भूखल व्यक्तिकेँ अपन अन्नक भंडार भेने, वस्त्रहीनकेँ वस्त्र भेने, गृहविहीनकेँ गृह भेने जहिना विशाल जल-राशि पाबि नदी उफनि जाइत तहिना ज्योतिक मन उफनि गेलनि आइ धरिक दुनियाँ। नव दुनियाँ, नव-नव सुर्ज-चान, ग्रह-नक्षत्र, नव-नव वस्तुसँ सजल दुनियाँ। ओ दुनियाँ जइठाम पहुँचि मनुख सृजन शक्ति प्राप्त कऽ सृजक बनि सृजन करए लगैत। ज्योति-ज्योति नै सृजक बनि गेलीह।
नन्दन बनक माली जहिना अपन जिनगी ओइ वनकेँ उत्सर्ग कऽ नव-नव फूल-फलक गाछ आन-आन जगहसँ जोहि आनि फुलवारी सृजैत, जेकरा देखि माली पुत्र अपन भविष्य बूझि एक संग छिड़िआएल जामंतो जिनगी लोढ़ि, फुलडाली सजा, देवमंदिरक लेल रखए चाहैत तहिना ज्योतिकेँ, श्रृंगी ऋृषिक विशाल उपवन भेट गेलनि। जइसँ ओइ माली पुत्र जकाँ अपन भविष्य देखए लगली। दू धारक बीच महारपर ठाढ़ भऽ, एक दिस तड़ा-उपड़ी गिरल मनुख तँ दोसर दिस जिनगीक खेलौना हाथमे लेने समुद्र दिस पीह-पाह करैत धारमे उधिआएल जाइत। उगैत-डूमैत देखलनि जे कियो मात्र पति-पत्नीक जीवन लीलाकेँ जिनगी बूझि तँ कियो अमरलत्ती सदृश वंश-वृक्षपर लतड़ब केँ, कियो धार-समुद्रक बीच धरतीकेँ तँ कियो अकास-

पतालक बीचक विशाल वसुदेवकेँ। देखैत-देखैत ज्योतिक मन बेसम्हार भऽ गेलनि। अपन जुआनीक खिलैत कलीक संग चढ़ैत तन, ऊफनैत मनकेँ सम्हारि धारमे कुदए चाहली। मुदा मनमे नचलनि माए-बाप! धरतीक प्रथम गुरु! जहिना शिक्षक सिलेटपर खांत लिख शिष्यकेँ सिखबैत तहिना शिष्यो ने लिख शिक्षकसँ शुद्ध करबैत। शुद्ध होइते ओहो खांत ने खांत बनि जाइत। रील जकाँ माता-पिताक सटले पति देखलनि। मुदा किछुए क्षण धरि मनमे अंटकलनि। बिआहक विधो तँ पछुआएले अछि! लगले फेर माता-पिता आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलनि!

राति-दिन ज्योतिक मन साओनक मेघ जकाँ उमड़ए-घुमड़ए लगलनि। धारमे चलैत नाह जकाँ डोलि-पत्ता हुअए लगलनि। आँखि उठा तकलनि तँ देखलनि जे माता-पिता छोड़ि कहाँ कियो छथि। फेर लगले मन घुरलनि तँ सभ किछु देखलनि। कि नै अछि? मातृभूमिक संग पितृभूमि सेहो अछि। मनमे खुशी एलनि। होइत भोर कागज-कलम न्किालि पिताकेँ पत्र लिखए लगलीह-

> ‘‘माता-पिता, सहस्त्र कोटि प्रणाम।
>
> एक जिनगीक आखरी आ दोसरक पहिल पत्र लिखैत मन उमकि रहल अछि। तँए कतौ शुद्ध-अशुद्ध लिखा जाए, से माफ करब। सुधारि कऽ पढ़ि लेब। अपने लोकनिक सेवा, शिखर सदृश शिष्य जकाँ शिरोधार्य केने रहब। जहिना बादलक बुन्न धरतीपर अबिते धरिया धार होइत समुद्र दिस बढ़ैत तहिना अपने दुनू धरिया देलौं। कुल-कन्या वा कुल-कलंकनी बनब हमर कर्म छी। मुदा बेटी तँ अहींक छी। हमहूँ तँ एतै बसब। तँए ताधरिक छुट्टी असीरवादक संग दिअ जे वास बना बसए लगी।
>
> ज्योति’’

पत्र पहुँचते अह्लादसँ दुनू बेकती रघुनन्दन आ सुलक्षणी, बेटी ज्योतिक पत्र पढ़ैक सुर-सार केलनि। पत्रपर नजरि दौड़ैबते दुनू बेकती अलिसा गेलाह। आगूमे अन्हार पसरि गेलनि। मुदा मन लगले भक्क खोलि रघुनन्दन पत्नीकेँ कहलखिन-

‘‘पत्रक उत्तर देब जरूरी अछि मुदा कि लिखब से फुरबे ने करैए।’’

जेहने गर्म-ठंढ़क बीचक सीमा असथिर रहैत तेहने चित्ते सुलक्षणी पतिकेँ विचार देलखिन-

“कोन लपौरीमे पड़ल छी। माए-बाप केकरो जन्म दइ छै। जीबैले अपने ने रौद-वसात सहए पड़तै। आब अहीं कहू जे एहनो बात पत्रमे लिख बेचारीक पढ़ैक समए बड़देबै? रहल असीरवादक तँ एतैसँ दुनू प्राणी मिल दऽ दियौ।”

~

(ई कथा, युवा साहित्यकार- श्री आशीष अनचिनहार लेल)

मायराम

अमावास्याक राति, बारहसँ ऊपर भऽ गेल मुदा एक नै बाजल। डंडी-तराजू माथसँ निच्चाँ उतरि गेल। सन-सन करैत अन्हार। नओ बजेमे निन्न पड़ैवाली मायरामकेँ आँखिक नीन निपत्ता! कछमछ करैत ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत, अकछि केबार खोलि बाहर न्किललीह तँ काजर घोराएल रातिमे अपनो हाथ-पएर नै सुझन्हि। जहिना करिछौंह दुनियाँ आँखिसँ नै देखथि तहिना दसो दुआरि बन्न मन खलिआएल बूझि पड़लनि। पुन: घुरि कऽ ओछाइनपर आबि ओँघरा गेलीह! दिन-रातिक बोध-बिहिन मन तड़पि उठलनि-

“नैहर!”

पहिल सन्तान भेलोपरान्त सुदामा (मायराम) बाइसे बर्खमे विधवा भऽ गेलीह। गत्र-गत्रसँ जुआनी, फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ, छिटकैत! ओना सरकारी रजिष्टरमे जुआन भऽ गेल छलीह मुदा बत्तीसीक अंतिम दाना नै उगल रहनि। साँपक बीखसँ करिआएल देह देखि अपनो मरनासन भऽ गेलीह। पथराएल आँखि टक-टक टकैत मुदा अन्हारसँ अन्हराएल। बगलमे डेढ़ बर्खक बेटा उठैत-खसैत अंगना-घर घुमैत-फिड़ैत। तइ बीच हहाएल-फुहाएल शंकरदेव (भाय) आँखिमे यमुनाक धार नेने पहुँचलाह। बहिन-बहिनोइक रूप देखि अपन आँखिक नोर पोछि भागिनकेँ उठा छाती सटा, बहिन (सुदामा)केँ कहलखिन-

“बुच्ची होश करू। दुनियाँक यएह खेल छिऐ। अहीं जकाँ नानियोँकेँ भेल रहनि। मुदा आइ केहेन भरल-पूरल परिवार छन्हि। एक ने एक दिन, ओहिना अहूँक परिवार दुनियाँक फुलवाड़ीमे फुलाएल।”

शंकरदेवक बात सुनि सुदामाक आँखि खुजल मुदा बकार नै फुटलनि। मुदा नर-नारीक करेजो तँ दू धारक दू माइटिक सदृश होइत बहिनोइक जरबैक ओरियानमे आंगनसँ निकलि शंकर समाज दिस बढ़लाह।

पनरहम दिन बहिनकेँ संग नेने अपना गाम विदा भेलाह। गामक सीमानपर अबिते गाममे कन्नारोहट शुरू भेल। बच्चासँ बूढ़ धरि सुदामाकेँ छाती लगबए आगू बढ़ल। बेचारी निसहाय भेल पड़ल। जहिना चोंगरा परक घर खसैत, तहिना। मुदा ताधरि गामक धरोहिक अगिला अंक पहुँचि गेल। एक्के-दुइये ढेरो छाती सुदामाक छातीमे सटि, चारू दिससँ पकड़ि टोल दिस बढ़ल। सुदामाक मनमे उठलनि जँ अपने कानब तँ समाजक कानब केना सुनबै।

से नै तँ समाजेक कानब सुनि जे आगूक जिनगी केना जीब। बीच आंगनमे माय ओंघरनिया दैत आ दरबज्जापर पिता भुइयेँमे पेटकान देने! अपन-अपन अथाह समुद्रमे सभ डूमल। के केकर नोर पोछत! पएर भतीजी धोय गाराजोरी केने आंगन बढ़लि। दुरखापर पएर दैतै सुदामाक रूदनसँ निकलल- "हे मइया...।"

जहिना धड़सँ कटल अंग छटपटाइत तहिना कामिनीक (माए) मन छटपटाइत-छटपटाइत मनमे प्रश्नपर प्रश्न उठए लगलनि। मुदा कोनो प्रश्नक सोझ रास्ता नै देखि काँटक ओझरी जकाँ मन ओझराए लगलनि। एक ओझरी छोड़बथि बीचेमे दोसर लगि जाइन।

.....कि आगूक जिनगीक लेल बेटीकेँ दोसर बिआह कऽ देब। फेर उनटि, जिनगीक लेल सहचर तँ आवश्यक अछि?

.....कि सहचरक लेल पति आवश्यक अछि?

मुदा जते असानीसँ गुंथी खोलए चाहथि ओते असानीसँ खुजबे ने करनि। तइ बीच दोसर प्रश्न अकुँरि जाइन।

.....बेटीक संग नातियो अछि। जँ बेटी दोसर घरकेँ अपन घर बनाओत तँ नातिक.....?

पुत्र हत्याक पाप केकर कपार चढ़त? कि कुत्ता जकाँ पछिलग्गू एहेन सुकुमार फुलकेँ बना देब। अखन ओ दूधमुँह अछि, कि बूझत? अपन भूमि आ आनक भूमिक मरजादा एक्के रँग होइत। कि दोसरो घरमे ओहने ममता माइक भेटतै? मनुक्खेक क्रिया-कलाप ने कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैत अछि। घुरियाएल मनकेँ राह भेटलनि। सुफल नारी जिनगी तँ वएह ने छी जेकरा आँचरक लाल मातृत्व प्रदान करैत अछि। जइसँ वीणाक झंकृत मधुर स्वर हृदैकेँ कम्पित करैत अछि। से तँ भेटिये गेल छै। मुदा जहिना ठनकैत अकाससँ ठनका खसैत तहिना मनमे खसलनि-

"मुदा समाज?"

कि मनुख-पोनगैक स्थिति समाजमे जीवित अछि।

सुदामाक सम्पन्न पितृ परिवार। अदौसँ श्रम-संस्कृतिक बीच पुष्पित-पल्लवित परिवार। जइसँ रग-रगमे समाएल अपन संस्कृति। ओना सम्पन्नताक सीमा असीमित अछि मुदा अपन आँट-पेट देखि अपन (परिवार) जिनगीक स्तर बना चलब सम्पन्नताक अनेको कारणमे एक प्रमुख छी। तँए सम्पन्न परिवार। ओना आर्थिक दृष्टिये सुदामाक बिआह दब परिवारमे भेल छलनि मुदा बेवहारिक दृष्टिये बराबरीमे छलनि। कम रहितो गोरहा खेत छलनि

जइसँ खाइ-पीबैक कोताही नै। किछु आगूओ बढ़ि ससरैत। सालक तेरहम मासमे घरक कोठी-भरली झाड़ि इजोरिया दुतियासँ भागवत कथाक संग हरिवंश कथा सुनि, भोज-भनडारा कऽ सामा-चकेवा जकाँ आगू दिस बढ़ैत।

बेटाक पालन आ धरमक काज देखि अपनो गाम आ चौबगलियो गामक लोक सुदामक नाओं मायराम रखि देलकनि। बच्चासँ बूढ़ धरि माइयेराम कहए लगलनि।

सुदामाक पिता रविशंकर परिवारमे चूल्हि नै पजड़ल। जखन सुदामा आइलि तखन जे कन्नारोहट शुरू भेल, से भरि दिन होइते रहि गेल। कखनो बेसी तँ कखनो कम। चूल्हि नै पजड़ने टोल-पड़ोसक परिवारसँ थारी-थारी भात-दालि एते आएल जे राति धरि चलैत रहल।

सायंकाल रविशंकर, आंगन ओसरपर बैस, सुदामाक भावी जिनगीक लेल पत्नियो आ बेटो-पुतोहुकँ बैसाए विचार करए लगलाह। विचारोत्तर निर्णए भेल जे काल्हिये शंकरदेव ओइठाम-सुदामाक सासुर- जा खेती-गिरहस्ती ताधरि सम्हारथि जाधरि बच्चा-सुदामाक बेटा जुआन नै भऽ जाए। संग-इहो भेल जे छह मास सुदामा सासुर आ छह मास नैहरमे रहत।

अठारह बर्ख पुरिते राहुलक बिआह भऽ गेल। नव परिवार बनि ठाढ़ भेल। शंकरदेव अपना ऐठाम चलि एलाह।

तीन साल बाद पिता रविशंकर आ पाँच साल बाद माए शंकरदेवक मरि गेलनि। मुदा दुनूठामक परिवारमे कोनो कमी नै रहल। हवाइ-जहाज जकाँ तेज गतिये तँ नै मुदा असथिर सवारी-टायरगाड़ी जकाँ परिवार आगू मुँहे ससरए लगल।

मायरामक प्रति समाजक नजरिया सेहो बदलल। समाजक आन विधवा जकाँ नै, जे कियो अशुभ बूझि कनछी कटैत तँ कियो पशुवत बेवहार लेल मरड़ाइत।

तीर्थस्थान जकाँ मायरामक परिवार बनि गेलनि। साले-साल भागवत कथाक संग हरिवंश कथा आ भोज-भनडारा कऽ समाजकँ खुआ सालक विसर्जन

मायराम करए लगलीह।

पाँच बर्ख पछाति मायरामक भरल-पुरल नैहर-शंकरदेवक परिवार- कोशीक कटनियासँ धार बनि गेल। गामक बीचो-बीच सनमुख धार बहए लगल। घटनो अजीब घटल। चारि बजे करीब बाढ़िक हल्ला गाममे भेल। किरिण डुबैत-डुबैत धारक कटनिया शुरू भेल। गामक सभ बाध नदिया गेल। उत्तरसँ दछिन मुँहे बहए लगल। बाढ़िक बिकराल रूप देखि गामक लोक माल-जाल, बक्सा-पेटीक संग ऊँचगर-ऊँचगर जमीनपर पहुँचल। नट-बक्खो जकाँ नव बास बनि गेल।

लोकसभ बाढ़िक गूंगूआहट सुनि-सुनि सभ किछु बिसरि परान बचबैक बात सोचए लगल। चारू कात बाढ़ि पसरल। जइसँ इहो डर होइत जे जँ कहीं अहूपर पानि चढ़त तखन कि हएत? अन्हरिया राति, हाथ-हाथ नै सुझैत। जीवन-मरनक मचकीपर सभ झुलए लगल। भूख-पियास मेटा गेल। जहिना दुखित नव बिआएल गाए-महीस व्यथित आँखिये बच्चाकेँ देखैत रहैत अछि तहिना सभ माए-बापक आँखि बाल-बच्चापर। मुदा मनुख तँ मनुख छी नहि कि जानवर। जेना जानवर हरिअर घास देखि बच्चो आगूक लुझि कऽ खा लैत अछि तेना मनुक्खो करत? बाल-बच्चाक लेल तँ मनुक्ख अपन खूनकेँ पानि बनबैत, अपन सुआदकेँ छोलनी धिपा दगैत, अपन मनोरथ बच्चामे देखैत अछि। अपन जिनगीकेँ बलिवेदीमे आहूत दैत अछि।

भोरहरबामे हल्ला भेल जे बीस नमरी पुल कटि कऽ दहा गेल। पुलक समाचार सुनि सबहक छाती डोलए लगल। पूव दिसक रास्ता बन्न भऽ गेल। किछुए काल पछाति पुन: हल्ला भेल जे बेटा संग रोगही पानिमे डुमि गेल। किछु काल धरि तँ हल्लामे बाते नै फुटैत मुदा तोड़मारि हल्लामे विहिआित-विहिआति समाचार विहिआ गेल। भासि कऽ कते दूर गेल हएत तेकर ठेकान नै तँए कियो आगू बढ़ैक हूबे ने केलक। जहिना एक टाँग टुटने गन्गुआरि नै नेङराइत तहिना एक गोटे मुइने समाज थोड़े नेङराएत। सभ दिन होइत एलै आ होइत रहतै।
हल्ला शान्त होइते शंकरदेव पत्नीकेँ कहलखिन-
"आब जान नै बँचत।"
पत्नी- "एते अन्हारमे कतए जाएब। भने ऐठाम छी।"
पति- "जँ अहूपर बाढ़ि चढ़ि जाएत?"

“सभ तूर संगे कोसीमे डुमि जाएब। कियो बँचब तखन ने दुख हएत। जँ दुख केनिहारे नै रहब तँ दुख केकरा हएत।”

पौरकी घुटकल। आन-आन चिड़ै सुतले रहए। पौरूकी आवाज सुनि शंकरदेवक, दुभीक नव मुड़ी जकाँ, मनमे नव चेतना जगलनि। बजलाह-
“भिनसर होइमे देरी नै अछि। जँए एते काल तँए कनी काल आरो। दिन-देखार तँ असगरो लोक अमेरिका चलि जाइए। अपना सभ तँ बाधक थोड़े रास्ता काटब।”

किरिण उगैसँ पहिनहि ऊँचकापर पानि चढ़ए लगल। चढ़ैत पानि देखि हरविर्ड़ो भेल। गाए-महीस, बक्सा-पेटी छोड़ि सभ अपन जान बँचबए विदा भेल। जहिना वैरागी दुनियाँकेँ मायाजाल मानि, छोड़ि, आत्मचिन्तनमे लगि जाइत तहिना माल-असबाव छोड़ि सभ विदा भेल। तही बीच बाँसक झोंझमे मैनाक झौहरि भेल। जेना केकरो वोनबिलाड़ि पकड़ि नेने होउ, तहिना।

पूब दिस फीक्का गुलावी जकाँ अकासमे पसरए लगल। मुदा बिलटैत जिनगी आ डुबैत सम्पत्तिक सोग अन्हारकेँ आरो बढ़बैत। सुखल जमीनपर पहुँचते छोट-छीन आशा शंकरदेवक मनमे जगलनि। मुदा चारू बच्चो आ पत्नियोक मनमे दुधाएल चाटल दानाक खखरी जकाँ। बेर-बेर शंका खेहारैत जे हो-न-हो फेर ने आगूएसँ बाढ़ि चलि आबए। मिरमिरा कऽ पत्नी शंकरदेवकेँ कहलनि-
“एते लोकक गाममे एक्कोटा संगी नै देखि रहल छी।”
“सभ अपने जान बँचबै पाछू अछि तखन के केकरा देखत।”
“जाबे लोक, भरल-पूरल रहैए ताबे दुनियाँ हरिअर बूझि पड़ै छै। मुदा......।”
“हँ, से तँ होइते छै। मुदा......।”
“हँ इहो होइ छै। अखन माए जीबैए, कतए बौआएब। बच्चो सबहक मात्रिके भेल, अपनो नैहरे भेल आ अहूँक सासुरे।”
पत्नीक बात सुनि शंकरदेव गुम भऽ गेलाह। मनमे चूल्हिपर खौलैत पानि जकाँ विचार तर-ऊपर हुअ लगलनि। बजलाह-
“कहलौं तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सासुरसँ नीक बहिन ऐठाम हएत।”
“केना?”

“जइ दिन वेचारिक ऊपर विपत्ति आएल छलै तइ दिन यएह देह अपन घर-परिवार छोड़ि ठाढ़ भेल छलै। आइ कि हमरे गाम-घर मेटा रहल अछि आकि ओकरो नैहर।”
“अहाँकेँ जे विचार हुअए।”
“विचारे नै, विपत्तिमे लोकक बुइध हरा जाइ छै। जइसँ नीक-अधलाक विचार नै कऽ पबैत अछि। मुदा अहीं कहूँ जे सासुरमे कान्हपर कोदारि लऽ कऽ खेत-पथार जाएब से केहेन हएत। अपन जे दुरगति हएत से तँ हेबे करत मुदा दुनू परिवारक-सासुर-नैहर- की गति हएत।”

बाढ़िक समाचार इलाकामे पसरि गेल। मायरामक कानमे सेहो पड़लनि। भाय-भौजाइक आशा-बाट तकैत मायराम बेटा राहुलकेँ संग केने आगू बढ़लीह। मुदा किछु दूर बढ़लापर सोगसँ पथराएल पएर उठबे ने करनि। बाटक बगलक गाछक निच्चाँ बैस बेटाकेँ कहलखिन-
“बौआ, पएर तँ उठबे ने करैए। केना आगू जाएब? ता तूँ आगू बढ़ि कऽ देखहक।”

छबो तूर शंकरदेव ऐ आशासँ झटकल अबैत जे जते जल्दी पहुँचब ओते जल्दी बच्चा सभकेँ अन्न-पानिसँ भेँट हेतै। रतुको सभ भुखले अछि। तइ बीच राहुलक नजरि मामपर आ मामक नजरि भागिनपर पड़ल। नजरि पड़िते राहुल दौग कऽ ठाढ़े मामाकेँ गोड़ लागि मामीक कोराक बच्चाकेँ लऽ बाजल-
“माइयो अबैए मुदा डेगे ने उठै छलै। आगूमे बैसल अछि।”
राहुलक बात सुनि मामी बच्चा सभकेँ कहलखिन-
“भैयाकेँ गोड़ लगहुन।”
बच्चाकेँ कोरामे नेने आगू-आगू आ पाछू-पाछू सभ कियो विदा भेला। सभसँ पाछू शंकरदेव अपने। मन पड़लनि रतुका दृश्य। केना छनमे छनाक भऽ गेल! जिनगी भरिक जोड़िआएल घरक वस्तु-जात आगि लगने आकि बाढ़ि एने केना लगले नास भऽ जाइ छै। मान-प्रतिष्ठा, गुण-अवगुण, केना छनेमे कतएसँ कतए चलि जाइ छै। ठीके लोक बजैए जे दिन धराबे तीन नाम। अपने छी जे एक दिन बहिनक रक्षक बनि ऐ गाममे छलौं आ आइ......। एक दिन गाड़ीपर नाह आ एक दिन नाहपर गाड़ी। माटि-पानिक खेल छी। गंगा-यमुनाक बीच कतौ माटिओ छै आकि पानिये-पानि छै!

किछु फरिक्केसँ भाय-भौजाइकेँ अबैत देखि मायरामक मन ओइ धरतीपर पहुँचि गेलनि जे सात समुद्रक बीच अछि। एक ओद्रक रहितो एक भिखारी दोसर राजा! परोपट्टाक लोक सिनेहसँ मायराम कहै छथि मुदा भैयाकेँ कि कहतनि? कि भैयाक कर्म विगड़ल छन्हि? एक परिवारक बचौल कर्म छन्हि। चान, सुरूज, धरती, ग्रह-नक्षत्र इत्यादि तँ अपना गतिये करोड़ो बर्खसँ नियमित चलि रहल अछि आ चलैत रहत, कि मनुक्खोक गति ओहन भऽ सकैए? आकि चाने-सुरूज जकाँ मनुक्खोक चलैक एकबटिये अछि? ब्रह्मक अंश जीव रहितो कि फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ नै अछि? जतए जेहेन जलवायु ततए तेहेन उपजा-बाड़ी! जँ कतौ वायु प्राणक रूपमे घट-घटकेँ आगू बढ़ैक प्रेरणा दैत तँ वएह विषाक्त बनि प्राण नै लैत?

गोलाक चोटसँ जहिना पोखरिक पानिमे हिलकोर उठैत आ आस्ते-आस्ते असथिर होइत चिक्कन आंगन जकाँ सहीट बनि जाइत तहिना मायरामक मन सहीट भऽ गेलनि। मुदा लगले नजरि उड़ि भतीजीपर गेलनि। भतीजीपर पहुँचते मन तड़पए लगलनि। बाप रे बाप, एहेन दुरकालमे भैया केना इज्जत बचौता। अपनो लग जमा किछु तँ नहिये अछि साले-साल हिसाव फरिया लइ छी। हे भगवान जँ केकरो दुखे दइ छिऐ आकि सुखे दइ छिऐ तँ तुलसी पात आकि दुबिक मुड़ी जकाँ खोंटि-खोंटि किअए ने दइ छिऐ जे गुलाब-गेन्दा तोड़िये कऽ दऽ दइ छिऐ? लगले नजरि मायराम छिपा जकाँ छिहलि अपन मातृत्वपर पहुँचि गेलनि। केना बेटाकेँ पोसि-पालि ठाढ़ केलौं आ ई सभ.........। लुधकी लागल एकटा गाछ फड़बे करत तइसँ गामक सबहक मुँहमे थोड़े जाएत। जते मनुख अछि ओकरा तँ धरतीसँ अकास धरि चाहिये। तखन ने जीबैक आजादी भेटतै। मुदा लगले जहिना पानि ठंढ़ेने बरफक रूप लिअए लगैत तहिना दूधसँ उपजैत दही जकाँ मायरामक मन सकताए लगलनि। साँस सुषुमा गेलनि। मनमे खौललनि- नैहर मेटा गेल तँए कि सासुरो मेटा गेल। जहिना भैया नैहरमे भैया छलाह तहिना अहूठाम भैया रहताह। भगवान अपन कोखि अगते लऽ लेलनि तँए कि ओकरा-भतीजी- अपन कोखिक नै बुझबै। ऐठाम जे अछि ओ कि भैयाक नै छियनि? खेत-पथार, घर-दुआरि चलि गेलनि आकि हाथो-पएर चलि गेलनि?

गुमे-गुम, जहिना मृत्युक अवसरपर गुम भऽ स्मरण कऽ निराकरणक बाट जोहल जाइत, तहिना सभ घरपर पहुँचलाह। ताधरि पुतोहु-रोहितक पत्नी- हाँइ-हाँइ कऽ खिचैड़ आ अल्लूक सन्ना बना, बाट तकैत रहथि। सबहक आँखि सभ दिस हुलैक-हुलैक बौआइत। तइ बीच राहुलक कोरक छोटका बच्चा, घर देखिते, बाजल-

“दीदी, बड़ भूख लागल अछि?”
बच्चाक बात सुनि मायरामक भक्क टुटलनि। अनायास मन पड़लनि बटोहीकेँ जहिना इनारपर ठाढ़े-ठाढ़ पानि पिऔल जाइत तहिना ने अखन इहो सभ छथि। नहाय-धोयमे अनेरे देरी किअए लगाएब। बजलीह-
“कनियाँ, भरि रातिक थाकल-ठेहियाएल सभ छथि तँए पहिने किछु खुआ कऽ आराम करए दिअनु। गप-सप्प पछाइतो हेतै। भोजन बादेक आराम तँ सोग कम करैक उपाए छी।”

~

गोहिक शिकार

बच्चासँ सियान धरि, जाधरि तीनू धाम-सिंहहेश्वर, कुशेश्वर आ जनकपुर नै देखने छलौं ताधरि अपनो बाबा आ समाजियोक काका, बाबासँ सुनैत रहलौं जे तीनू धाम एक्के रंगक दूरीपर अपना सभकेँ अछि। ई भिन्न बात जे जइठाम पृथ्वीपुत्री सीता छथि तइठाम सिंह सदृश सिंहेश्वरबाबा छथि। मुदा आब जखन तीनू धाम देखलौं तखन जँ विचारै छी तँ स्पष्ट दूरी बूझि पड़ैए।

बान्ह-सड़कक अभावमे गामसँ गाड़ी-सवारी नै तँए नाहसँ कुशेश्वर आ सिंहेश्वर, जनकपुर पएरे गेलौं। भलहिं अकास मार्गसँ एक रँगाह होइ मुदा जमीनी रास्तामे अंतर अछि। कहैले तँ कोशियो धार तँ टपै पड़ैत अछि मुदा सप्तकोशियोसँ बिकट रास्ता। ओना जखन जाए लगलौं तखन सात दिनक बटखरचाक संग धानक जुट्टी-चढ़बैले- लऽ नेने रही तँए चिन्ता नहिये जकाँ रहए। मुदा कोशीक लहरि देखि मन डराएल जरूर। जनकपुरक ठेही बाट तँए कच्चियो रहने पएरे चलैमे सुगम अछि। जहिना छोट-छीन शब्द संगीक संग-संयुक्ताक्षर-नमहर बनि ओझरी लगबैत जाइत तहिना कुशेश्वरक रास्ताक धार सभ केने अछि। कोन धार कतए मिल अपनो बदलि गेल आ दोसरोकेँ बदलि गंगो-ब्रह्मपुत्रसँ विकराल रूप बना नेने अछि। जइसँ टपब समुद्र जकाँ भऽ गेल अछि। मुदा बिना टपने कुशेश्वर पहुँचब केना?

संयोग नीक जे धार सबहक बीच मातृक अछि। कातिक बीतैत मम्यिौत भाय नाह बनबए पहुँचलाह। जे नाह चलनि ओ अहीबेर भसिआएल अबैत एकटा ढेंगमे लगि फुटि गेलनि। हुनका सबहक ने गाछी-बिरछी बाढ़िक पानि एने सूखि गेलनि मुदा अपना सबहक तँ बचल अछि। अपने जामुन गाछ देखा देलियनि। सुरेब गाछ देखि मन मुस्किया गेलनि। हलसि कऽ कहलनि-

"बौआ, नाहो भऽ जाएत तँ हरिसो, पालो, चौकी भऽ जेतह आ साल भरिक जरनो भऽ जेतह।"

जरना नाओं सुनि कहलियनि-

"भैया, माले-जाल तते अछि जे ने जरनाक दुख होइए आ ने खेत सभमे बजरूआ खादक।"

जलखै करैकाल कहलनि-

"जखन लकड़ीक गर लगिये गेल तखन चलह बनौनिहारोकेँ कहि हाथ लगाइये देब।"

कहलियनि-

“हँ तँ बेजाइये कोन।”
पान-सुपारी मुँहमे दैते डेग बढ़ौलनि। पाछू-पाछू विदा भेलौं। बढ़ीक घर लगे तँए जाइमे देरी नहिये लागल। पहुँचते राजिन्दर पूछि देलक-
“पाहुन कहाँ रहै छथि” कहि हाथेसँ चौकीपर ओछाएल ओछान्किँ हाथेसँ झाड़ए लगल। दुनू भाँइ बैसलौं। बैसते भाय पुछलखिन-
“मिस्त्री एकटा नाह बनाएब।” भैयाक मुँह दिस राजिन्दर ठकुआएल बकर-बकर देखए लगल। किछु फुड़बे ने करै जे बाजल। ठेही परक बरही हर, पालोक संग हँसुए-खुरपी बनौनाइ आ फाड़े पिटनाइ खाली बुझैत। राजिन्दरकेँ ठकुआएल देखि राजिन्दरक पीसा जे दू दिन पहिने आएल छलाह, बजलाह-
“कतेटा नाह बनाएब?”
“तेरह हाथक।”
“घरैड़ा आकि घटवारिबला?”
“घरैये।”
मन-मन नाहक पेटक हिसाब जोड़ि बजलाह-
“पनरहिया लगि जाएत। दू दिन एनो भऽ गेल।”

पीसाक बात सुनि राजिन्दक मन हलसि गेल। जहिना हँसैत फूल सुगंध बना भाय वायुक संग वायुमंडलमे विचरण करैत तहिना हलसल मन राजिन्दरक बाजि उठल-
“पीसा, एक पंथ दू काज। अहाँक पहुनाइयो सुतरि जाएत आ हमरो एकटा लूरि बढ़ि जाएत। उपकार तँ नफ्फामे हएत।”
ओकर बात सुनि अपनो मन कलसि गेल जे भरि आँखि बनैबतो देखब आ जाबे नाह रहत ताबे भैयौ गुन गबैत रहताह। तँए स्टेशनक कुल्ली जकाँ, जे हैयौ, हैयौ कऽ सिमटीक बनल पुलक पायाकेँ ठेलैत तहिना ठेलैत बजलौं-
“भैया, अखन ठरपर छी ऐठीन जे काज हएत से नीक हएत। अनभुआर जगहमे पच्चीसटा बिहंगरा होइ छै?”
सह पाबि राजिन्द फुदकि उठल-
“पीसा, कमाइ अपन अपने राखब। खेनाइक चिन्ता नै करू।”
कमाइ देखि पीसा कहलखिन-
“भाय, जहिना अहाँ धारऽ कातक छी तहिना हमहूँ छी। पूवारि पार रहै छी।”

बनाइक गप-सप्प भेल। मुदा खेनाइक गप-सप्प भेबे ने कएल। किअए तँ हुनका दुनू गोटेकेँ बूझल। दोसर दिन जखन काज शुरू भेल तखन बुझलौं।

दोसर दिन जामुनक गाछ खसा, पाँङि-पुँङ, तेसर दिन चिराइमे हाथ लगि गेल। भरि दिन भैया गमछाक अराम कुरसी बना मिस्त्रीये लग बैस अपन देश-कोसक महाभारत सुनबए लगलाह। खन अंगना खन खेत खन भैयालग आबि-आबि हाजिरी पुरबए लगलौं।

बारहम दिन नाहक सकल ठाढ़ होइते भैयाक मन जेठुआ बाढ़ि जकाँ फुलाए लगलनि। जहिना धार फुलेने चरो-चाँचरमे फुल पकड़ि लइ छै तहिना अपनो मन फुला गेल। पथिया नेने माए तख्ताक छिलनि ले पहुँचले छलीह आकि पछबारि बाधसँ घुमि पहुँचलौं। मुस्की दैत भैया बजलाह-
“बौआ, कुशेसर चलह।”
भैयाक बात सुनि माए बजलीह-
“बहु दिन गेना भऽ गेल।”

भैयाक मनमे कि रहनि से तँ नीक नहाँत नै बुझलौं। मुदा अपना भेल जे भरिसक रास्तामे छीना-छीनी दुआरे बजलाह। संगीक जरूरति छन्हि। जहिना नाहक सभ काज भेलनि तहिना सुहरदेसँ गामो पहुँचाएब जरूरी अछि। के कहलक रास्ता पेरामे नाहक संग जानो जानि। कहलियनि-
“कअए गोटेकेँ लऽ जेबनि?”
“सभ तूर तचल।”
सभ तूरक नाओं सुनि माए बजलीह-
“बौआ, सभ तूर जे जाएब से बनत। कोनो कि नोकरिया-चकरियाक घर छिऐ जे ताला लगा दियौ आ विदा भऽ जाउ। चारिटा माल अछि। धानक लड़ती-चड़ती अछि, तखन?”
भैया- “एको गारे जँ पीठपोहू रहत तैयौ चलि जाएब।”
कुसेसरेक रास्तामे मातृक। मामा गामसँ चारिये कोस आगू-दछिन- कुसेसर। कहलियनि-
“भने कुसेसरो बाबाक दर्शन भऽ जाएत आ दू दिन मात्रिकोमे रहि जाएब।”

नाह बनि गेल। जते छाँट-छुट, तख्ता उगड़ल सभ सरिया कऽ रखि लेलौं। काल्हि भोरमे जाएब। पुछलियनि-

“भैया, रस्ता भँजिआएल अछि किने?”
हँसैत बजलाह-
“तूँ सभ ठेही परक छह तँ रस्ता तकै छहक। हमरा सभ लिए जेहने धार तेहने डूमल खेत। सुपेन (सुपर्णा) मे होइत गहुमा पहुँचब। गहुमासँ भुतही कमलामे चलि जाएब। जखने कमला पहुँचलौं तखने बुझह जे धाम पहुँचि गेलौं। घुमती काल सिरा रहत तँए एक गोरे गुन खिंचब दोसर गोरे नाहपर रहब।”
माएकँ कहलिऐ-
“खेबा-खरचा-बटखरचा- ओरिया मोटरी बान्हि दिहनि।” जाइ बेरक आशा नै रखिहेँ। हड़बड़मे कोनो चीज छूटि जाए।”
माए- “तीन सालसँ घीओ राखल अछि उहो नेने जइहह।”
“बड़बढ़ियाँ। मोटरियेमे बान्हि दिहनि।”
“हरा-तरा जेतह।”
“से कि अखन गरमी मास छी। ओ तँ अपने तेहेन जनमल हएत जे बिना मुन्नोक काज चलि जाएत।”
“मकैक नेरहाबला मुन्ना अछि। ओ छिलछलाह होइए। कहीं नाहक झमारमे छिछलि कऽ खुजि जेतह तखन तँ हेराइये जेतह।”
“दोसरे मुन्ना लगा दिहनि?”
“बड़बढ़ियाँ। नेरहाबला बदलि कटकटा कऽ कोइढ़ा लगा देब। ओ थोड़े छिछलाह होइए।”

जाड़क मास रहने भदबारि जकाँ ने धारे नचैत आ ने चरे-चाँचरक ओ रूतबा। भट्ठा दिस जाएब छल तँए मिसियो भरि भैयाकँ थकान नै बूझि पड़नि। जहिना ढलानपर गाड़ी तहिना सिरासँ भट्ठाक नाह। माथपर गोसाँइ देखि कहलियनि-
“भैया, पानि तँ अछिये कतौ खा लिअ।”
कहलनि- “गर लगा कऽ ने नाह लगाएब।”
किछु दूर आगू बढ़लापर धारेकातमे एकटा पीपरक गाछ। खूब झमटगर। एक भागक (धार दिसक) आधासँ बेसी सिर अलैग गेल। नाह बन्हैक सुविधा आ छाहरियो तहिना। धारक पेटेमे चहटी जकाँ। जइपर घास जनमि गेल। पवित्र जगह देखि भैया चपचपा गेलाह। बजलाह-
“बौआ, नीक जगह अछि। कनीखान अरामो कऽ लेब।”
कनी पाछुए रही कि भैया कहलनि-
“बौआ, तूँ नाहेपर रहह, हम बन्है छी।”

कहि धाँय दऽ मांगिसँ कूदि रस्सी पकड़ने हाँइ-हाँइ कऽ सिरमे लपटए लगलाह। नाह ठाढ़ भेल। उतरलौं। ओइठाम धार भकमोड़ नेने। एतेकाल दछिन मुँहेँ आब पछिम मुँहेँ भऽ गेल। उतरि कऽ आगू तकलौं तँ बूझि पड़ल जे मरकाठीक डेंगरी सभ छिड़ियाएल अछि। रहि-रहि कऽ गंध सेहो अबै। कहलियनि-

"भैया, ई तँ मुर्दघट्टीमे चलि एलौं। ऐठाम कन्ना रहब आ खाएब?"

मुस्कुराइत भैया कहलनि-

"ई सभ अधजरू डेंगरी नै गोहि सभ छी। रौद तापैले ऊपर आएल अछि।"

भैयाक बात सुनि डरे मन डोलि गेल। आँखि उठा-उठा निङहारि-निङहारि देखए लगलौं। मन पड़ल कलकत्ताक चिड़िया खानाक गोहि। बाप रे! ई तँ जीविते लोककेँ गीर जाइए। माघक जड़ाएल बच्चा जकाँ देह डोलए लगल। मुदा हुनकाले धैन-सन।

ओइ भकमोड़पर खूब नमहर मोइन। जेहने नमहर तेहने गहींर। जेठोमे अगम पानि रहैत। तइ बीच भुक दऽ पाड़ा जकाँ सोँस भुक दऽ उगल आ डूइम गेल। आरो डर बढ़ि गेल। कहलियनि-

"भैया, नाह पार केना करब। ई तँ तेहेन-तेहेन पानियाँ जानवर सभकेँ देखै छी जे एक्के हुड़कान मारत तँ नउए उनटा देत।"

मुदा ओ मुस्कुरा कऽ रहि गेलाह। जेना-जेना डर बढ़ैत जाए तेना-तेना आँखि निड़ारि-निड़ारि देखए लगलौं। कट्टा पनरहेक मोइन। धारक पानि चकभौर लिअए! कखनो-कखनो बुल-बुला सेहो निकलै। पछिया हवाक संग दुगंध पसरि गेल। कहलियनि-

"भैया, कोनो सड़ैत मुरदाक गंध छी।"

भैया कहलनि-

"ऊँहू भरिसक मलेछ छी।"

अपन विचारकेँ मजगुत करैत कहलियनि-

"जँ मरचर नै छी तँ मलेछ कतएसँ आएल?"

आब मुदा हुनको मनमे डर पैसलनि। बजलाह-

"एकबेर सुहतरिया घाटमे पलेछ नाहे उनटा देलकै।"

बजैकाल तँ बाजि गेलाह मुदा लगले बात बदलि बजलाह-

“बौआ, कोशिकन्हा मलेछ कि लोककेँ किछु कहै छै। देखबहक जे अपियारी सभमे एक दिस ओ माछ बिछैत रहतह आ दोसर दिस मलेछ सभ। तोरा इलाकामे परसौती स्त्रीगणकेँ मलेछ बेसी हरान करैए।”

अपनो मन मानि गेल। किअए तँ एक खूँटापर गाए-बड़द पटका-पटकी करैए, मुदा दोसर खूँटापर संगी पशु बनि दूधक धार बहबैए।
तइबीच लोकक सुन-गुन पाबि गोहि सभ धाँय-धाँय पानिमे कूदल। मोइनसँ कनिये हटि एकटा पीरारक गाछ भीतापर। गाछ तँ बड़ नमहर नै मुदा साहोरे जकाँ पकठाएल। गाछक निच्चाँमे एक गोटे ठाढ़। भैया कहलनि-
“हे वएह मलेछ छी। ओकरे महक अबैए! अखने पीरारक गाछपर सँ उतरल।”
डरो हुअए मुदा देखैओक मन हुअए। लोके एतेटा। कहाँ दन लंकाक राछस जकाँ मलेछ बड़ी-बड़ी होइए। से कहाँ छै। ओना भूत-प्रेतकेँ नै मानै छी। किएक तँ मनुखक आत्मा पंच तत्वमे विलीन भऽ जाइ छै आ शरीरकेँ या तँ जरा देल जाइ छै वा माटिक भीतर आकि बाहर कीड़ी-मकौड़ी, चिड़ै-चुनमुनी खा लैत अछि। तखन भूत जनमत कथीक।
दुनू भाँइ हिआसि-हिआसि ओकरा देखए लगलौं। लोक रहैत तँ दोसरो संगी रहितै। से कहाँ छै। भूत-परेत तँ असकरो रहैए। ओकरा कि कोनो चीजक डर होइ छै। मुदा ओ मोइन दिस बगुला जकाँ धियान लगौने। सहसा ओ मोइनकेँ गोड़ लागि पानिमे पैस गेल। रस्सीक एकटा भीड़ी डाँड़मे बन्हने आ हाथमे मोटका तारक काँकोड़। रस्सीक एक ओर गाछमे बान्हल। मोइनमे डूमल। अनायास मनमे उठल जे भरिसक एहिना लंकाक मोती बाहर करैबला पनिडुब्बा, उत्तर सागरक सील ह्वेल आ बालरसक शिकारी जकाँ इहो पानिक शिकारी छी।

किछु क्षणमे उक्-उक्क अबाज उठलै उठलै आ ओ लपकि कऽ डारि पकड़ि ऊपर आबि गेल। ऊपर आबि दोहरा कऽ गोड़ लगलक। तावे बिसवास भऽ गेल जे ओ आदमिये छी मलेछ नै। मुदा मलेछे जकाँ गंध! पातर साँस बना लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे ओ आदमी दुनू बाँहिमे गोहिएक खलड़ीक खोल बना पहिने अछि। जाड़े थरथराइत! बेर-बेर हाँफी होइ। जेना थाकल हुअए।
“ओइ ओ! ओइ ओ”क अबाज तीन-चारि बेर लगौलक। अबाज सुनि लगले बीस-पच्चीस गोटे जमा भऽ गेल। जेना लगेक बोन-झाड़मे नुकाएल रहल हुअए। जमा होइते सभ रस्सा पकड़ि खिंचए लगल। आ बजए लगल-

“ले जवान!”

“हैसा।”

“आगू बढ़ैत!”

“हैसा।”

रस्सा-कस्सी शुरू भेल। मोइनमे जेना बिहाड़ि आबि गेल! महजाल लगौलाक बाद जेना माछ सभ तड़पैत, तहिना।

करीब डेढ़-दू घंटा रस्सा कस्सी चलल। कखनो ऊपर दिस खिंचै तँ कखनो मोइन दिस। मोइन दिस खिंचते भरभरा कऽ सभ खसि पड़ै।

करीब दस-एगारह हाथक गोहि ऊपर भेल। ऊपर होइत तीन-चारिठाम बाँसक टोन दऽ चरि-चरि, पँच-पँच आदमी बैस गेल। गोहिक ठेठमे रस्सा कसाएल! तरूआरि जकाँ एकटा तेजगर अस्त्रसँ एक गोटे हाँइ-हाँइ चीर देलक। मुदा एखनो धरि सभ दबनहि रहल। किछु काल बाद प्राण छूटि गेलै। प्राण छुटिते बाँसक टोन हटा काटए लगल। काज अगुआएल देखि लग जा पुछलिऐ-

“केना-केना गोहि पकड़ै छहक?”

अनभुआर बूझि ओ अदमी हाथक इशारासँ गाछक छाहरिमे चलैक इशारा केलक।

गाछक छाहरिमे बैसते हमर नाओं पुछलक कहलिऐ, हमहूँ पुछलिऐ तँ बाजल-

“भोला तीयर।” कहि गोहि केना पकड़ै छै से कहए लागल-

“पानिमे पैस गाहि लग जाइ छिऐ। नमहर अन्दाजि कऽ ओकर नाङरिसँ बचैत अपन केहुनी आगू केने रहलौं। आँखि ने तँ मुँह बौने रहल। जँ मुँह बौने रहल तँ हाँइ-हाँइ कऽ काँकोर मुँहमे दऽ दइ छिऐ। लोहाक काँकोर। लोकक देहक गंध गोहिकेँ मतिसून बना दइ छै। खाली नाङरिसँ अपन बचाओ केने रहै छी। ओना सभ कमला माइक परतापसँ होइए। ने तँ लोकक बुत्ते हएत!”

हम पुछलिऐ-

“एकरा की करबै?”

भोला तीयर बाजल-

“मासु खेबै आ खलड़ी बेचबै।”

सुनि गुम्म भऽ गेलौं। देशक दृश्य आँखिपर लटकि गेल। जइ देशमे कियो भरि दिन भोग करै पाछू बेहाल रहैए तँ कियो जानक कीमतपर दुगंध मासुक पाछू बेहाल अछि। हाय रे हाय!

हमरा गुम्म देखि ओ बाजल-

“कोन गाँ रहै छी?”

कहलिऐ- “बेला रहै छी।”

कनी मन पाड़ि पुन: बाजल-

“रौदी तीयरकेँ चिन्है छिऐ?”

कहलिऐ- “ममिऔत भाइक गामक लोककेँ किअए ने चिन्हबै। गाम की कोनो शहर-बजार छी जे अपनो समांग देखि कऽ मुँह घुमा लेत।”

“ओ साढ़ू छिआह।”

“भैयारिये जकाँ अछि।”

भैयारी नाओं सुनि बाजल-

“तब केना जाए देब। गरीब छी तँए इज्जत नै अछि। एहेन शिकार केलौं आ अहाँ चलि जाएब। साढ़ू कि कहताह। हुनका पता लगतनि तँ नै कहता जे खाइ डरे समाजसँ मुँह चोरबै छी। एकर मासु बड़ सुअदगर जहिना अंडाएल रोहू, तेलाएल खस्सी होइए तहिना।”

“मन तँ होइए मुदा कुशेसरक घी संगेमे अछि। ओतए जाइ छी।”

“तँ कि हेतै काल्हि चलि जाएब।”

मने-मन डरो हुअए। ततबेमे एक गोरे आबि कहलकै-

“भोला कक्का, पेटसँ चानीक हँसुली आ पइत निकलल।”

मुदा भोला लेल धैन-सन। जेना कोनो नव बात नै। मुदा मन मानलक जे भरिसक लोककेँ गिरने अछि। हमरा मुँहसँ अनायास निकलल-

“आब कि करबै, एकरा?”

“मासु बना, सोना कमला माइक पवित्र पानिमे धोय लऽ जाएब। अमैन्नियासँ साँझू पहर रान्हब। झालि-मिरदंग बजा कमला माइकेँ मासु-भात-परसादी चढ़ाएब। सौंसे टोलक बाले-बच्चे मिलि-जुलि कऽ खाएब।”

“चमड़ाकेँ?”

“सुखा कऽ रखि लेब। जखन बेसी भऽ जाएत तखन बेपारीकेँ खबड़ि देबै। गाड़ी नेने औत, गिनती कऽ कऽ सभटा कीन लेत।”

ओहो चलि गेल आ हमहूँ दुनू भाँइ नाहपर चढ़ि विदा भेलौं।

~

मातृभूमि

जिनगीक अंतिम चरणमे आइ अपन मातृभूमिक दर्शन भेल। ओ भूमि जइठामसँ माए सदति नजरि उठा-उठा देखैत रहैत, ओ प्यारी, सिनेही, प्रेमी, जीवनदायिनी, जीवन रक्छिनी भूमि-मातृभूमि। दर्शन पबिते कमल मन कलपि उठल मुदा असीम उत्साहक संग उमंग संचारित भेल। काल्हि धरिक जिनगी आँखसँ छिपए लागल, ओझल हुए लगल, मुँह नुकबए लगल। जइ दिन अपन जीवनदायिनी भूमिसँ विदा हुअए लगल रही पूर्ण जुवा रही। नस-नसमे नव खूनक संचार होइत रहए। समुद्री जुआर जकाँ जुआनी उठैत रहए। आशा-अभिलासाक संग पकड़ैक लेल उत्साहित रहए। बाट नै भेटने मातृभूमिक दर्शन लाखो कोस दूर दुर्गमे छिपल रहए। मुदा दर्शन पबिते सत्-चित्त-आनन्दसँ खेलैत देखि, नमन केलियनि।

डाक्टरीक डिग्री प्राप्त करिते बिआह भेल। नीक गाम, नीक कन्या नीक कुल-मूलक संग नीक दहेज भेटल। केना नै भेटैत, जइ डिग्रीक मांग देश-विदेशमे अछि ओइमे बेकारी कतएसँ आओत। मुदा इंजिनियर जकाँ तँ नै जे डिग्री पेलोपर काज नै! तइले तँ साधनक जरूरति अछि से अछि कत्तऽ। जुआनीक उमंग उठिते गेल। संयोगो नीक रहल जे बाइस बर्खक अवस्थामे ओइ फ्रान्समे जइमे महान्-महान् दार्शनिक, तत्व चिन्तक वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, देशभक्त जन्म लेने छथि, काज करैक अवसर भेटल। रंगीनी दुनियाँक स्वर्ग, जेहेन ओतए सड़क तेहेन एतए घर नै, ओइ पेरिसमे। बिसरि गेलौं अपन भूमि-अपन मातृभूमि। ओना सोलहन्नी बिसरि नै गेल रही, मुदा विचारक आलमारीक पोथी जाकमे, तर जरूर पड़ि गेलैं। अखनो मन अछि, गामक विद्यालयक देश वन्दना। हृदैमे नै पहुँचल छल गंगा सन पवित्र जलधाराक सरिता, नै जनैत छलौं माटिक सुगंध आ गाछी-बिरछीक फल-फूलक महमही।

अनुकूल हवा पाबि मन मोहित भऽ गेल। जी तोड़ि जिनगीक पाछू पड़ि गेलौं। करमेसँ जिनगी तँ हमरा किअए नै। नीक स्तरक परिवार बनेलौं, नीक बैंक बैलेन्स अछि। अपनोसँ बेसी खुशी परिवारक सभ रहै छथि। कारणो स्पष्ट अछि। वाल-बच्चाक जनमे भेल, पत्नी अनके घरमे रहैवाली। मुदा आइ मन वेकल किअए लगैए। बौराइ किअए अछि? एकाग्रचित्त सभ दिन रहलौं तखन बान्हल मन पड़ाए कतए चाहैए। की 'आएल पानि गेल पानि बाटे-बिलाएल पानि।' जइ मातृभूमिक गुनगान बच्चा, वृद्ध सभ करै छथि, तइठाम कतए छी। बढ़ैत-बढ़ैत जहिना धन बढ़ैए, गाछ-विरीछ बढ़ैए

तहिना ने विचारो बढ़ैए। मुदा एना किअए भऽ रहल अछि जे आब ऐठाम-माने पेरिसमे, नै रहब अपन मातृभूमिक रजकण बनब।

जहिना बाइस बर्खक वएसमे अपन गाम, समाज, भूमि-मातृभूमि छोड़ि पेरिस आएल रही तहिना आइ छोड़ि अपन प्रेमी मातृभूमि, सिनेही मातृभूमिक कोरामे विश्राम करब। मुदा नहियो बुझैत रही तैयौ अबैकाल सभसँ असिरवाद लऽ लेने रही तहिना तँ एतौसँ असीरवाद लैये लिअ पड़त। जरूर पड़त। मुदा केकरासँ? केकरोसँ नै! ने अपन गंगा-यमुनाक जलधारा, ने हिमालय-कैलाश सन पहार, ने गंगा-ब्रहमपुत्र सन धरती, ने समुद्र सदृश हृदए। जहिना पत्नीक संग आएल रही तहिना जाएब। जँ ओहो नइ जाथि तखन? ओ नइ जाए चाहती तेकर कारणो तँ कहती।

"आब ऐठाम नै रहब।" हम पुछलयनि।

पत्नी बजलीह-

"तखन?"

हम कहलियनि-

"अपन मातृभूमिक दर्शन भऽ गेल। ओतए जाएब।"

फेर पत्नी उत्तर देलनि-

"सभ अपन-अपन मालिक होइए। जँ अहाँ जाएब तँ जाएब।"

पुन: पुछलियनि-

"अहाँ?"

पत्नी बजलीह-

"अपन कारोवार अछि। बेटा-पुतोहु दुनू फ्रान्सक भऽ गेल। दुनियाँक स्वर्गमे रहि रहल छी। तखन की?"

मन पड़ल ओ दिन जइ दिन जिनगीक हिसाब जोड़ि आएल रही। पत्नी संगे रहथि। मुदा आइ? जुग बीत गेल। जिनका सभसँ असीरवाद लऽ आएल रही भरिसक मरि-हरि गेल हेता, गेलापर के हृदए लगौताह। तखन? तखन की? किछु ने। मुदा जाधरि पहुँचब ता धरिक तँ उपाए चाही। विदा भऽ गेलौं।

एक समुद्रसँ मिलैत दोसर समुद्रक विशाल जलराशिक बीच जहाजसँ मद्रास पहुँचलौं। मद्रास बन्दरगाहमे उतरि अपन धरती, अपन देश, अपन मातृभूमिकेँ हृदैसँ नमन केलियनि। मन पड़ल रामेश्वरम्। जखन मद्रास आबि गेल छी तखन बिनु दर्शने जाएब बचपना...। विदा भेलौं।

धरती-समुद्रक बीच बनल रामेश्वरमक मंदिर। एक दिस विशाल जल-राशिक समुद्र तँ दोसर दिस खिलैत इठलाइत मातृभूमि। ऊपर शून्य अकास।

समुद्रेक लहरिमे स्नान कऽ दर्शन केलौं। मंदिरसँ निकलिते खजुरीपर गबैत एकटा साधु मुँहे सुनलौं, “अवगुन चित्त न धरो।” जेना भूखकेँ अन्न, पियासकेँ पानि खेहारि दैत, तहिना मनमे भेल। जलखै कऽ गामक लेल गाड़ी पकड़लौं।

जंगल, पहाड़, नदी, मैदानकेँ चिड़ैत गाड़ी गाम लग पहुँचल। जे गाम कहियो नन्दन वन सदृश सजल छल- लहलहाइत खेत, रास्ता-पेरा विद्यालयसँ सजल छल, धारक कटावसँ विरान बनि गेल अछि। ने एकोटा सतघरिया पोखरि बचल अछि आ ने पीपरक गाछक निच्चाँक विद्यालय। घराड़ी, खेत बनि गेल अछि आ पोखरि-झाँखड़ि घराड़ी। मुदा तँए कि, ने गामक परिवार कमल, ने लोक आ ने गामक नाओं। गामक दछिनवरिया सीमापर पहुँचते एकटा नवयुवककेँ पुछलयनि-

“बाउ, की नाओं छी, अही गाम रहै छी?”

नवयुवक बालज-

“हँ। रमेश नाम छी।”

हम पुछलयनि-

“गामक की हाल-चाल अछि?”

प्रश्न सुनि रमेश ठमकि गेल। किअए नै ठमकैत। लम्वाइ (नमती) भलहिं नै बढ़ल हुअए मुदा रंग आ चौराइ तँ जरूर चतरिये गेल अछि। भरिसक चेहरा देखि डरा गेल अछि। मुदा डर तँ ओतए बढ़ैत जतए डरनिहारकेँ आरो डेराएल जाइत। से तँ नै अछि। मधुआएल मन मुस्कुराइत मुँह खोलि निकलल-

“बौआ, चालीस बर्ख पूर्व अही माटि-पानिक बीच डॉक्टर बनि विदेश गेलौं......।”

मधुर बोली सुनि रमेश बाजल-

“गाममे के सभ छथि?”

कहलिऐ- “कियो नै। जेहो हेताह, हुनको छोड़ि देलियनि। जखन छोड़ि देलियनि तँ वएह किअए पकड़ता।”

तखन रमेश पुछलक-

“रहबै कतए.......।”

हम बजलौं-

“सएह गुनधुनमे छी।”

रमेश बाजल- “हम तँ महिसवारि करै छी, आन किछु जनै नै छी। चलु वस्तीपर पहुँचा दइ छी।”

वस्तीपर पहुँचा रमेश चलि गेल। हम ठमकि गेलौं। पूबारि भागक घरवारीक नजरि पड़िते, ओतैसँ पुछलनि-
"कतए जाएब?"
कहलियनि- "ब्रह्मपुर।"
घरवारी कहलनि- "यएह छी। इमहर आउ।"
मनमे सबुर भेल। हूबा बढ़ल। अपन गामक चालि बढ़ल। लफड़ि कऽ दरबज्जापर पहुँचलौं। घरवारी कहलनि-
"थाकल-ठहिआएल आएल छी, पहिने पएर धोउ। चाह बनौने अबै छी, तावत कपड़ा बदलि आराम करू। आइ भरिक तँ अभ्यागत भेलौं काल्हिक विचार काल्हि करब।"
कहि आंगन जा चाह अनलक। दुनू गोटे पीबैत कहलियनि-
"हमहूँ अही गामक वासी छी। नोकरी करए बाहर गेल रही। अपन घराड़ियो अछि आ दस बीघा चासो।"
ओ बाजल- "हमहूँ आने गामक वासी छी। नानाक दोखतरीपर छी। तँए, ने गामक आँट-पेट जनै छी आ ने पुरना लोक सभकेँ।"
कहलियनि- "हम डॉक्टर छी।"
ओ बजलाह- "तखन तँ गामक देवते भेलौं। जाबे अपन ठर नै बनि जाइए ताबे एतै रहू। अतिथि-अभ्यागतकेँ खुऔने आरो बढ़ै छै।"
ठौर पाबि मन खुशी भेल। जीबैक आशा देखि पत्नीकेँ फोन लगेलौं-
"हेलो.."
पत्नी उत्तर देलनि- "हँ, हँ, हेलो।"
हम कहलियनि-
"गामसँ बजै छी। पुन: घुरि कऽ पेरिस नै आएब। अहाँ जँ आबए चाही तँ चलि आउ।"
पत्नी कहलनि-
"चूक भेल जे संगे नै गेलौं। जाधरि अहाँ छलौं ताधरि आ अखनमे जीवन-मृत्युक अन्तर आबि गेल अछि।"
हम कहलियनि- "जखने मन हुअए तखने चलि आएब।"
ओ बजलीह- "फोन रखै छी..?"

~

भबडाह

चहकैत चिड़ैक चलमली कानमे पड़िते नित्यानन काकाक नीन छिटकलनि। कोनो काज करैसँ पहिने तर्क-वितर्क ओहने महत रखैत जेहने निरजन आँखिये दिनमे चलब होइत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल नजरि आजुक समैपर गेलनि। काल्हि शनि, राखी पाबनि छी। परसू रवि, विदेसर स्थानमे ठसम-ठस मेला हएत। हएबो उचित, एक तँ बैद्यनाथ बाबा साओनक पूर्णिमा विदेसरेमे बितबै छथि, दोसर कमलो उमड़ल अछि, एक संग दुनू काज। भैयारी रहितो जहिना भविष्यद्रष्टा युगद्रष्टासँ ऊपरक सीढ़ी होइत, तहिना ने औझुकेपर काल्हि ठाढ़ होएत। काल्हुक सुरज केहेन उगत ई तँ प्रश्न अछिये। चारिम दिन पनरह अगस्त। भारतक स्वतंत्रताक चौसठिम वर्षगाँठ। साठि बरखक उपरान्त अनाड़ियो-धुनाड़ी लोक वरिष्ट नागरिकक उपहार पबैत तेहनाठाम स्वतंत्रता की आ देश कतए! मुदा लगले मन घुरि गाम दिस बढ़लनि। हिन्दु-मुसलमानक गाम। पनरहियासँ हिन्दु राधा-कृष्णक झुलासँ लऽ कऽ भोला बाबाक जलढरीमे व्यस्त तँ तहिना मुसलमानो दस दिन उपरेसँ रोजा-नबाजमे। एको पाइ लोक नै बाँचल। सभ धरमक काजमे हृदैसँ जुटल। जखन सोलहन्नी लोक पवित्र मने धरमक काजमे जुटले छथि तखन निश्चित गामक काल्याण हेबे करत! प्रेमिकाक आगू जहिना प्रेमी दुनियाँकेँ निच्चाँ देखि ऊपर भ्रमण करैत तहिना नित्यानन काकाक मन कल्याणक संग टहलए लगलनि। उत्साह जगलनि! फुड़-फुड़ा कऽ ओछाइनसँ उठि कलपर जा माइटियेसँ चारि घूसा दाँतमे लगा, आंगूरेक जीभिया कऽ हाँइ-हाँइ चारि कुड़ा मारि चारि घोंट पानियो पीब लेलनि। आँखि उठा वाड़ी दिस देखलनि तँ पत्नीकेँ मचानपर चठैल तोड़ैत देखलनि। आँखि उतारि गाम दिस विदा भेलाह।

दरबज्जापर सँ आगू बढ़िते हिऔलनि तँ बूझि पड़लनि जे घर-दुआर छोड़ि लोक चौके दिस आबि गेल हेता तँए नीक हएत जे चौके दिस जाइ। सोचि नित्याननकाका आगू बढ़ैक विचार केलनि। डेग उठिते मन सिहरलनि। भाए-बहिनक ओहन पर्व काल्हि छी जइमे दुनूक प्रगाढ़ प्रेमक, सिनेह-सिक्त जलक उदय हएत। आशाक संग जिनगीक बिसवासो जगलनि। डेग बढ़लनि।

पनरह-बीसटा डमहाएल चठैल खोंइछामे लेने सुचिताकाकी मुस्की दैत, गद्-गद् होइत जे महीना दिन तँ चलबे करत, तेकर पछाति ने दौंजी हएत। सालमे जँ एक्को पनरहिया चठैलक तरकारी खा लेब तँ कि चीनिया बेमारी

लागत। लफड़ल आबि पछबरिया ओसारपर सूपमे चठैल उझलि पुतोहुकेँ पुछलखिन्-

"कनियाँ, दोकानक काज अछि?"

डिब्बा-डुब्बी हड़बड़बैत पुतोहु बजली-

"हँ।"

"की सब लेब?"

"नोन, हरदी।"

पुतोहुक साँस किछु गर्म सुचिताकाकीकेँ बूझि पड़लनि। मुदा अनठा देलनि। नोनक पौकेट दस रूपैयामे देत, हरदियो कि कोनो सस्ता अछि। ओकरो पौकेट दस रूपैयासँ कममे कहाँ दइ छै। हाथमे तँ पनरहेटा रूपैया अछि। केना दुनू चीज लेब। मन फुनफुनेलनि। बड़बडाए लगली, केहेन बढ़ियाँ खुदरा-खुदरी नून बिकाइ छलै, जतबे जेकरा सकड़ता रहै छलै से ततबे लइ छलए। आब तँ तेहेन पोलीथीन पौकेटमे रहैए जे कमो रहत तँ बन्याँ कहत जे घमि गेल हएत। खाएर एक चुटकी नूने ने कम देत। एक-ने-एक दिन सैरियत दिअए पड़तैक। जहिना बच्चा लगले कनैए, लगले हँसैए तहिना सुचिताकाकीकेँ मन लहड़ए लगलनि। जे नून हाथीकेँ गला दइए ओ प्लास्टिककेँ कि नै गलबैत हएत। आब की कोनो नून खाइ- छी आकि प्लास्टिकक रस पीबै छी। हे भगवान तोड़े हाथ-बाठ छह। जते दिन जीबए दैक हुअ से जीबह दिहह, नै जे लऽ जाइक हुअ तँ लऽ जहिहह। कहू जे प्लास्टिके कलमे पानि पीबै छी, दोकानक चीज-बौस अनै छी, खाइ-पीबैक समान रखै छी। जूत्ता-चप्पल, कपड़ा-लत्ता पहिरै छी। मुदा....?

लगले मन पुतोहु दिस घुरलनि। कहू जे चारिटा गाछ घरोक दावापर हरदी रोपि लेब तँ साल भरि कीनए पड़त। जाबे माल-जाल नै छलए ताबे बाड़ी झाड़ी करै छलौं। आब तँ मालोक नेकरमसँ नहाइयो-खाइयोक पलखति नै होइत रहैए। कन्याँ सहजहि कनिये छथि। कोनो लूरि-ढंग बाप-माए सिखा कऽ पठौलखिन आकि सोलहो आना सासुरे भरोसे छोड़ि देलखिन। मदुा गलती बुढ़होक छन्हि। कोन दुरमतिया चढ़ि गेलनि चारि कोसी पारक पुतोहु उठा अनलनि। एकेटा वस्तुक चरि-चरि, पँच-पँच तरहक विन्यास बनैए, जरूरतिक हिसावसँ रूप-बदलि उपयोग करब। तइ कालमे कहती जे खाली, अल्लूक, तरूआ, भुजुआ, भुजिया टा बनबैक लूरि अछि। अपसोच करैत बजलीह-

"जा हे भगवान, जे पुत हरबाहि गेल, देव-पितर सभ से गेल। कोनो मनोरथ रहए देलह। जखन मनोरथे नै तखन सतयुग, त्रेता, द्वापरे कि।"

तइ बीच मोख लागल ठाढ़ पुतोहु बजलीह-

“आइ शुक्रवारी छिऐ। जखन चौक दिस जाइते छथि तँ अंगूरो आ केरो फलहार ले लेने अबिहाथि।”

पुतोहुक बात सुनि सुचिताकाकी छगुन्तामे पड़ि गेली। मनमे हुअए लगलनि जे एक हजार बात एक्केबेर कहि दियनि मुदा कतौ-कतौ नहियो टोक देब नीक होइत अछि। तँए, किछु नै बजैसँ परहेज केलनि। मुदा, जहिना आगिपर चढ़ल पाइन्कि बर्तनमे ताओ लगिते तरसँ बुलकरा उठए लगैत तहिना काकीक मनमे उठए लगलनि। कहू जे अखन पनपिआइक बेर छै, पहिने तेकर ओरियान कऽ पुरुख-पात्रकेँ खुआएब अपने खाएब आकि सौझुका फलहारक ओरियान करब। बीचमे कलौ सेहो अछिये। भगवानो टेबिये कऽ पुतोहु देलनि। एहेन-एहेन गिरथानि बुते कते दिन घर-परिवार चलत। काकीकेँ चुप देखि पुतोहु दोहरबैत बजलीह-

“नै सुनलखिन। जखन चौक दिस जेबे करती तँ अंगूरो आ केरो नेनहि अबिहाथि।”

पुतोहुक बात सुनिते काकीक मनमे तरंग उठलनि। तरंगि कऽ बजए लगली-

“अहाँ सब कोन उपास करै छी जे सहैसँ पहिनहि फलहारेक ओरियान करए लगै छी। कहुना-कहुना तँ सातटा हरिबासय केने छी। कहाँ कहियो पहिने फलहारेक ओरियान करै छलौं।”

शब्द-वाण जकाँ काकीक बात पुतोहुक हृदैमे लगलनि। तीर बेधल चिड़ै जकाँ छटपटाइत पूतोहू बजलीह-

“अपना जे मन फुड़ै छन्हि करै छथि से बड़बढ़िया मुदा हमरा बेरमे भबडाह हुअ लगै छन्हि?”

भबडाह सुनि काकियोक मन बेसम्हार भऽ गेलनि। कहलखिन-

“कनियाँ, हम भबडाहि नै छी जे केकरोसँ भबडाह करब। अखन आँखि तकै छी तँए चिन्ता अछि। अखने आँखि मूनि देब, घर सम्हारए पड़त। तखन अहूँ यएह बात बुझबै।”

भनडार कोणक जेठुआ गड़ै जकाँ दुनूक बीच रसे-रसे अन्हर-विहाड़ि पकड़ए लगल। कियो पाछू हटैले तैयार नै। दुनूक सीमा-सरहद टूटि-एकबट्ट भऽ गेल। एक्के-दुइये धियो-पुतो आ जनीजातियो सभ अबए लागलि। आंगन भरि गेल।

चौकसँ किछु पाछुए न्त्यिाननकाका रहथि कि मनमे उठलनि, चौरंगी हवा बहैक समए अछि। कखन कोन हवा केम्हरसँ उठत आ घर-दुआर खसबैत

केम्हर मुहेँ चलि जाएत तेकर ठेकान नै। ठोर बिदकि गेलनि। हुलकी दैत मुस्की बहरेलनि-

"एह, अजीब-अजीब करामाती मनुक्खो सभ भऽ गेल। कनिये गलती विधातोक भेलनि जे सींग-नाङरि काटि लेलखिन।"

तहिकाल लाउस्पीकरक आवाज कानमे पड़लनि। राधा-कृष्ण मंदिरपर झुला चलि रहल अछि। आवाज सुनि मन पसीज गेलनि। साओन मास। सुहावन। मन भावन। विशाल वसुंधरा, रंग-रंगक वस्त्र पहीरि मधुमय वातावरणक बीच, बिहुँसि रहल अछि। कृष्णक कदमसँ कदम मिलबैत राधा बिहुँसैत झुला झूलए कदमक गाछ दिस जा रहल छथि। असीम उल्लास। अदम्य साहस दुनूक बीच। कातेसँ गाछमे गोल-गोल, लाल-पीयर झुमका लगल फल-फूलसँ लदल देखि राधा कृष्णकेँ पुछलखिन-

"डोरी लगा डारिमे झुला लगाएब आकि डारियेपर बैस झूलब?"

राधाक प्रश्न सुनि कृष्ण आँखियेक इशारासँ उत्तर देलनि-

"जेहेन समए तेहेन काज।"

चौकक गनगनाइत अबाज, नित्यानन्दकाकाक धियान अपन दिस खिंचलकनि। तखने एकटा नवयुवककेँ स्कूलमे भेटल बहिनीक साइकिलपर 'रेशम की डोर' गुनगुनाइत सुनलनि। चिप्पी सजल विदेशी वस्त्रमे युवक। जहिना दिन-रातिक मध्य जाड़-गरमीक मध्यक संग जिनगियोक मध्य मधुआएल होइत, तहिना काकाक मन सेहो भेलनि। युवककेँ पूछि देलखिन-

"बाउ, परिवारमे के सभ छथि?"

युवक- "बाबा, हिनका सबहक चरणक दयासँ सभ छथि। माइयो-बाबू आ दूटा बहिनो अछि। एक बहिन सासुर बसैए, जतए जा रहल छी आ दोसर पढ़ैए। सोलहम बर्ख छिऐ। दू-तीन साल बाद विआहो करब।"

काका- "अपने?"

युवक- "बाबा, ई देवतुल्य छथि, झूठ नै बाजब। अपना खेत-पथार नहिये जकाँ अछि मुदा खेतबला सभकेँ बहरा गेने बटाइ खेत पर्याप्त अछि। एक जोड़ा बड़द रखने छी। बाबू-माए खेते-पथारमे खटै छथि, अपने बम्बईमे रहै छी।"

काका- "राखी पावनि तँ काल्हि छिऐ, आइये किअए जाइ छी?"

युवक- "साल भरिपर बम्बईसँ एलौंहेँ। एको दिन पहिने जँ बहिनक ऐठाम नै जाएब, से केहेन हएत? भागिनो-भगिनियो ले आ बहिनो-बहनोइले सालो भरिक कपड़ा नेने जाइ छियनि। काल्हि बेरमे घुमब तखन छोटकी बहिनक

हाथे राखी पहिरब। अच्छा अखन जाइ छी बाबा। काल्हि फेर घुमती बेर भेँट करब।''
काका- ''काजे जाइ छी। जाउ?''

जेना-जेना ओ युवक साइकिलसँ आगू बढ़ल जाइत तेना-तेना नित्याननोकाकाक मन दौगए लगलनि। मनमे एलनि पैछला सालक मोबाइलिक घटना। कनी मन खुशी भेलनि। बुदबुदेलथि-
''अजीब-अजीब मदारी सभ अछि। गर लगा-लगा नचबैए।'' मन रूकलनि। पहिनेसँ ने लोक किअए बुझैए जे एहेन-एहेन घटनाकेँ बढ़ए नै देत। मुदा मन ठमकलनि। घटना भेल। राखी पावनि दिन, दस बजे रातिमे बम्बैसँ एक गोटेकेँ मोबाइलसँ समाचार आएल जे बौआ सबहक हाथक राखी जल्दी खोलि दियौ नै तँ अनहोनी घटना हएत! इमहर मुहेँ-मुँह समाचार पसरब शुरू भेल, ओमहरसँ मोबाइलिक समाचार दिल्ली, कल्कत्ता, बंगलोर इत्यादिसँ अकासमे गनगनाए लगल। हाँइ-हाँइ राखी हाथसँ उतरए लगल। भरि रातिक हलचल दिनक दस बजे धरि चलिते रहल। राति भरिक नीनो दिनेमे बौआ गेल। मुदा दस बजेक पछातिक तीखर रौद पाबि वातावरण शान्त भेल। मनमे उठलनि बाल-बच्चाक संग माए-बापक संबंध। केना मनुखक वंश आगू मुहेँ ससरत जतए माइये-बाप दुश्मन बनि ठाढ़ भऽ रहल अछि। तहूमे जिनगीक अंतिम बेलामे नै, उदयक तीन्हिये मासमे हथियार लऽ आगूमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि! मन तुड़छए लगलनि। थूक फेकि मन हल्लहुक केलनि। मन पड़लनि भाए-बहीन्हिक ओ पुरान बात। भाए-बहिन ऐठाम पहुँचल तँ बहिन भायकेँ कहलकनि- भैया जखन अकासक डगर उत्तरे दछिने हएत तखन आएब। मन पड़िते उठलनि सालो भरि तँ प्रकृतक संग खेल होइते रहैत अछि, जिनगीसँ कतेक लग धरि संबंध बनि सकैए, ततबे ने।
जेना मेघौनमे हवा-सिहकी लगने घुसकैत-फुसकैत तहिना नित्यानन कक्काक मन घुसकलनि। देखलनि जे चकेबा कोन तरहेँ बहिन समाकेँ जरैत वृन्दावनमे संग दऽ रहल छथि। जे मनुख चित्ती कौड़ी फेकि नागसँ दोस्ती करैत, बाघ-सिंह, भाउल सहित गाए-महींस, बकरीक संग मुन्यिासँ हंस धरि प्रेमसँ एकठाम रहैत ओकरा मनुखसँ एते घृणा किएक छै। जे धी-जमाए-भगिनाक लेल कहल जाइत, ओइमे कियो अपन नै! तहिना भाए-बहिनकेँ महींसक सींग सदृश कहल जाइत। एक जातिक संहार कऽ बगीचाक काँट हटाएब कहल जाइत अछि! मन तरंगि गेलनि। तखने एकटा बेदरा आबि कहलकनि-
''बाबा, अंगनामे बिरड़ो उठल अछि।''

बेदरासँ किछु पुछब उचित नै बुझलनि। उड़ैत अकासमे कौआ अपन टाहि थोड़े दोहरबैए। ओ तँ समैक घड़ी छी। मन आंगन पहुँचलनि। पत्नीपर नजरि पड़िते विचार उठलनि। झगड़ी की रगड़ी ओहो छथि। बूढ़ भेलौं, एतबो होश नै रहै छन्हि। होशो केना रहतनि जइ परिवारकेँ फुलवाड़ी सदृश जिनगीक कमाइसँ बनौने छथि तेकरा जँ कियो उजाड़ए चाहत से केना उजाड़ए देथिन। मुदा रगड़ी रहितो एकटा गुण तँ छन्हि जे, ने रग्गड़ ठाढ़ करैमे देरी लगै छन्हि आ ने सीढ़ीक भीतर फड़यबैमे। नजरि पुतोहु दिस बढ़लनि अजीब-अजीब लोको सभ फड़ि गेलहेँ। कहत जुगे बदलि गेल। कि जुग बदलल से कहबे ने करत आ कहत जे जुगे बदलि गेल। तहमे तेहेनठाम देखाएत जे अनेरे देहमे झड़क उठत। सासुकेँ उनटा-पुनटा पुतोहु कहथिन तइकाल जुग बदलि गेल। मुदा सासुक लगाओल फुलवाड़ीकेँ कते समृद्ध बनेलौं तइ काल...। जहिना अपन बाप-माए लगसँ कानि कऽ एलौं तहिना अहू परिवारकेँ कनाएब। अनठा चौकपर पहुँचलथि।

चौकपर पहुँचते चाहक दोकानमे गदमिशान होइत रहए। चाह पीबनिहार अपना धुनिमे आ दोकानदार अपन धुनिमे। चाहबला आगि-अगोंड़ा होइत जे सभटा फोकटिया आबि बैस पूँजी बुड़बै पाछू अछि। गिलासपर गिलास चाह ढारने जाइए आ पाइक कोनो पते नै। मुदा खुलि कऽ ऐ दुआरे नै बजैत जे अखन दोकानपर सँ थोड़े चलि गेल जे बुझबै पाइ बुड़ि गेल। तँए दम कसि लिअए। ओना भीतर शंका पुन: उठि जाइ। चेहरा मिलानी करै तँ वएह चेहरा बूझि पड़ै जे आधासँ बेसी ओहन अछि जे सौ-पचास पीब-पीब कऽ दोसर दोकान पकड़ि लेने अछि। किछु जे अछि ओकरासँ कोनो नै कोनो काज हेबे करत। तँए पहिलुके उपकार ने पछाति जुआ कऽ नमहर भऽ जाइए। तँए मुस्की दऽ मन माड़ि लिअए।

मुदा चाह पीबनिहारक उत्साह भिन्ने रहए तँए चाहबला दिस कियो तकबे ने करैत। खाली एतबे कहैत जे दूध जरा कऽ स्पेशल बनाएब। गप्पोक धारा एहेन रहै जे, जहिना जुलुशमे लोक पएरमे लगैत गंदगीकेँ रास्तापर आरो चारि बेर रगड़ि आगू बढ़ैए। एक संग अनेको पर्व। लोक भलहिं लोकसँ जते हटि जाए, मुदा पावनि थोड़े हटत। कम-बेसी भलहिं भऽ जाए। अजीब-सिनेहक संग राधा-कृष्ण बाँहि-मे-बाँहि जोड़ि झुला झूलैत छथि। भाए-बहिनक बीच एहेन पर्व दोसर कहाँ अछि। भरदुतिया तँ भरदुतिये छी। कमलाक जल सेहो बैद्यनाथ बाबाकेँ विदेसरमे भेटबे करतनि। अजीब उमंग-उत्साहसँ हँसिते-हँसिते महिना दिनक संकल्प निमाहि लैत छथि। नित्यानन काकापर नजरि पड़िते प्रेम कुमार चाहेक दोकानपर सँ कहलकनि-

“काका, एतै आउ। सभकेँ-सभ छथि।”

मुस्की दैत नित्याननकाका कहलखिन-

“खाली लोकेटा नै ने फगुआक रमझौआ होइए। ऐ मे की सुनब आ की बाजब। तइसँ नीक बाहरेमे आबह। चौसठ्मि स्वतंत्रता द्विसक बरखी छी, नै पान तँ पानक डंटियो लऽ कऽ सुआगत करबे करबनि।”

तहीकाल अंगनाक समाचार नेने बेटा पहुँचलनि। हाथसँ आँखि मलि-मलि बलौसँ ललिया-करिया नोर बहबए चाहैत। बेटाकेँ बजैसँ पहिने पूछि देलखिन-

“किअए मन मन्हुआएल छह?”

“दुनू-गोटे -सासु-पुतोहु- अंगनामे झगड़ा करै छथि।”

“झगड़ा शान्त करितह कि कहए एलह?”

“हमर बात के सुनत।”

मुस्की दैत नित्याननकाका घर दिस विदा भेला। जते घर लग आएल जानि तते झगड़ो नरमाएल जाइत रहए। सुनै दुआरे कक्को छोटकी डेग बनबैत। मुदा जहिना-जहिना डेग छोट होइत जानि तहिना-तहिना अछिआक मुरदा जकाँ झगड़ा शान्त भऽ गेल।

दुआरपर पहुँचते देखलनि जे जहिना भारी काज केलापर वा रौदाएल एलापर छाहरिमे ठाढ़ भऽ नमहर-नमहर साँस लैत तहिना अंगना-दलानक कोनचर लग ठाढ़ भऽ साँस छोड़ि रहल छथि। आगू आँखि उठा देखलनि तँ पुतोहु थारी-लोटा मँजैबला ओचौन लग ठंठाइते साँस छोड़ि रहलीहेँ। बजैत कियो नै। जहिना मुकदमाक खलीफा मुद्दालह बनि लड़ैमे प्रतिष्ठा बुझैत, तहिना दुनू गोटे। मनमे उठलनि केकरो प्रतिष्ठाक सीमामे नै जेबाक चाहिऐक।

~

परिवारक प्रतिष्ठा

समाजमे सभकँ छगुन्ता लगैत जे होइत भिनसर सौंसे गाम हड़-हड़-खट-खट शुरू भऽ जाइए मुदा कमलाकाकाक परिवारमे एको दिन नै सुनै छी, तेकर की कारण? जहिना रंग-विरंगक लोक समाजमे रहैए तहिना ने रंग-विरंगक रोगो-बिआधि आ क्रियो-कलाप रहैए। मुदा लंकाक विभीषण जकाँ यमुनाकाकी आ कमलाकाकाक परिवार केहेन हलसैत-फुलसैत, कलसैत अछि!

बहुत आँट-पेटक परिवार कमलाकक्काक नै। आने परिवार जकाँ अपन दसे कट्ठा जमीन। मुदा पनरह कट्ठा बटाइयो करै छथि। जइसँ सहि-मरि कहुना साल लगि जाइ छन्हि। ओना आन परिवार जकाँ धीया-पुता झमटगर नै, सिर्फ चारिये गोटेक परिवार। दू परानी अपने आ बेटा-पुतोहु। डोरामे गाँथि जहिना फूलक माला बनैत तहिना परिवारोक डोरा सक्कत। अपन-अपन सीमाक बीच चारू गोटे कोल्हुक बड़द जकाँ चौबीसो घंटा चलैत रहैत। ओना गामक आधासँ बेसी परिवारक समांग गाम-सँ-बाहर धरि रहि परिवार चलबैत, मुदा कमलाकक्काक परिवारमे के बाहर जाएत तेकर अँटाबेशे ने होइत। काकाक मनमे रहनि जे एक्केटा समांग अछि जँ ओ बाहरे चलि जाएत तँ बेर-कुबेरमे एक लोटा पानियो के देत? मौका-कुमौकामे कोटो-कचहरी के करत? ततबे नै, जँ कहीं किसकारक समए बेमारे भऽ जाएब तँ खेती-पथारी के सम्हारत? जनीजाति तँ जनीजातिये होइत, खेत केना जोताएत? जँ खेते नै जोताएत तँ खेती केना हएत? जँ खेतिये नै हएत तँ परिवार केना चलत? अपनो कि आब ओ समरथाइ रहल जे बलधकेलो किछु कऽ लेब।

जहिना कमलाकाकाक मनमे अपन काजक ओझरी लगनि तहिना यमुनोकाकीक मन ओझराएल। मनमे उठनि जे मुँह-झाड़ि पतिकँ किछु तँ नहिये कहि सकै छियनि मुदा पुतोहु लगा बेटाकँ तँ कहि सकै छी। जखने बेटाकँ कहबै तखने ओहो ने सुनताह। कोनो की कानमे ठेकी थोड़े रहतनि।

रधवाक मनमे तेसरे बात उठैत। गिरहस्ती काज बेसी बरसातमे होइए। मिरगिसरा-अद्राक पानि तेहेन ने होइए जे हाथ-पएर सड़ा दइए। एक तँ हाथ-पएर घबाह भऽ जाइए तइपर सँ काजो बढ़ि जाइए। तइसँ नीक जे परदेशे खटब। मुदा विचार लगले रधवाक मनकँ बदलि दइ। ब्रह्म स्थानक भागवत कथा मन पड़ि जाइ। ओना पनरहो दिन सुनने रहए मुदा एक्केटा

बात मन रहलै। ओ ई जे 'माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैघ धर्म छी।'
पुतोहु लेल धैन-सन। 'कोउ नृप होउ हमे का हानी।' एकटा गारजनकेँ के कहए जे तीन-तीनटा गारजनक तरमे छी। जेहने दिन तेहने राति।

पिताक पीठपोहू बनि रधवा कमलाकाकाक संग खेती-बाड़ीमे पूरैत। एते बात रधवा बूझि गेल रहए जे खेतीक भरिगर काजमे हरबाहि, कोदरबाहि आ करीनबाहि अछि। ओना धनरोपनीमे सेहो डॉड़ दुखाइ छै। तँए पिताकेँ ऐ सभ काजसँ फारकती दऽ देने रहनि। गिरहस्तीयो तँ अमरलत्ती जकाँ सघन होइए। काजक इत्ता नै। कलमसँ कोदारि धरिक काज। जते समए तते काज पसारि लिअ। ततबे नै, किछु काज एहनो होइए जइमे कम तरद्दुत होइत आ किछु एहनो होइत जे तीन-तीन बेर केलोपर गड़बड़ाएले रहैत। तइपर सँ मेठनियो बेसी। भरिगरकाज रधवा सम्हारियो लन्हि तैयो कमलाकाकाकेँ सोहरी लागल काज रहबे करनि। जते हाथ-पएरसँ करथि तइसँ कम बुधियोक नै। महीना, ग्रह, नक्षत्रक काज सेहो रहबे करनि। कोन नक्षत्रक धानक बीआ निरोग होइए आ कोनमे पाड़ने कललग्गु भऽ जाएत? कोन नक्षत्रमे कोन चीजक बीआ पाड़ल जाएत आ कोन चीज रोपल जाएत। बारहो मासक हिसाब कंठस्थ रखने छथि। जेकर खगता अखन धरि रधवाकेँ भेबे ने कएल। जते काल काजमे लगल रहैत ततबे बुझैत। बाकी समए ने मारी माछ ने उपछी खत्ता। बिना धैन-फिकिरक बीतरागी जकाँ चैनसँ रहैत। कमेनाइ-खेनाइ आ सुतनाइयेक जिनगी। तीनूक गतियो एकरंगाहे!

आंगनसँ बहराक काज जहिना दुनू बापुत कमलाकाकाक बीच अड़िआएल चलैत रहनि तहिना अंगनाक भीतरक काज दुनू सासु-पुतोहुक बीच। चूल्हि-चीनमार बाहरब-नीपब, घर-अंगना बहारबसँ लऽ कऽ थारी-लोटा धुअब, भनसा-भात करब धरिक भार पुतोहुक ऊपर। जे पुतोहुओ आ सासुओ बुझैत, तँए ने केकरो चड़ियबैक जरूरति आ ने कियो अढ़बैक आशा करैत। तहिना यमुनोकाकीक काज रहनि। कोठीक अन्न केना सुरक्षित रहत, तइठामसँ लऽ कऽ माल-जालक थैर-गोबर केनाइ घास लौनाइ धरिक। ओना किसकारोक समैमे आ कटनियोक समैमे गिरहस्तियोमे हाथ-बटबैत। चीनी मिलमे जहिना एकठाम कुशियार बोझिते, रेलबे टिकट लेनिहारक धारी जेना रसे-रसे आगू बढ़ैत, तहिना कमलाकाकाक परिवार। ने

मुँहा-ठुठी करैक कोनो जगह आ ने होइत।

ओना गाम नीचरस जमीनमे बसल तँए ऊँचरस जमीनक बारहो-बिरहिणीक खेती नै होइत। भीठ जमीन नै रहने भीठक उपजो नहिये! जइसँ गाममे बेख-बुनियादि सेहो कम आ गाछियो-खरहोरि। तीन हीसमे बास आ एक हीसमे बाड़ियो-झाड़ी। ओना तँ छह ऋृतु होइत अछि मुदा गिरहस्तीक लेल मूलत: तीन मौसम होइत। ऋृतु दुइये मासपर बदलैत, जखन कि फसिल तीन मासक उपरान्ते बदलैत। किछु-किछु तीन माससँ कम्मो समैमे होइत मुदा बेसी तीन माससँ बेसियेमे। तँए मोटा-मोटी जाड़, गड़मी वरसाती फसिल होइत। तहूमे डंडी-तराजू जकाँ बरसात डंडी पकड़ने अछि। तराजूक पलरा जकाँ जाड़-गरमी। एक-दोसराक दुश्मनो। कोने एक्केटा रहत। सन्यासी जकाँ दोसर नै सोहाइत। मुदा बीचमे जँ पंच नै रहत तँ झगड़ेमे दुनू लगि जाएत, आगू की बढ़त। सालक बरसाते मौसम एहेन होइत जे सालो-भरिक भाग-तकदीर निर्धारित करैत। जहिना बेसी बरखा भेने दहार होइए तहिना नै भेने रौदी! जे दुनू गिरहस्तीकेँ जान मारैए। हँ एहनो होइए जे, जइ साल समगम बरखा भेल तइ साल सुभ्यस्त समए भेल। जइसँ नीचा ऊपर एक रंग फसिल उपजल। जहिना कृष्ण अर्जुनकेँ कहने रहथिन तहिना मौसमो होइए।

जइ धरतीपर गंगा, सरस्वती, यमुना सन धार एकठाम मिलि कुम्भ सजबैत अछि तइठाम दिन-दहार हत्या, बलात्कार अपहरण हुअए, बिनु बुइधक लोकक भरमार लागल रहए, मनुखकेँ मनुख नै बूझल जाए, तइठाम तीनू संगमक कोन उपकार? नमगर-चौड़गर ऑट-पेटक तीनू धार जे हँसैत-झिलहोरि खेलैत समुद्रमे समाहित होइत, तइठाम......?

हमरा सभकेँ इहो नै ओझल रखक चाही जे एकैसमी सदीक स्वतंत्र प्रजातंत्रक बीच बास करै छी। अखन धरिक इतिहासमे एते सक्षम मनुख ऐ धरतीपर नै भेल छल। तखन दायित्व बनैए जे युगक संग पकड़ि युग-युगान्तरक धाराकेँ स्वच्छ बना चलए दिऐ। काल मनुक्खेटा केँ नै सभ किछुकेँ प्रभावित करैत अछि। जखने सभ किछु प्रभावित हएत तखने जीवन-पद्धतिमे धक्का लगत। ओइ धक्काकेँ निष्क्रिय करए लेल जीवन-शैलीमे बदलाव आनए पड़त! बीतल युग तहिना बदलल। सत्युगमे जे क्रिया-कलाप छल ओ त्रेतामे आबि सुधरल, जइसँ बदलाव आएल। युग-परिवर्त्तन भेल। तहिना त्रेतासँ द्वापर भेल। तँए जरूरी भऽ गेल अछि जे समयांकन इमानदारीसँ हुअए।

कहैले तँ कमलाकाका परिवारक गारजन छथि मुदा अंगनाक सीमासँ अपनाकेँ बाहरे रखने छथि। खेतक उपजा-बाड़ी बाधसँ आनि पत्नीकेँ सुमझा दैत छथिन। यमुनोकाकी की आब नव-नौताड़ि छथि जे परिवारक धक्का-पंजा नै बुझथिन। जिनगीक धक्का-पंजा जीबैक बहुत किछु लूरि सिखा देने छन्हि। सुभ्यस्त समए भेने काकीक मनमे खुशीक कोढ़ी शुरूहे आद्रा नक्षत्रमे जे पकड़लकनि से बढ़ैत-बढ़ैत अगहनमे भकरार भऽ फुला गेलनि।

धान दौन होइते, आने साल जकाँ यमुनाकाकी उसनियाँ करैसँ पहिनहि उपजाक हिसाब बेटो-पुतोहु आ पतियोक कानमे दऽ देब, आने साल जकाँ नीक बुझलनि। मने-मन बुदबुदेलीह-

“कते धान भेल, तेकर कते चाउर हएत आ कते दिन चलत?”

कते दिन चलतमे ओझरी लगि गेलनि। लोकक पेटक कोनो हिसाब अछि। देखैमे ने बीत भरिक बूझि पड़ैए मुदा हाथियो खा-पी कऽ पचा लैत अछि। फेर मन घुमलनि। जखन अपने परिवारक बात अछि तखन एना अग्गह-विग्गह किअए सोचै छी। देखले परिवार नपले सिदहा। मुदा लगले मन आगू घुसुकि गेलनि। आन-आन परिवार जकाँ तँ अपन परिवार नै अछि। आन-आनमे आनो-आनो उपाए छै अपना तँ से नै अछि। लऽ दऽ कऽ खेतियेक आशा अछि। तहूमे एते दिन घटबी पुड़बैले गाम-गाम महाजनो छलए मुदा आब तँ ओहो ने अछि। ने ओ देवी आ ने ओ कराह। महाजनी मरैक कारणो भेल। राजे रोग जकाँ ने बाढ़ियो-रौदी छी। जे जेहेन तेकरा तही रूपे पकड़ैत अछि। जे जते कम आँट-पेटक ओकरा ओते कम आ जे जते नमहर ओकरा ओते बेसी नोकसान करैत। तइ संग इहो भेल जे गामक लोक बाहरसँ सेहो कमा-कमा अनए लगल। जइसँ महाजनीक बीच रोड़ा अँटकल।

ओना बहरबैयो बाहरक बहुत बात तँ नहिये बुझैत मुदा जिनगीक किछु बात तँ जरूर बुझए लगल। नै बुझैक कारण रहए जे पढ़ल-लिखल नै रहने एको गोटेकेँ ने बैंकक नोकरी रहै आ ने करखन्नाक ऑडिटरी। जइठाम धनक केकरोरबा बिआन होइत से कियो ने बुझैत! मुदा रिक्शा चलौनिहार, ठेला ठेलिनिहार, गोदाममे बोरा उठौन्हिारकेँ लगक महाजनसँ भेँट जरूर भेलै। जहिना छोट बच्चा हाथक आङुर मुँहमे लैत-लैत बाहियो पकड़ए लगैत, तहिना खुदरा महाजन लग एने भेल। ओना छोट महाजनी रहने साले भरिक लेन-देन चलैत मुदा पच्चीस हजारक सहयोगी तँ भेटल। बेटा-बेटीक बिआह, घर-घरहट आ बर-बेमारीक आशा तँ भेटल। गामक महाजनीसँ सूदियो छोट। जतए आसिन-कातिकक कर्ज एक्के-दुइये मासमे सवैया-डेढ़िया

वृद्धि करैत तइठाम दस प्रतिशत व्याजक बदला पच्चीस प्रतिशत दिअए पड़त, ततबे ने। मुदा तैयो तँ असाने भेल। दोसर इहो भेल जे आध-मन, एक-मन कर्ज लेल जे भरि-भरि दिन साबेक जौड़ी खर्ड़ए पड़ैत छल सेहो बन्न भेल।

दुनू बापुत -कमलोकाका आ रधवो-कँ यमुनाकाकी बुझबैत कहलखिन-
"एते धान भेल। एकर एते चाउर हएत। एते दिनक पछाति फेर अगिला अन्न हएत। एते दिनमे एते साँझ भेल, एतेटा आश्रम अछि। दिनमे एते सिदहा लगैए।"

यमुनाकाकीक हिसाव सुनि कमलाकाका विचारक दुनियाँमे बौआ गेलाह। जेहो सुनलनि सेहो रसे-रसे बिसरए लगलाह आ जे नै सुनलनि से तँ नहिये सुनलनि। अपन प्रस्तावक अनुमोदनक लेल यमुनाकाकी आँखि नचबए लगलीह। कखनो पतिपर तँ कखनो बेटापर देथि। उनटि कऽ पाछू तकथि तँ टाटक अढ़मे बैसल पुतोहुकँ देखथि। सभ अपने-अपने दुनियाँमे बौआइत। अपन प्रस्तावक उत्तर नै पाबि यमुनाकाकी पुन: दोहरौलन्हि-
"अखन सोचै-विचारैक समए अछि तँ कियो कान-बात नै दइ छिऐ, आ जखन बेर पड़त तखन थुक्कम-थुक्का करैत घिनमा-घीन करब?"
यमुनाकाकीक करुआएल बात सुनि कमलाकक्काक भक्क खुजलनि। मनमे उठलनि जे मुँहो चोरौनाइ नीक नै। किछु तँ बजबे उचित। बजलाह-
"खेतसँ खरिहान आनि तैयार कऽ आंगन पहुँचा देलौं आबो हमरे काज अछि। आकि ओकरा उसनब, रौद लगा कोठीमे राखब, की सेहो पुरुखे भरोसे छी।"
काकाक उत्तरसँ यमुनाकाकीकँ घरक लक्ष्मी मन पड़लनि। खुशीसँ मन नाचि उठलनि। मुदा लगले, जेना घुरमी लगैए तहिना लगि गेलनि। बजलीह-
"जोड़ भरि धोती आकि जोड़ भरि साड़ी तँ कियो साले भरि ने पहिरत। साल भरिक पछाति ओ थोड़े पहिरै जोकर रहै छै। एकर अर्थ ई नै ने भेल जे वस्त्रक जरूरति मेटा गेल, साल भरि लेल मेटाएल, तोहूमे कते बिहंगरा अछि। कहीं चोरिये भऽ जाए की हराइये जाए, की कुत्ते बिलाइ दकरि दइ आकि आगिये-छाइक प्रकोप भऽ जाए।"
यमुनाकाकीक बात सुनियो कऽ कमलाकाका अनठा देलनि। चुपे रहलाह! मुदा मनमे ओंढ़ मारए लगलनि जे माए-बाप अछैत बेटा-पुतोहुकँ परिवारक चिन्ताक उत्तरी पहिराएब उचिन नै। ओना काजक ढंग ओहन सिखा देब नीक, जइसँ जिनगीमे कहियो चिन्ता नै सतबै। आगूमे बैसल रधवा, जेना

संस्कृत आकि अंग्रेजी सुनि कोनो बच्चाकेँ होइत, तहिना सुनबे ने केलक। मुदा तैयो मनमे घुरिआइ जे जे-गति सबहक हेतै से हमरो हएत। तइले अनेरे माथ-कपार पीटब आकि धूनब नीक नै। रमरटियासँ खढ़कटिये नीक! भरमे-सरम चुपे रहल।

अढ़मे बैसल पुतोहुक मन बजैले लुस-फुस करैत। लुस-फुस करैक कारण जे के नै घर आकि गामक मुख्यियारी चाहैए? मुदा बेचारीकेँ कोनो एहेन गरे ने भेटैत जे किछु बजैत। एक तँ नव-नौतुक कनियाँ, दोसर नैहरोमे माए भानसे-भात करैक लूरिटा सिखौने। घरक जुति-भाँतिक कोनो लुरि सिखौनहि नै। केना सिखेबो करितथि? सभ गाम आ सभ परिवारमे किछु-ने-किछु भिन्नता होइते छै। जहिना कोनो नट ओहने बोल्टमे नीकसँ लगैत जे समतुल्य होइत। तहिना तँ परिवारो ने होइत अछि। माइये-बापक परिवार जकाँ सासुओ-ससुरक परिवार हएत, से कोनो जरूरी नै। चाहियो कऽ वेचारी किछु ने बाजि सकल।

ओना धानक ढेरी देखि कमलाकाकाक मन उमड़ैत रहनि। जहिना पानिमे भीजने किताबक पन्ना एक-दोसरमे सटि जाइत तहिना कमलोकाकाकेँ भेलनि। परिवारक सभ हृदैमे सटि गेलनि। मन उमड़ि आगू बढ़लनि। पतिकेँ रहैत जँ पत्नीकेँ वा बाप-माएक रहैत बाल-बच्चाकेँ कोनो तरहक चिन्ता-फिकिर हुअए तँ जरूर कतौ-ने-कतौ माए-बापक दोख छिपल अछि। दोखक कारण मनमे एबे ने करनि। ओछाइनपर जहिना नीन नै एने कछमछी लगैत तहिना मन कछमछाइत रहनि। मुदा लगले, जहिना सुतली रातिमे ओछाइनपर सुतल माएकेँ देखि जागल बच्चा सूति रहैत तहिना कमलोकाका केलनि।
काकाकेँ शान्त देखि यमुनोकाकी असथिर भऽ गेलीह। मनमे उठलनि जे चारि गोटेक आश्रममे तीन गोटे तँ एक्के परिवारक छी, खाली कन्यिेटा ने अखन दस-आना छह-आनामे छथि। ओहो दू-चारि सालमे रिताइत-रिताइत रिता जेती। मुदा अखन तँ नैहरेक चालि-ढालि छन्हि। अखन थोड़े ऐ घरक तीत-मीठ पचौतीह। नैहर गेलापर जखन सखी-बहिनियाँ वा माए-पितिआइन पुछतनि जे बुच्ची अन्न-वस्त्रक ने तँ दुख-तकलीफ होइ छह, तखन ओ थोड़े आगू-पाछू ताकि बजतीह। ओ तँ परिवारेक बचौने बँचत। वएह ने परिवारक प्रतिष्ठा छी। जानियेँ कऽ तँ हमरा सभक घरक छप्पर भगवानक डंगेलहा छी, तेहीमे ने बँचि-खुचि कऽ घरक मर्यादाकेँ संगे लऽ

कऽ चलैक अछि। अहीमे ने अपन इमान-धरम बचबैत परिवार चलाएब तखन ने समाजक संग कुटुमो-परिवारक प्रतिष्ठा ठाढ़ रहत।

~

फागु

कौआ डकैसँ पहिने कतौ-कतौ गाछपर परुक्कि बोल फूटल कि रघुनी बाबाक नीन टुटलनि। जहिना अर्द्ध-चेत अवस्थामे किछु बजा जाइत तहिना मुँहसँ निकललनि-

"आइ फगुआ छी। राति भरिक हँसैत चान सुर्जक लालिमा धरि अरिआति आबि चुकल अछि। कते सुन्नर राति-दिनक संग मिलि रहल अछि। जे जीबए से खेलए फागु"

बजैत-बजैत चेतना चेत गेलनि। चेतते मन दोहरौलकनि-

"जे जीबए से खेलए फागु।"

मुदा जीवित-मृत्युक बीच एहेन लट्टा-पट्टी अछि जे के मरल के जीबैए, बिलगाएब कठिन अछि। कियो जीवित-मृत्यु बुझबे ने करैत तँ कियो बुझितो मानबे नै करैत। कियो जँ बुझबो करैत तँ काते हटौने रहैत। शिवजीक सीमा खिंचब कठिन अछि। पौह फटिते जहिना सुर्जक आगमन हुअए लगैत तहिना रघुनी बाबाक अलिसाएल मन जिनगी दिसि नजरि उठौलकनि।

जहिना कोनो विद्यार्थीक पहिल कलम कोनो प्रश्नमे अँटकि जाइत तहिना रघुनी बाबाक मन अँटकि गेलनि। ओछाइनपर पड़ले-पड़ल कर (करोट) घुमलाह। मनमे उठलनि, अनाड़ियो-धुनाड़ियो कोदारिसँ परती खेत तामि लइए। कहाँ ओकरा हर जकाँ लूरि सिखए पड़ै छै। मुदा बिना लूरिये तँ कोदारियो नै पारल जा सकैए। अँटकल मनमे उठलनि, किछु लूरि देखियो कऽ भऽ जाइत, किछु हाथ पकड़ि सिखाओल जाइत आ किछु रगड़ि-रगड़ि कऽ सिखए पड़ैत छै। ठमकलाह। पुन: मोनमे उठलनि, जहिना पानि माटिक ऊपर छिछलि धारा बनि आगू बढ़ैत, तहिना तँ सुर्जोक किरिण छिछलैत पूबसँ पछिम चलैत अछि। अँटकै कहाँ अछि। हँ अँटकैए। खाधिमे पानि अँटकैए, तामल खेतक गोलामे सुर्जक किरिण अँटकैए। मोनमे संचार भेलनि। दिनक सगुन उचाड़ए लगलाह। फगुआक दिन छी। फागुनक विदाइ सेहो छी। आइये रातिमे चैतक आगमन सेहो हएत। मोन मधुएलनि। पावन्कि दिन छी। वसन्ती पावनि। पुआ-मलपुआ खाएब, रंग-अबीर खेलब, होलीक संग विरहा वसन्त, ढोल-डम्फाक संग गेबो करब आ नचबो करब। मोन पसीज गेलनि।

"एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की।"

ठमकल मोन पाछू बढ़लनि। वसन्तक मध्य, होली पावनि। माघक इजोरिया पंचमी होलीसँ एक मास बीस दिन पूर्व वसन्तक जन्म भेल। मुदा चैत-बैशाखकेँ वसन्त मानने तँ पूर्व पक्षे हेरा जाइत अछि। जँ मध्य मानब तैयो पचास-साठिक दूरी बनि जाइत अछि। ओझराएल मोन मुड़छि कऽ तुड़ुछि गेलनि। भने दस बर्खसँ होली मनाएबे छोड़ि देने छी। लऽ दऽ कऽ भाजने टा शेष बचैए। सेहो दिनेक फल छी। मुदा फलो तँ कअए तरहक होइए- मिठो होइए, खट्टो होइए आ षट-मधुर सेहो होइए। तीनू संगो रहैए आ अलगो-अलगो रहैए। जामंतो प्रकारक भोजनमे तीनूक अपन-अपन महत छै। भोजमे जएह अचार अपन विशेष मतह बनौने अछि, वएह असगरमे दाँतकेँ कोतिया कात कऽ दैत अछि। जे काज करैसँ हनछिन करए लगैए। मोनकेँ घुमिते उपकलनि, वसन्तक आगमनक दिन। आइये सरस्वती पूजा सेहो छी आ हरबाह गृहस्तक हर परतीपर ठाढ़ करत। ठाढ़े नै करत अढ़ाइ मोड़ घुमबो करत। अढ़ाइये मोड़क बोइनियो तहिना। सभ परानी खेबो करत आ जते धानसँ हरक नाश डुमतै तते लैयो जाएत। पसारी भाथीक आगिमे धान-मरूआ लाबा फोड़ि सालक समए गुनत। मुदा सेहो होइ कहाँ छै? हेबो केना करतै, गाए-महिसिक मास एक्कैस-बाइस दिनक होइ छै आ मनुक्खक भऽ जाइ छै तीस दिनक। जहन कि दुनू संगे रहैए। संगे लक्ष्मी बनैए, संगे ऐरावत। रघुनी बाबाक मोनमे उठलनि- अनेरे कोन फेड़मे पड़ै छी। पावनिक दिन छी हँसी-खुशीसँ उठब खाएब-पीब मौज-मस्ती करब। जे गति सबहक से गति हमरो। तइले अनेरे एते मगज-मारी करैक कोन जरूरति। राम-श्याम करैत रघुनी बाबा ओछाइनसँ उठैक विचार केलनि। तखने गाम दिसिसँ पीह-पाहक अवाज कानमे पड़लनि। भोरहरबा नढ़ियाक अवाज जकाँ अकानए लगलाह जे कि कहै छै।

रघुनी बाबाक मोनमे उठलनि, ओह, अनेरे पावनि छोड़लौं। जाबे जिबै छी ताबेए ने। मरि जाएब तँ के देखत आ केकरो देखब। मोनमे फेरि उपकलनि, किअए नै पावनि छोड़ी? जइ होली पावनिक नाओंपर इज्जत-आबरूक, धन-सम्पतिक लूट हुअए ओ पावनि किअए करब। मुदा भुताहि गाछ बूझि कियो आमक गाछ तर जाएब छोड़ि देत तँ आम केना खाएत? जामुनपर सहजहि जम बैसलै अछि। बेल फड़नहि कौआकेँ की? खैर जानह जओ जानह जाँत। गामक बात गौआँ जानह। मुदा परिवार तँ अपन छी। परिवारक नीक-बेजाएक तँ जबाब दिअए पड़त। मुँहो चोरा कऽ रहब नीक नै। कते दिन जीबे करब। आइसँ फेरि फगुआ खेलब। मुदा खेलब कतए? परिवारक संग खेलब...।

रघुनी बाबाक मोन नीक जकाँ असथिरो नै भेल छलनि आकि दादी आबि टोकलकनि-

“सौंसे गामक लोक हर-बिर्ड़ो करैए आ अहाँले भोरो ने भेल। आबो उठब कि सूतले रहब?”

जहिना नोनगर बिस्कुट खेलापर चाह पीबैक मोन होइत तहिना रघुनी बाबाब मोन भेलनि। घोकचल भौंहुक बीचक करिया तीर तनैत बजलाह-

“जखन अहाँ आबिये गेलौं तखन किअए ने गाछक जड़ियेमे पानि ढारी जे डारि-पात सगतरि पहुँचतै। अहीं संग फगुआ खेलब।”

बाबाक बात दादीक हृदैकेँ बेधि देलकनि। छटपटाइत उत्तर देलखिन-

“अखन जे तीस-पेंइतीस गोरेक फुलवाड़ी लगल अछि ओ केकर छिऐ? जहिना कृष्ण वृन्दावनमे फागु खेलाइत छलाह तइसँ कि कम हमर अछि।”

मुस्की दैत रघुनी बाबा कहलखिन-

“अखनो धरि मोनमे बेइमानी अछिये जे अपन कहलिऐ आ हमर छोड़ि देलिऐ?”

अड़हुलक कली सदृश तीर साधि दादी दगलनि-

“अहाँकेँ आन बुझै छी जे फुटा कऽ कहितौं।”

“अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ। परिवारमे सभकेँ कहि दियौ जे दुपहर तक सभ कियो नहा-खा तैयार भऽ जाए। बेरू पहर दुनू गोरे केना जुआनी बितेलौं से सौंसे परिवारकेँ सुना देबै।”

बाबाक बात सुनिते दादीक आँखि मधुआ गेलनि। बजलीह-

“आबक लोककेँ निमहतै। मन अछि कि नै जे दुरागमनक तेसरे दिन पटुआ काटए पू-भर गेल रही।। ऐठाम रौदी भऽ गेल रहै आ डेढ़ बर्खक पछाति आएल रही।”

दादीक बात सुन्तिे रघुनी बाबा उठि कऽ बैसैत बजलाह-

“अझुका लोकक मने बदलि गेल अछि। जेकर देखा-देखीसँ बालो-बच्चा प्रभावित भऽ रहल अछि।”

बजैत-बजैत जहिना दादी-दुनियाँ बिसरि गेली तहिना सुनैत-सुनैत कथा-वक्ता-श्रोता जकाँ रघुनी बाबा जिनगीक बोनमे बोना गेला। एक मन औनाए लगलनि तँ दोसर मन गाबए लगलनि-

“सदा आनन्द रहे अही दुआरे मोहन खेलै होरी हो।”

दादी दरबज्जासँ आंगन दिसि गुनगुनाइत बढ़लीह-

“कियो लुटाबए अपन महिमा।”

जुआनीक रंगमे रंगि रघुनी बाबा गाम दिसि विदा भेला। दरबज्जाक बाट टपि गामक बाटपर पहुँचते मोनमे उठलनि- देखा चाही, कत्ते नवतुरिया सभ देहपर रंग फेकैए आ कत्ते जुआन-जहान अकाससँ अबीर उड़बैए। मुदा लगले मोनमे उठि गेलनि, लोको लाज तँ छी। धिया-पुता केना रंग देत? किअए ने देत, खेलाएत तँ अपनामे, मुदा छिच्चा उड़ि जे पड़त ओकरा कि कहबै।

एका-एकी दादी परिवारक सभकेँ अपने मुँहेँ कहलनि। बाबाक समाद दादी भरि मोन बॅटलनि। नीक-बेजाए दुनूक समीक्षा हुअए लगल। अन्त-अन्त यएह सभ बुझलक जे कहियो ने से पावनि दिन। बूढ़-पुरानक हुकुम छियनि, तँए यादि स्वरुप सुनि लेब नीके हएत। के कहलक अगिला होली देखता आकि नै। जँ देखबो करताह तँ के कहलक जे पाँखि तोड़ि कऽ देखताह आकि ओछाइन धेने देखताह तेकर कोन ठेकान। मुदा ईहो बात मोने-मोन उठैत जे वएह देखताह हमहीं नै देखिऐ। कम-सँ-कम तँ ई हएत किने जे सौंसे परिवार एकठाम बैसि पवनिक दिन बिताएब। दादीकेँ पोती कहियो देलकनि जे आइ भानसो तोरे करऽ पड़तौं।

समैसँ किछु पहिनहि परिवारक सभ कियो दरबज्जापर पहुँचल। बाबा-दादीक बात तँए महादेव-पार्वतीक फागु सबहक मोनमे घुमैत सबहक मुँह बन्न। सभ बाबा-दादीक बात सुनैले कान पाथि नजरि अॅटकौने। रघुनी बाबाक मोनमे उठलनि जे तिल-तण्डुल जँ फेंटा जाए तँ बिलगाएल जा सकैए मुदा जौं पानि-माटि फेंटा जाएत तखन केना बिलगाओल जाएत। तीन खाड़ी बीच परिवार अछि। सबहक अपन-अपन स्तर अछि, अपन-अपन जिनगी अछि। जिनगियेमे खुशियो अबैत जाइत रहैत अछि। मुदा जहिना लोक अपना नीक लेल सभ किछु करैए तहिना ने परिवारो लेल करैए। भलहिं परिवार पैघसँ छोटे किअए ने भऽ गेल हुअए। फगुआ दिनक उमकीमे मोन उमकि गेलनि। जहिना बरखा पानिमे धिया-पुता उमकैए तहिना बबो-दादीक मोन उमकए लगलनि। दादीकेँ बाबा टीप देलखिन-

“जइ साल दुरागमन भेल रहए आ परदेश गेल रही, से मोन अछि आ कि बिसरि गेलौं?”

बाबाक प्रश्नक उत्तर दादी केना नै देथिन। बाबाक ने रोच (धाख) मुदा परिवारक तँ गारजने। निचलासँ ऊपर छिहे। सिनेमा कलाकार जकाँ दादी पोजमे बजलीह-

“लोक सुख बिसरि जाइ छै, दुख मोने रहै छै। किअए ने मोन रहत।”

दादीक पोज देखि छोटकी पर-पुतोहु अपन हालक दुरागमन बूझि बाबाक प्रश्नपर जोर देलक। पुतोहुक टॉट बोली सुनि दादीक मोनमे उठलनि जे मुँहजोर पुतोहु अछि एकटा उत्तर देबै तँ दोसर दोहरा देत। मुँह नोचि कऽ खा जाएत। तइसँ नीक जे अपने मुँहे कहए दियनि।

दादीकेँ हारि मानैत बूझि रघुनी बाबा लपकि प्रश्न पकड़ि बाजए लगलाह-

"कनियाँ, नव-कबरिये रही। मोछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। तीन सालसँ परदेश खटैत रही। जेठ मास दुरागमन भेले रहए। दुरागमनक तेसरे दिन मेड़िया सभ पू-भर जेबाक समए बनौलक। अपनो घरमे चूड़ा-भुसबा रहबे करए बटखरचा लऽ लेलौं। भाड़ा-भुड़ी ले गोरलगाइबला रूपैया रहबे करए। तेसरा दिन चलि गेलौं।"

जिज्ञासा करैत पुतोहु पुछलकनि-

"पएरे गेलखिन आ कि गाड़ी-सवारीसँ।"

जेना गुड़ घावसँ पीज निकलै काल सुआस पड़ै छै तहिना बाबाक मोनमे सेहो भेलनि। विह्वल होइत बजलाह-

"कनियाँ, निरमली तक रेलगाड़ीसँ गेलौं। तेकर बाद पूब दिसक रस्ता धेने कोसी घाटपर पहुँचलौं।"

"धार केना टपलखिन?"

"कनियाँ, जेठुआ समए रहै। धारक पेट खाली भऽ गेल रहै मुदा तैयो अगम पानि तँ रहबे करै। ओना फुलाइक समए भऽ गेल रहै मुदा फुलाएल नै रहै। बेसी नाव भदबरियामे डुमै। एकबेर एहिना भेल जे अपने गौआँक मेड़िया घुमैकाल डूमि गेलै।"

उत्सुक होइत पुतोहु पुछलकनि-

"कते गोरे रहथि?"

"तेरह-चौदह गोरे अपना गामक रहथि आर गोटे आन-आन गामक। चालिस-पेंइतालिस गोरे नावपर चढ़ल रहथि।"

"कते दिन पू-भर कमाइ ले गेलखिन?"

मोन पाड़ैत रघुनी बाबा बजलाह-

"तेकर ठेकान अछि। मुदा तैयो बीस-पच्चीस बर्ख तँ गेलै हएब।"

"कअए दिने पहुँचै छेलखिन?"

"आइ बोर तीनिये दिनमे रंगैली पहुँचि गेलौं। बजारसँ थोड़बे हटि कऽ पकड़ा गेल। चिन्हरबे गिरहत रहए।"

"जौं ओइठीम काज नै पकड़ैतनि तखन कि करितथिन?"

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक जुआनी मोनमे उठलनि। जोशमे बजलाह-

“की करितिऐ! कोनो कि ओतबे देखल-सुनल रहए। मोरंगमे नै काज भेटितए तँ आगू बढ़ि जैतिऐ। सिलीगुड़ी असाम, ढाका तक ठेका दैतिऐ। मुदा काज केने बिना नै अबितिऐ।”

“कोन काज करै छेलखिन?”

काजक नाओं सुनि बाबाक मोन बौरा गेलनि। बजलाह-

“कनियाँ, काजक कोनो ठेकान अछि। गिरहस्तौआ सभ काजक लूरि अछि। ओना धन रोपनी-कटनी आ पटुआ कटैले जाइ छलौं।”

“कते दिन रहै छेलखिन?”

“सालमे दू-बेर जाइ छलौं। घुमा-फिरा कऽ छह मास लगि जाइ छलए। धन कटनीमे तँ एक-लगना काज रहै छलए। मुदा पटुआ समैमे काज छिड़िया जाइ छलए।”

मुँहपर एकटा आंगुर लैत पुतोहु पुछलकनि-

“एक-लगना काज केकरा कहै छथिन?”

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक गुरुमन जागि उठलनि। नजरिपर नजरि दैत कहए लगलखिन-

“एक-लगना काज ओ भेल जे क्रमबद्ध चलैए। एकक बाद एक काज अबैए। जेना भानस करै काल चूल्हि पजारि बरतन चढ़बै छी। अदहन दइ छिऐ। पानि गरम होइए तखन सिदहा लगबै छी। यएह क्रम एक-गलना भेल। मुदा जखन रोटियो पकाएब रहत, तरकारियो बनाएब रहत आ भातो रान्हब रहत तखन ओ काज छिड़िया जाएत। छिड़िआएल काजमे अधिक भनसियो आ चुल्हियोक जरूरति पड़ि जाइ छै। नै जँ भनसिया असगरुआ रहल तँ छिगड़ी-तानमे पड़ि गेल।”

“एक-लगना काज केना करै छेलखिन?”

“पटुऐक कही छी। पहिने ओकरा कटलौं। काटि कऽ जमा कऽ देलिऐ। ती-चारि दिनमे पत्ता झड़ि जाइ छलै। तखन ओकरा ऑंटियाहा बोझ बनबै छलौं। पानि ठेकिना उघि कऽ लऽ जाइ छलौं। पानिमे बाँसक खुट्टी पाटि कऽ, तीन-चारि छल्ली लगा दइ छेलौं एक-दोसराकेँ दबबो केलक आ ऊपरसँ माटिक चेका चढ़ा दइ छलौं। पानिक तरमे सभ डुमि जाइ छलै। गोरलाक बीस-पच्चीस दिनमे सीझ जाइ छलै। तखन ओकरा मुंगरीसँ झाड़ि-झाड़ि साफ करै छलौं।”

“पटुआमे भरिगर काज की होइ छै?”

प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक आँखि ढबढबा गेलनि। आँखि ढबढबाइते पानि पड़ल खजुरी जकाँ मधुर भऽ गेलनि। कहलनि-

“कनियाँ, अखन अहाँ बाल-बोध छी। दुनियाँक तीत-मीठ नै बुझलिऐए मुदा कहै छी। काजे जिनगी छी। तँए काजसँ सटबाक कोशिक हरदम करी। हरदम करैक मतलब ई नै जे भरि दिन देहे धुनी। जहिना राजमिस्त्री मकानक नक्शा बना मकान बनबैए तहिना काजोक छै। छोटे-काज नमहर लग लऽ जाइ छै आ आगू मुँहे टुसिकियेबो करै छै।”

“प्रश्न छूटि गेलनि बाबा?”

“कनियाँ, की कहब? तरकारी तँ ओलो छी जे गाछमे एकेटा होइए, जा कऽ खट दे उखाड़ि लेब। उखाड़ैमे जते समए लागल ओइसँ कम समैमे सजमनि तोड़ल जा सकैए। मुदा सैकड़ो फड़निहार सजमनि बिना देखने-सुनने टेबि केना सकै छी। टेबब असान काज तँ नै। मोनमे दूटाक तुलना करब छी। तहूमे किछु एहेन होइत जे कमे उमेरमे फुफुआ कऽ नमहर भऽ जाइत आ किछु लुलुआ कऽ बौना भऽ जाइत। जँ छोट जानि, छोड़ैत जाएब तँ ओ तरेतर जुआ जाएत, मेहनति डूमि जाएत। तँए हल्लुको काज भारी होइए।”

“बाबा, फेर भसिया गेलखिन?”

“नै कनियाँ, भसिआइ कहाँ छी। होइए जे हृदए फाड़ि अहाँ सभक बीच छिड़िया दी आ अहाँ सभ तितिर जकाँ सभ पीबि ली। मर्द बनि जखन काज करए निकललौं, तखन भरिगर की आ हल्लुक की। मुदा एकटा बात धियानमे जरूर राखक चाही जे कोन काजमे कते जोखिम उठबए पड़त। जइ काजमे जते जोखिम होइ ओइमे ओते सतर्क रही। तर्के रास्ता बनबैए। पटुआ काजमे सभसँ भरिगर अछि पटुआ झाड़ि सोन बनौनाइ। जहिना एक-दोसर जिनगी पबैत तहिना डाँड़ भरि सड़ल पानिमे जइमे जोंक-ठेंगीक संग विषैला साँप सेहो रहैत। चानिपर टहटहौआ रौद, निच्चा डाँड़ भरि पानि। सर्द-गर्मक बीच शरीर। तइपर एक-लगना ठाढ़ भऽ कखनो एकटंगा ठहुन बना पटुआ जड़ि जोड़ल जाइत, तँ कखनो वामा हाथमे उठा दहिना हाथे मुंगरीसँ झाड़ल जाइत। माछी-मच्छड़क तँ ठेकाने कोन।”

सिनेहासिक्त होइत पुतोहु पुछलकनि-

“कते दिनक पछाति घुड़लखिन?”

“डेढ़ बर्खपर घुमलौं। ओइ साल रौदी भऽ गेल रहै। रूपैया पठा दिऐ आ अपने कमाय।”

“अनदिना, बिना सिजनक समैमे कोन काज करै छेलखिन?”

“कनियाँ, वएह समान सभ जेना- पटुआ, तोरी, धान इत्यादि देहातमे उपजै आ तैयार भऽ कऽ बजार अबै-छलै। बजारोमे काज बढ़ि जाइ छलै। उठा काज करै छलौं।” ~

लफक साग

गाममे खेतीक चर्च उठिते लाल काकीक लफक सागक चर्च उठिये जाइत अछि। ओना चरचोक क्रम अछि, मुदा लाल काकीक अलग पहिचान रहने उपजासँ उठैत चर्चक संग व्यक्तित्वक चर्च उठिते रामायण-महाभारतक प्रमुख पद्यक चर्च जकाँ हुनको होइते छन्हि। चरचोक भिन्न-भिन्न क्रममे एना होइत जे कतौ-कतौ खाली गहुमेक चर्च चलैत तँ कतौ अगबे धानक। कतौ खइहनक संग दलहनोक चर्च चलैत तँ कतौ खइहन, दलिहन, तेलहनोक उठि जाइत। कतौ अन्नक संग तीमनो-तरकारीक उठैत तँ कतौ तीमन-तरकारीक संग फलो-फलहरिक। कतौ एहने होइत जे खेतीक संग माछो आ दूधोक चर्च उठि जाइत। भनडाराक भजनमे जहिना कतौ साखीसँ भजन शुरू होइत तँ कतौ भजनक बीच-बीचमे, तँ कतौ साखियेसँ विसर्जनो होइत।

तहिना लाल काकीक सेहो छन्हि। लफ सागक संग लाल काकीक सिनेह खाली सिनेहे नै जिनगी सेहो ओहन छन्हि जेहन वैवाहिक बंधन होइत। जहिना कनाह-खोरसँ लऽ कऽ दिबड़ा भीड़मे बसैबलाक संग एकसँ एक देवसुनरि अपन जिनगी समर्पित कऽ अपन कुल-खनदानक संग समाजक पाग मुरेठा सम्हारि रखैत तहिना लाल काकियो छथिये।

जइ दिन लाल काकी सासुर एली तही दिनसँ लफ साग सेहो संगे-संग एलनि। दुरागमन भेलापर जखन लाल काकी सासुर विदा हुअए लगली तँ सतरिया धान खोछिमे दइले जे राखल रहनि तहीमे लफ सागक बीआ छिपा कऽ ओही धानमे ई सोचि मिला लेलनि जे जँ कागजक पुड़ियामे वा लत्तामे बान्हि राखब तँ खोछि भरनिहारि देखिये जेतीह, जखने देखती तँ खोलबे करती। जखने खोलती आ सागक बीआ देखती तँ हो-ने-हो डाइन-जोगिनक फसाद ने कहीं उठि जाए। निछौहैमे कनी समयै ने लगत मुदा कियो बूझत तँ नै। सएह केलनि। सागक बीआ नैहरसँ सासुर अनैक कारणो रहनि। जहिना हजारोक भीड़मे प्रेमीक नजरि प्रेमिकापर रहैत तहिना लाल काकीक प्रेमी साग तँए संग नै छोड़ए चाहथि। ओना मनमे ईहो होइत रहनि जे अनेरे किअए सागेक बीआ लऽ जाएब, जइ गाम जाएब तोहू गामे तँ लफ साग होइते हेतै, मुदा मन नै मानलकनि। मनोक मानब तँ साधारण नहिये अछि। भलहिं साधारणो बात वा काज कहि मना लेब, ई अलग अछि। लाल काकीक मन ऐ दुआरे नै मानलकनि जे गाम-गाममे जहिना धानक

खेती होइतो एकरंगाहो धान होइत आ नहियो होइत। तहिना ने सागोक अछि, कतौ मतौना, ढेकी साग होइत तँ कतौ पालक-ठढ़िया। कतौ ललका ठढ़िया तँ कतौ हरिअरका। कतौ उजड़ा भुल्ला होइत तँ कतौ सतरंगा सेहो होइत। तँए जहिना गाम-गामक पानि, तहिना वाणि, तहिना खेती तहिना बाड़ी तहिना झाड़ी, तहिना फुलवाड़ी तहिना ने आनो-आन होइत। तँए कोनो जरूरी नै अछि जे लफ साग ओहू गाममे होइते हेतै। जँ नै होइत हेतै तँ लल्लो-विहल्लो भऽ जाएब। लइये जाइमे की लागत बूझब जे धाने अछि। यएह सब सोचि लाल काकी जहिना तीर्थस्थानक यात्री पनपीबा बर्तनक संग सिदहो-समर संगे लऽ चलैत तहिना लफ सागक बीआ सेहो लऽ लेलनि।

लफ सागक गुण लाल काकीकेँ बूझल रहनि। किएक तँ नैहरोमे बेसी काल खेबो करथि आ उपजेबो करथि। खेतियो हल्लुक। जखन सागक गाछ जुआ जाइत तखन ओइमे फड़ल बीआ सेहो रसे-रसे पाकि जाइत। जहिना बुढ़-बुढ़ानुसक विचार बिनु पुछनौं फूटि-फूटि झड़ए लगैत तहिना सागोक बीआ गाछक आशा छोड़ि खापड़िक लाबा जकाँ चनकि-चनकि बहरा जाइत। कतबो पानि-पाथर बरसौ आकि ठनका खसौ पृथ्वीक कोरामे छह मसिया बच्चा जकाँ माइक छातीमे सूति रहैत तहिना सागोक बीआ सूति रहैत। मुदा अचेतन रहितो चेतन भऽ ओइ दिन फुड़फुड़ा कऽ उठि जाइत जइ दिन उठैक समए होइत। तँए कियो बीआ जोगा समैपर खेतकेँ तामि-कोरि बागु करैत तँ नहियो बागु केने ओइ खेतमे अपनो उगि जाइत जइमे पछिला साल भेल रहैक।

लफक सागमे लाल काकी जहनिक कारण छन्हि जे ओ जनै छथि जे जइठाम लोक नून-भात आकि नून-रोटी खा जीवन बसर करैत अछि तइठाम जँ चारिटा लफ सागक पत्ताकेँ एकलोटा पानिमे कनी नून दऽ मेरचाइक फोरनसँ फोरना देबै तँ तेहेन सिनेही भऽ भात-रोटीमे सटि ओहन गति पकड़ि लैत जेना खाली सड़कमे बाहन धड़ैत। चारिये पातक मेजनक संग आधा किलो मीटर ससारि लिअ।

जिनगीक संग पुरनिहार साग अपन कथा-बेथा ललकारी छोड़ि केकरा लग बाजत। जे ओकरा दिस घुमियो कऽ ने तकैए तेकरा कहिये कऽ की हेतै। खेतक आड़िपर पहुँचते भुखाएल नेरू-पर्डू जकाँ लालोकाकीकेँ साग कहैत-

“काकी, आइ नइ हजारो बर्खसँ गेनहारी बथुआ-नोनी इत्यादि संगे-संग चलैत एलौं कियो हवाइ जहाजपर भोज-भात करैए मुदा हमरापर किअए ने ककरो नजरि पड़लै। जँ नजरि पड़ल रहितै तँ एहिना धरती धेने रहितौं।”
सागक दुखनामा सुनि लाल काकी विह्वल भऽ कहलखिन-
“बहीन, कियो अपना भागे-करमे जीबै-मरैए। तइले अनेरे किअए दुख करै छह। जइ दिन उपटि जेबह तइ दिन बुझिहक जे या तँ ई धरती नै रहए दिअए चाहैए वा ई धरती रहै जोकर नइए।”
साग बाजल- “लाल काकी, लोक बड़ कुभेला करैए। नै तँ कहू जे सिमटीक आंगन-घर बना कऽ रहैए आ हमरो जँ अखारमे कनी माटि छिड़िया सिमटीक अंगनोमे आकि छज्जियोपर लगा देत तँ कि आसीन-कातिक तक भाँज नउ पुरबै। मुदा आने साग जकाँ जे फुटा देत जे ई गरमीक छी तँ ई जाड़क। भदवारिमे साग खेबोक नै चाही से कहू जे ई होइ?”
सान्त्वना दैत लाल काकी कहलखिन-
“अइले किअए दुख करै छह, तोहर तँ मान-मरजादा एते छह जे बिनु तोरे अपन माइयो-बापक उद्धार नै कऽ सकैए। करह दहक जते कुभेला करतह से करह।”

मिथिलांचलक भोज जहिना अदौसँ आइ धरिक भोजनक इतिहास अपना पेटमे समेटने अछि तहिना गामो ने समेटने अछि। एक दिस भात दालिक संग तरकारी, तइ संग संग पानिमे बनल अदौरी, तँ तेलमे बनल बर-बरीक संग, दही-चिन्नीक संग विसर्जन होइत। जे भोज्यक इतिहास प्रदर्शित करैत तहिना बाधक बनल रखबारक खोपड़ीक संग बहुमंजिला मकानक बीच आदिक मनुखसँ लऽ कऽ सभ्य -आधुनिक- मनुष्य तकक इतिहासक झलकी सेहो दैत अछि।

जइ दिन लाल काकी सासुर एली तइ दिन ओ पनरहे-सोलहे बर्खक रहथि। आने-आन जकाँ दुइये बर्खक पछाति पतिकेँ मुइने विधवा भऽ गेली। मुदा दुइये बर्खक अभियन्तर लाल भौजी, लाल काकी, लाल दादीक माला समाज पहिरा देलकनि। एकोटा संतान नै भेल छलनि। जइ दिन पति मुइलनि तइ दिन एहेन ओझरीमे लाल काकी ओझरा गेली जे भरि पोख कान्यिो नै सकलीह। ओझरी लगलनि जे जइ समाजमे वैधव्य बान्ह एते सक्कत अछि जे ता-जिनगी वैधव्य धारण केने रहैत। तइपर अशुभक उपराग ऊपरसँ। मुदा कि समाज ई भार लइए जे ओकर जिनगी इज्जतक संग केना चलतै।

जे समाज केकरो जीवन नै दऽसकैए कि ओइ समाजकेँ केकरो ओङरी बतबैक अधिकार छै? विधवाक संग जे-जे किरदानी समाज करैत आएल अछि आ कइयो रहल अछि कि ओ समाज सामाजिक बंधन बनबैक अधिकार रखैए? नारी जागरणक लेल ओकर सुरक्षाक पक्का बेवस्था सेहो हेबाक चाही जँ से नै तँ ने ओ परिवारक संग अपन प्रतिष्ठा बचा सकैए आ ने बाहर बचा सकैए।

पतिक परोछ भेलापर माइयो-बाप आ सरो-समाज लाल काकीकेँ कतबो हिलौलखिन-डोलौलखिन, मुदा लाल काकी अड़ि गेलखिन जे समाजमे हमरा सन बहुतो छथि, जहिना हुनका सबहक जिनगी कटतनि तहिना हमरो कटत। जते भोग-पारसमे छल तते भोगलौं आ माँ मिथिलाक फुलवारी छोड़ि कतौ ने जाएब। जखन अपने हँसुआ, खुरपी कोदारि चलबैक लूरि अछि, तखन कतौ रहि जीवन-यापन कऽ सकै छी। अपन मान-मर्यादा अपने नै बिगाड़ब।

अस्सी बर्ख पार केलापर लाल काकीक नजरि ओइ दिस गेलनि जे-जे नजरिसँ देखने रहथि। नजरिसँ नजरि मिलाएब, टकराएब दुनू होइत तहिना लाल काकीक मनमे सेहो उठलनि। एहेन निचेनसँ जिनगीमे कहियो बैसबो ने कएल रहथि जे बुझबो करितथि आ सोचबो करितथि। जइ जिनगीमे बुधि-विचार जँ जिनगीक संग नै चलत ओ जिनगिये केहेन? गुनधुनमे पड़ल एकटा मन कहलकनि-

“हमरा सन-सन लोकक लेल जे बेवहार चलि रहल अछि ओकर निमरजना के करत?”

दोसर मन उत्तर देलकनि-

“जे निमरजना करैबला छथि ओ अपने चालिये ओँघराएल छथि तखन अनका कि देखथिन। पछिम मुहेँक गाड़ी पकड़ि पूब मुहेँ जाए चाहै छथि, से केना हेतइ।”

मनक घोंघौज देखि लाल काकी काल्हिये जे ओराहैले बदाम अनने रहथि, ओराहैले विदा भेलीह।

~

तिलकोरक तरूआ

जहिना नमहर दोकानमे प्रवेश करिते जीवनोपयोगी वस्तु देखि मन उबिआए लगैत जे ईहो कीन लेब, ओहो कीन लेब। मुदा पाइयो आ विचारो तँ ओतै रहैए जतए पहिनेसँ विचार भेल अबैए। इच्छा रहितो किसुनलाल डेरामे डाइनिंग टेबुल नै लगा ओसारेपर अपनो दुनू परानी आ अतिथियो-अभ्यागतकेँ खुअबैत। कम दरमाहा साधारण जिनगी। शहरमे रहितो गामक चालि-ढालि बेसी, कारणो स्पष्ट जे शहरी बनैले शहरी जिनगी बनबए पड़ैत। जे ओहिना नै पाइक हाथे बनैत। पाइयक काज मुँहसँ थोड़े होइ छै। भलहिं मुँहक आगू पाइक मोल जेहेन होइ। खास्ता कचौड़ी मुँहमे लाड़ैत-चाड़ैत गर लगबैत देवकान्त बजलाह-

"आह, बुझलह किने किसुनलाल किछु होउ, दुनियाँ सात बेर किअए ने उनटै-पुनटै मुदा अपना ऐठाम गामक जे तिलकोरक तरूआ अछि, ओकर तुलना कतए हएत?"

देवकान्त भाइक बात सुनि किसुनलालक मनमे कनियो हिलकोर नै उठलै। किएक तँ मनमे यएह नाच होइत रहै जे डेरामे गौआँ एलाहेँ तँए ई नै अजस हुअए जे खेनाइयोमे ठकि लेलक। नीक कि दब भरि पेट कहुना खाथि। जँ से नै हेतनि तँ दसठाम बजताह जे खाइयो ले भरि पेट नै देलक। तही बीच मनमे उठलै जे पूछि-पूछि खुआएब नीक। जे कम-सँ-कम पहिलबेर तँ कहता जे हँ इच्छापूर्ण खेलौं आब कने अराम करैक ओरियान करह आ तोहूँ सभ खा-पीअह, काज-उदम देखहक। दैन्य दृष्टिये देखि किसुनलाल बाजल-

"भाय सहाएब, खेबा जोकर बनल छै की नै। कहाँ खाइ छिऐ चारिटा आरो नेने आबी?"

पहिलुक ढकार ढेकड़ैत देवकान्त उत्तर देलक-

"अँए हौ, तूँ हमरा राक्षस बूझै छह जे आगूमे एत्ते वस्तु ढेरिया देलह हँ आ तइपर सँ परसन लइले कहै छह?"

जहिना डारिमे लागल मचकीक पहिल आस होइत तहिना, किसुनलालक मनमे आस जगिते बाजल-

"भाय सहाएब, कनिये-कनिये समान सभ परसै ले घरवालीकेँ कहने छलिऐ। जेना-जेना भोजन करैत जेताह तेना-तेना परसि-परसि दैत जेबनि।"

तहसाना जकाँ तह्िआएल भोजन पाबि देवकान्त भाइक मन गदगदाएल। किसुनलालक बात अंतो ने भेल छलै आकि बिच्चेमे देवकान्त बाजि उठलाह-
"अँए हौ किसुनलाल, तूँ अनठिया बूझै छह। अपन घर छी जे खगत आकि बेसी खाइक मन हएत ओ मांगि कऽ लेब। तइले तोरा मनमे किअए होइ छह जे भुखले उठि जाएब। हम ओहन लोक नै ने छी जे खाइओ लेब आ दुसियो देब।"
तखने किसुनलालकेँ पत्नी- सिंहेश्वरी हाथक इशारासँ शोर पाड़ि कहलखिन-
"तिलकोरक तरूआ दऽ भैया की कहलखिन?"
"किअए?" किसुनलाल पुछलक।
"तिलकोरक साग आ चटनी तँ खाइ छी, बनबैयोक लूरि अछि मुदा तरूआ नै खेने छी।"

ओना सिंहेश्वरी देवकान्तसँ अढ़ भऽ कहैत मुदा बोलीमे एहेन टाँस देने जे देवकान्तो बुझथिन। साग आ चटनी सुनिते मनमे उठलनि जे साग तँ कत्ते दिन खेने छी। तहूमे जखन पेशाबक गड़बड़ी रहए तँ पथ्यमे यएह चलैए। मुदा चटनी तँ नै खेने छी। लाज-संकोच तँ ओकरा ने होइ छै जेकरा बूझि पड़ै छै जे भारी छी। मुदा हम कोन भारी छी जँ भारी रहितौं तँ बुझले रहैत। नै बूझल अछि तँ बूझि लेब कोन अधला हएत। जँ कहियो खाइयेक मन हएत, बुझलेहे ने काज देत। अचार मुँहमे लैत मुँहक कर समेटि कऽ घोटैत बजलाह-
"किसुन, ई की कोनो गाम-घर छी जे कनियाँ एत्ते संकोच करै छथि। एतै आबह कने एकटा बातो बुझैक अछि।"
देवकान्तक बात सुनि किसुनलाल तँ ससरि कऽ लगमे आबि गेल। मुदा सिंहेश्वरी -पत्नी- किछु आगू बढ़ि, किछु पाछू दिस आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह। जहिना कोनो बच्चोसँ कोनो गप बुझए बेरमे रंग-रंगक प्रश्न, पूरक प्रश्न पूछि संतुष्ट होइत अछि। तहिना देवकान्तोक मनमे होन्हि जे कोनो बात बूझैले सोझा-सोझी नीक होइ छै लजकोटर तँ बहुत बात छोड़िये दैत अछि आ बहुत बिसरियो जाइत अछि। दोखाह तँ दुनू भेल। अपनाकेँ निच्चा उतरि सिंहेश्वरीकेँ ऊपर चढ़बैत देवकान्त कहलखिन-
"कनियाँ आइ ने किसुनलाल दू-पाइ कमाएल हेँ तँ फुलपेंटो पहिरने देखै छिऐ, मुदा जखन गाममे छल तखन तँ वएह एकटा चरिहत्थी गामछा छै। डाँड़मे लपेटने रहै छल। गप-सप्प करैमे कोनो-लाज-धाक नै हेबाक चाही। हम जे बुझै छिऐ से अहूँ पूछू आ जे नै बुझै छिऐ से हमहूँ किअए ने पूछब। तइले लाज-संकोचक कोन काज छै।"

किसुनलाल- "भाय सहाएब, कहैले तँ गाममे नै छी मुदा गामे जकाँ एतौ छी। ने ओते कमाइ होइए जे होटल घुमब, ज्वेलरी घुमब। बस डेरासँ कारखाना आ कारखानासँ डेरा अबै-जाइ छी। अठबारे -छुट्टी दिन- कनी-मनी घूमि लइ छी सेहो पएरे।"

पतिक बात सुनि सिंहेश्वरी पाछूसँ ससरि कनी आगू बढ़ि तिरछिया कऽ ठाढ़ भऽ बजलीह-

"कि कहलखिन?"

देवकान्त- "कहलौं यएह जे तिलकोरक चटनी केना बनबै छिऐ?"

देवकान्तक प्रश्न सुनि सिंहेश्वरी बजलीह-

"भैया, हिनका कि कोनो नै बूझल हेतनि।"

देवकान्त- "कनियाँ, कोनो कि हमरा जँचैक अछि, धरमागती कहै छी, नै बूझल अछि।"

तइ बीच सामंजस्य करैत किसुनलाल बाजल-

"भाय सहाएब, ओना हम तरूओ खेने छी, सागो खेने छी आ चटनियो खेने छी। धीया-पुतामे पाकल तिलकोरक फड़ सेहो खेने छी। जाबे माए जीबैत रहए ताबे आन दिन तँ नहिये मुदा जुरशीतल पाबनिमे तिलकोरक तरूआ अवस्से तड़ए। बड़ खर्चाक चीज छी। ओते खर्च कऽ खाएब असान थोड़े छै।"

पतिक सह पबिते सिंहेश्वरी बजलीह-

"भैया, हमर माए-बाप बड़ गरीब छलाह। भरि पेट अन्नो नै भेटैत छलनि तखन जे तरूआ-बगहरूआक सेहन्ते करितथि से पार लगितनि।"

सिंहेश्वरीक बात सुनि मुड़ी डोलबैत देवकान्त बजलाह-

"हँ, से तँ ठीके। हमहूँ की कोनो बेसी खेने छी। जहिया कहियो घरदेखीमे कतौ जाइ छी तखन खाइ छी। सेहो आब उठाबे भेल जाइए। आब तँ सहजहि लोक तेहेन चिकनिया भऽ गेल जे अल्लुऐक पाँचटा पूरा लइए। नवका तूर तँ खाइक कोन गप जे बुझबो ने करैत हेतइ। पात-पुत कहि थोड़े खाएत। अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ, असल बात तँ छुटले अछि।"

विचारक सामंजस्य पाबि सिंहेश्वरीक उत्साह जगलनि, बाजलीह-

"भैया, साग तँ बुझले हेतनि जहिना कदीमा पात, अड़िकंचन पातकेँ कत्तासँ काटि भुजल जाइ छै तहिना तिलकोरो पातक होइ छै।"

हूँहकारी भरैत सिंहेश्वरीक बातकेँ मानि देवकान्त बजलाह-

"हँ-हँ, तिलकोरक साग तँ केत्ता दिन खेने छी। मुदा चटनी नै।"

जहिना नव काज केने, नव जगहपर पहुँचने वा नव लोकसँ दोस्ती भेने मनमे खुशी होइत तहिना दस बर्ख पहिलुका खेलहाक चरचा करैमे

सिंहेश्वरीकेँ सेहो मनमे खुशी उपकलनि। मुस्कुराइत बजलीह-
"भैया, अड़िकंचन पातकेँ कदीमा पात वा आन पातक तरमे दऽ पतौड़ा बना आगिमे पकौल जाइ छै, तहिना तिलकोरो पातकेँ पकौल जाइ छै। जखन उपरका पात झड़कि जाइ छै तखन बूझि जाइऔ जे तिलकोरोक पात सीझ गेल हएत। ओकरा चूल्हिसँ निकालि चाहे पान्कि वर्तनमे दऽ दिऔ नै तँ कनीकाल सराइले छोड़ि दिऔ। जखन सरा जाएत तखन ओकरा पतौड़ासँ निकालि सिलौटपर थकुचि कऽ पीसि लिअ। बहुत मसल्लाक काजो नै पड़ै छै। चसगरसँ नून मिरचाइ दऽ दिऔ। बस भऽ गेल। ओना लोक भातोमे खाइए मुदा रोटीक तँ बुझिऔ जे जहिना भातक दालि तहिना रोटीक तिलकोरक चटनी छी।"
सिंहेश्वरीक बात सुनि तेसर ढकार ढेकरैत देवकान्त लोटा उठा पानि पीबि बजलाह-
"किसुनलाल, बहुत खेलिअह समानक आगू खेनिहार थोड़े ठठत। बड़ ओरियान केने छेलह।"
जहिना नीक विद्यार्थी बोर्ड वा युनिवर्सिटीमे टॉप केलोपर झुड़झुड़ाइत जे दुइयो प्रतिशत नम्बर आरो रहैत तँ अस्सी प्रतिशत पूरि जइतए। तहिना किसुनलाल कहलकनि-
"भाय सहाएब, कनिओ आर खाइऔ।"
आग्रह सुनि देवकान्त बजलाह-
"हम कि कोनो राक्षस छी जे कतबो खाएब तँ पेटे ने भरत। मनुखक जे भोजन छिऐ से तँ खेबे केलौं। तो नै अंदाज केलहक जे लोक कते खाइए। पेटेक कोन बात जे मनो भरि गेल। अच्छा एकटा बात कहह जे अपन गौआँ के सभ ऐठाम, बम्बइमे रहै छथि?"
देकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलाल मने-मन सोचए लगल बम्बइ सनक शहरमे के कतए रहैए ई भाँज तँ मात्र दुइये गोटोकेँ रहै छै। पहिल जे काज नै करैए, दोसर जे कोनो कम्पनीक एजेंसी करैए। बाकीकेँ कोन जरूरत छै। अठबारे छुट्टी होइए तइमे कि सभ करब। कपड़ा-लत्ता खींचब आकि सप्ताह भरिक अधखड़ुआ नीन पुराएब, आकि दुनू परानी मिलि कोनो नव जगह देखि लेब, आकि भेँट-घाँट करब। तखन तँ ओहुना कियो-ने-कियो दर्शनीय जगहपर भेँट-घाँट भइये जाइ छथि। गाम-घरक हालो-चाल बूझि लइ छी आ संग मिलि चाहो-पान कऽ लइ छी। अपन मजबूरीकेँ छिपबैत किसुनलाल बाजल-
"भाय सहाएब, अहूँक जेठजन तँ परिवारे लऽ कऽ रहै छथि, हुनकासँ सभ भाँज लगि जाएत। तखन हम एत्ते जरूर कहब जे जइ करखानामे काज

करै छी तइमे तीन गोटे छी। कहैले तँ उठे काज अछि मुदा सभ दिन काजो लगैए आ एकेठाम सात दिनक पगारो भेटैए। तइमे रवि दिनक सेहो भेटैए।''

देवकान्त- ''अझुका तँ छुट्टी लिअए पड़ल हेतह?''

''किअए छुट्टी लिअए पड़त। कोनो कि ओकर दरमाहाबला नोकरी करै छिऐ। अझुका बदला रवि दिन काज कऽ देबै। कोनो की स्कूल-आँफिस छी जे सोलहन्नी बन्न होइए। करखाना छिऐ ने। सभ दिन चलिते रहै छै।''

''परिवार किअए गामसँ लऽ अनलहक ऐठामसँ कमे खर्चमे गामक परिवार चलैए?''

''भाय सहाएब, अहूँ अनठा कऽ बजै छी। गाम-घरक लोकक किरदानी नै देखै छी जे ताड़ी-दारू पीब-पीब कि सभ किरदानी करैए। अपन इज्जत अपने सोझामे नीको होइ छै आ लोक बचाइयो सकैए। तखन देखियौ ज मनमे तँ अछिये जे जखने गाममे रहै जोकर, कोनो काज ठाढ़ करै जोकर पूजी भऽ जाएत चलि जाएब।''

''कते महीना बचै छह?''

''एते दिन तँ बूझू जे कहुना कऽ गुजल केलौं मुदा आब छह माससँ गोटे महीना हजार रूपैया आ गोटे पनरहो सौ बचि जाइए।''

''बैंकमे जमा करैत जाइ छह किने?''

''बैक जाएब से छुट्टी होइए। एजेंट-फेजेंट तँ ढेरी अबैए मुदा ओकरा सबहक भाँजमे नै पड़ए-चाहै छी।''

''कमो पूजीसँ तँ गाममे काज चलै छै। बिनु पूजियोक चलै छै।''

''हँ से तँ चलै छै। जेकरा अपन कारोबार नै छै ओ दोसराक काज करैए। मुदा देखते छिऐ जे कते बोनि दइ छै। तहूमे आब कहुना-कहुना दुनू परानीमे आठ हजार महीना उठबै छी, ऐठाम महगी अछि तँए कम बचैए। मुदा गाममे तँ कम-सँ-कम ओते कमाइ हुअए जे जहुना गुजर कटै छी तहुना पूरा सकी।''

''अपन कि अन्दाज छह जे कते दिनमे पूरा लेबह?''

''जँ भगवान निकेना रखलनि तँ डेढ़-दू साल मे जरूर पूरि जाएत। अहाँ भाय-सहाएब सबहक दोसरे दिन-दुनियाँ छन्हि।''

भाय सहाएबक नाओं सुनिते जहिना भरल पेटक गरमी होइ छै तहिना देवकान्तकँ फूकि देलकनि। मुदा अपनाकँ सम्हारैत बजलाह-

''सुथनी भाय-सहाएब। मन भेल जे कनी बमै देखी, दरभंगामे टिकट कटेलौं चलि एलौं। तोहर नाओं-ठेकान लऽ लेने रहिहह। तँए तोरा डेरापर चलि

एलौं। भाइये छिआह तँ कि ओइसँ सतरह-बर नीक तूँ छह। कम-सँ-कम समाज बूझि तँ सुआगत केलह।''

अपन प्रशंसाा सुनि किसुनलाल विह्वल भऽ गेल। बाजल-

''भाय सहाएब, ओते तँ कमाइये ने अछि जे अइल-फइलसँ खर्च करब मुदा समाजक जँ कियो डेरापर औताह तँ अनका जकाँ मुँह नै घुमा लेब।''

किसुनलालक सह पबैत देवकान्त बजलाह-

''किसुनलाल परिवारे सभ कोकणि गेल तँ समाज केहेन हएत। मुदा तँए सोलहो आना परिवार कोकणिये गेल सेहो बात नइए। जाबे धरतीपर धरम नै छै ताबे चलै केना-ए।''

किसुनलाल- ''भाय सहाएबक भेँट करबनि की नै?''

''मन तँ एको पाइ नै अछि मुदा जखन ऐठाम आबि गेलौं तखन नहियो भेँट करब उचित नहिये हएत। तोरा तँ हुनकर मोबाइल नम्बर बूझल हेतह किने?''

''हँ से तँ लिखल अछि। मुदा मोबाइल अपन कहाँ अछि?''

''बुथपर सँ तोहीं कहि दहुन जे देवकान्त गामसँ ऐला अछि। जँ गप करए चाहता तँ अपने कहथुन नै तँ जानकारी तँ भेटिये जेतनि।''

भायपर बिगड़ल देखि सिंहेश्वरी देवकान्तकेँ पुछलकनि-

''भैया, एना खिसिआएल किअए छथिन?''

देवकान्त- ''कनियाँ, की कहब कहैले तँ पाइ-कौड़ीबला कहबै छथि। तहिना घरक घरोवाली छथिन। अपना तँ कनी-मनी कुल-खनदानक लाजो होइ छन्हि मुदा घरवाली जे छथिन से तँ भगवाने देल छथिन।''

सिंहेश्वरी- ''जखन अपने नीक छथि तखन हुनका घरवालीसँ कोन मतलब छन्हि?''

देवकान्त- ''मतलब पुछै छी। की कहब, बजितो लाज होइए जे एके परिवारक छी तखन एना किअए बजै छी। मुदा नहियो बाजब सेहो तँ गलतिये हएत। अपने जे भाय सहाएब छथि से मरदे-ने-मौगिये, बलिगोबना छथि। जहाँ किछु बाजए लगताह आ पत्नीक आँखिपर नजरि पड़तनि आकि बोलिये बदलि जाइ छन्हि।''

~

एकोटा ने

पुरमपुर गाममे पुरन कक्काक परिवारकेँ गौआँ आ अनगौआँ पुनचन परिवारसँ जनैत छन्हि। ओना अस्सी बर्खक अवस्थामे कहियो पुरन काका कनमा-कनइ नै पढ़लनि मुदा कनमा-कनइ दुनूक किरदानी देखि-देखि सदिखन क्षुब्ध रहै छथि। गरे ने बैसै छन्हि जे जे वस्तु तरजूपर रखि बटिखाड़ासँ तौलल जाएत, ओ जँ बँटैत-खोंटैत, पौआ-कनमा होइत रत्ती-माशामे चलि जाएत तँ चलि जाएत, मुदा दुनियाँक एते नमहर धरती केना बँटाएत-खोंटाएत कनमा-कनइ-फनै दिसि पहुँचि जाइए। बादलक किरदानी की पतालक पानि सोखि लेत? जँ सोखए चाहत तँ राखत कतए? हवा-बिहाड़ि केत्तेकाल अँटका कऽ रखि सकैए। खैर जे होउ मुदा पुरन काका करैला लत्तीक मचान जकाँ अपना परिवारकेँ बनौने छथि। जहिना सक्कत-कड़गर बीआ धरती धारण करिते, दीयाक तेल-बत्ती जकाँ अपन तिल-तिल अर्पित करए लगैत अछि तहिना ने करैलोक बीआ केने अछि। वएह अंकुर ने धरती धारण करैत ऊपर आबि लत्ती बनि लतड़ए लगल। भलहिं पातर-छीतर कड़चीक आलम संग मचानपर किअए ने पहुँचल हुअए। तँए कि ओ अपन शरीरक रच्छा करैत मुँह बँचबैत नै पहुँचल? जरूर पहुँचल अछि।

पुरन काकाक परिवारोक सभ तेहने छन्हि जे अपनामे जे घंघौज होन्हि मुदा काका लग पहुँचते मन सकदम भऽ जाइत छन्हि, किअए तँ सभ बुझैत जे अगिआएलमे हँसियो ही-ही-आ कऽ धड़ैत छै। तँए जहिना रस्तापर ऐँठैत-जुठैत चलैत साँप बोहरिमे प्रवेश करिते सोझ भऽ जाइत तहिना काकाक सोझमे परिवारक सदस्य। ओना, बिनु पएरक चलैबला साँप माटिपर चलि केना सकैए। मन-चित्त मारि पुरनो काका राति-दिन परिवारेक पाछू लगल रहै छथि। अखनो मनमे ओहिना ओ बात तड़गर बनल छन्हि जे वीर भोग्या बसुंधरा। जे ऐ धरतीसँ प्रेम करत ओकरे प्रेमी बनि धरतियो चुम्मा लेत। कखनो माए बनि, कखनो भाए-बहिन बनि।

चेतनसँ बालबोध धरिक परिवार पुरन काकाक छन्हि। तालो मेल अजीव छन्हि। चेतन सभ पुरन काकाकेँ गार्जन बूझि अपन छुट्टी नेने रहैए तँ बालो-बोध सभ अपन बाबा बूझि अपने सभ किछु बुझैए। परिवारक सभसँ छोट बच्चा चारि सालक छन्हि। तालो-मेल नीक छन्हि। अंगनाक सभ समाचारक समदिया रहितो संवाद-बाहकक काज करिते छन्हि। एहेन चेला

भेटबो मोसकिल। मुदा से तँ छन्हिये। नवका दोसितियारे तँए बेसीकाल एकठाम रहने चाहो-बिस्कुट संगे करै छथि। काका खुशी जे अपन बात पहिने उसारि, भरि दिन गप सुनैले तैयार रहैए। आ पोता दीनमा खुशी जे आँखि-कान तँ तखने काजक बनत जखन ओकरासँ काज कराएब। नइ तँ गमे-गमे गेड़ी बनि जाएत। मुदा से कहाँ होइ, एक काने सुनै आ दोसर काने उड़ि जाए। उड़ैत-उड़ैत सुतली रातिमे सभ उड़ि जाए।

वसन्तक आगमन भऽ गेल। किछु दिन पूर्ब जे जाड़सँ जड़िआएल छल, पालासँ पलाएल छल ओ फुड़फुड़ा कऽ उठल। सुखाएल-सड़ल लत्ती आ कुमही जकाँ पबिते वसन्ती हवामे उड़ए लगल। मुदा तैयो बेदरंग भेल धरती, घर-आंगन जकाँ बाहरै-सोहरै ले इशारा दिअए लगल। रसे-रसे रस भरल हवाक रमकी रमकए लगल। जहिना सेवा निवृत्तिक समए कोनो अफसरकेँ स्वर्ग सुझैत तँ कोनोक आगूमे नांगट नर्कक नाच होइत अछि, तहिना शिशिर -सिरसिराइत समए- वसन्तक बीच होइत। मुदा से बात पुरन काकाक परिवारमे नै छन्हि। कोल्हुक बड़द जकाँ सभ परिवारक अपने-अपने नाचक पाछू लागल रहैत छन्हि।

दिन उगिते दीनमा, बाइस खा जत्ताक -माटिक बनाओल- दुनू पट्टा दुनू हाथमे नेने दरबज्जाक आगूमे बैसि, रस्ताक धूरा-गरदाकेँ जत्तामे पीसए लगल। बिनु देखनौं आशा बनले रहै जे बाबा दरबज्जेमे छथि। सुतल छथि कि जागल, तइसँ कोन मतलब दीनमाकेँ। ओ तँ अपन काजमे बेहाल। मनमे रहबे करै जे चाहक बेर भऽ गेल अछि माए चाह आनि देबे करतनि, हमहूँ पीबे करब। परिवारक बोझसँ दबल थोड़े रहै जे नून नै अछि तँ केसक तारीखपर जाए पड़त। जहिना तत्ववेत्ता तत्वचिन्तनमे रमल रहैत तहिना दीनमा अपन काजमे हराएल। कोन मतलब ओकरा रहै जे बुझैत, काजक हराएल अधखड़ुआ रहि जाइए।

माइक हाथक चाह देखिते दीनमा, जत्ता छोड़ि आगूए आगू दरबज्जाक ऊपर चढ़ल। दीनमापर नजरि पड़िते पुरन काका मुस्की दैत कहलखिन-
“की दीनबाबू, चाहो-ताहक बेर भेलैए आकि नै?”
तहि बीच चाह नेने पुतोहु पहुँच गेलनि। दीनमाक नजरि देबालमे टँगल हनुमान जीक छातीक रामपर पहुँचि गेल। देबालमे सटल फोटो देखि दीनमा बाजल-
“बाबा, उ फोटो उतारि दिअ।”

दीनमाक बात सुनि पोल्हबैत पुरन काका कहलखिन-
"बौआ, पहिने चाह पीब लिअ, पछाति ई सभ हेतइ?"
जेना बुझले रहै तहिना दीनमा बाजल-
"पहिने अहाँ पीब ने लिअ, पाछू हम पीब।"
बहाना पकड़ाइत देखि पुरन काका कहलखिन-
"हमरा हाथमे गिलास अछि केना उतारल हएत?"
चाह पीब, खिड़कीपर राखल खुरपी उतारि पुरन काका बाड़ी-झाड़ी दिसि विदा होइक विचार केलनि। हाथसँ खुरपी छिनैत दीनमा आगू-आगू विदा भेल।

दाड़िमक बाड़ी पहुँचि काका हिया-हिया हियबए लगलाह। गाछक जड़िमे पानिक अभाव बूझि पड़लनि। मुदा गाछक डगडगी आ फूलसँ लदल गाछ देखि मन ललिया गेलनि। लाल-लाल फूलसँ लदल गाछ। सभ डारिमे फूल लागल। खुरपी नेने दीनमा खाधि खुनैक जगह हियबैत। हिया-हिया फूलकेँ देखैत हरिआएल-हरिआएल फड़ो देखलनि। मन भेलनि जे जतबे-ततबे जड़ि सबहक खढ़ उखाड़ि दिऐ। मुदा नजरि दाड़िमक काँटपर गेलनि। डारिये काँट भऽ जाइए। ऊपर-निच्चा सगतरि काँट। जखने अपने खढ़ उखाड़ए लगब तखने इहो -दीनमो- किछु-ने-किछु करए लगत। तहूमे खुरपी हाथेमे छै। तेहेन झाड़ी अछि जे सुगबा साँप जकाँ माथमे गड़तै कि गरदनिमे तेकर कोन ठेकान। जखने काँट गड़तै कि कानब शुरू करत। जखने कानत तखने ओकरा चुप करब आकि गाछक जड़िक खढ़ उखाड़ब। समझौता करैत काज मनमे एलनि। काज ई जे फड़क गिनती कऽ ली। दीनमा हाथक खुरपी आड़िपर रखि, कोरामे उठा काका कहलखिन-
"बौआ, अहाँकेँ नेने हम टहलब आ अहाँ फड़ गनब।"
नव फड़क गिनतीक काज देखि दीनमाक मन खुशीसँ आरो खुशिया गेल। मुदा कट्ठा भरि झाड़ीक बगानमे पचासोसँ ऊपर गाछक फड़ केना गनि लेब। तहूमे बीसे तक गनल होइए। गाछक सभ फड़ अपने हिया-हिया देखथि, जे फड़क बीच कीड़ोक असर भेलहेँ आकि नै। अपने तँ एक्केटा गाछक फड़ देखि अन्दाजि लेलनि जे कते हएत? जहिना गोल-गोल, किछु नमती नेने लाल-लाल फूल हरिअर होइत अपन जिनगीक फल पकड़ि रहल अछि, तहिना तँ गोटि-पङरा कडुआएल आमक आकार सेहो पकड़ि रहल अछि। एकसँ दोसर गाछक फड़ गनैमे दीनमा बेर-बेर बिसरि जाए। कखनो गिनतिये छूटि जाइ तँ कखनो अंके बिसरि जाए। कखनो बीससँ ऊपर नै बढ़ल। अंतमे काका पुछलखिन-

“बौआ, कते फड़ भेलह?”
बाबाक प्रश्न सुनि दीनमाक मुँहसँ निकलि गेल-
“दसटा।”
“अच्छा बड़बढ़िया। आब एतए आबि के खेलिहह। ओगरबाहियो भऽ जेतह आ खेलबो करबह।”

नीक फसल भेलनि। खेबा जोगर फल हुअए लगल। फड़ फल बनि गेल। ओना सजमनि फड़क-फड़े रहि जाइत। मुदा दाड़िम, आम, लताम इत्यादि फड़सँ फल बनि जाइत अछि। अंतिम अवस्था अबैत-अबैत तूबि-तूबि फल अपने खसए लगल।

गाछक सभ फल समाप्त भऽ गेल। जहिना परसौती जनानाकेँ देख-भालक जरूरति पड़ैत तहिना ने बाड़ियो-झाड़ीक अछि। ई सोचि पुरन काका दीनमाक संगे दाड़िमक गाछ लग पहुँचलाह। जे कहियो फड़ फूलसँ लदल छल ओ सून-सून भेल, अपन बेथा सुना रहल अछि। व्यथित मने दीनमाकेँ पुछलखिन-
“बौआ, कते फड़ अछि?”
विचलित होइत दीनमा बाजल-
“एकोटा ने।”
“ऐ लेल विचलित किअए होइ छी। जहिना समए आएल छलइ तहिना फेनो औतै।”
“केना औतै?”
“समए अनुसार एकर ताक-हेरि करबै तँ एबे करतै।”

~

धोतीक मान

जहिना तेहैया बोखार तरे-तर अबितो रहैत आ जेबो करैत रहैत तहिना लाल काकाकेँ तीन दिनसँ विचित्र सोग गहि कऽ पकड़ि लेलकनि। ओना जखन कोनो काजक अन्मेनामे लगि जाइ छथि तखन छोड़ियो दैत छन्हि। मुदा काज बदलिते पुन: आबि जाइ छन्हि। मुदा कहबो केकरा करथिन, घरेलू सोग छियनि। सोगो तेहेन जे जहिना तिआरि जालमे माछ फँसि जाइत। ने बंशी जकाँ जे बोरक सुगंधसँ फँसि जान गमबैत आ ने सहतक ठनका जकाँ। मुदा तैयो तँ घाउ लगले छन्हि।

सोगक दोसरो कारण छन्हि। ओ ई छन्हि जे दुनू परानी -पति-पत्नी- क बीच कहियो वैचारिक संघर्ष, रक्का-टोकी नै होइत छलन्हि, जो सद्य: सोझामे देखि पड़ैत छन्हि।

बात किछु ने बुढ़िया फूसि मुदा सोग तेहेन जे रोगौने टा नै, सोगौने छन्हि। जइसँ कोनो काज करैमे मने ने लगए दैत छन्हि।

तीन दिन पहिने जखन सढ़ूआरएसँ भरपूरा न्योंत एलनि तखनेसँ सोगक आक्रमण भेलनि जे धेनहि छन्हि। ने छोड़ैत बनै छन्हि आ ने पूरैत। साधारण जिनगी जीबैक अभ्यास तँए पाइ-पाइक हिसाब जोड़ि समुचित काज करैत चैनसँ चलैत छन्हि। गति अनुकूल आमद-खर्च रहने भातक उजड़ा ऑकर जकाँ दाँत तर खटखटाइत रहनि। ऑकर संग भातो फेकए पड़तनि। नजरि उठा कऽ देखथि तँ सोझेमे देखि पड़नि जे भारमे धोतीक खर्च वाह्ययात अछि, किएक तँ धोतीक मान तँ ओइ समए सर्व सम्मति छल जखन एकाधिकार बेपार जकाँ छल, मुदा जइठाम दू सए रूपैयाक धोती लऽ जाएब, तइठाम कियो पहीरिनिहार नै अछि, मांगलिक काज छोड़ि धोती म्यूजियमक वस्तु बनि गेल अछि। अपन तँ दू दिनक कमाइ दहा जाएत। मुदा पत्नी तँ मानती नै। अपना सीमामे सभ बताह होइए, भलहिं आन सीमामे नाङरि पटपटबए आकि दाँत चिआरए। मानबो उचित नहिये। किअए तँ पत्नीक मान तँ परिवारमे दादीक छन्हि। बाबा-दादाक पकिया संगी। शुभ काजक शुरूहेमे खट-पट भेने कहीं अंत धरि ने खटपटाइत रहि जाए, तेकर डरो रहनि। विचारि लेब जरूरी बूझि लाल काकीकेँ पुछलन्हि-

“काल्हिये ने न्योंत पूरए जाएब। आइये ने सभ ओरियान-बात कऽ लेब।”

लाल काकी- “घरक ओरियान ने हम करब, आकि हाटो-बजारक करब।”

लाल काकीक चढ़ल तर्क देखि लाल काका दोहरौलखिन-

“बजारक काज की सभ अछि।”

“आर किछु ने अछि। खाली जोड़ भरि धोती आ अंगा आ गमछा कीन लेब।”

लाल काकी आढ़ति सुनि लाल काका मने-मन जोड़थि तँ देखि पड़नि जे कियो धोती पहीरिनिहारे परिवारमे नै अछि, जखन धोती नै तखन कुर्ता आ गमछा तँ सूखल नून-चूड़ा भेल। कतबो हएत तँ जलखैइये। मुदा बेवस भेल। तैयो पुछलखिन-

“आब कि कोनो भार-दौर चलै छै जे ई सभ लऽ जाएब?”

लाल काकाकेँ चिलहोरि जकाँ झपटैत लाल काकी कहलखिन-

“चाउर दहीक बदला रूपैया लऽ जाएब मुदा नव वस्त्र नै लऽ जाएब से केहेन हएत?”

कहैत नोर ढवढबा गेलनि। फटैत छातीक दर्द बाँसक झाँझन जकाँ झनझनाए लगली-

“बहिन मरमा मरिये गेल, मुदा अंतमे मुँह नै देखि पेलौं। भगवानो तेहेन जे सभटा दुख ओकरे घरमे देलखिन। चढ़ल जुआनी दुनू परानी मरल, ढाइ बर्खक मइटुग्गर-बपटुग्गर बेटाक बिआह छिऐ, तेकरा पाँच हाथ वस्त्र हम नै देबइ, तँ दुनियाँमे के देतइ।”

~

साझी

गामक पहिल घटना तँए गाममे विचित्र हलचल भोरेसँ उठि गेल। उठबो केना ने करैत, अखन धरि तँ इतिहासो यएह कहलक आ समाजो सएह। मुदा घटना बदलने इतिहासक रस्तो बदलि जाइ छै आ वहिला समाज सेहो वाह पकड़ै छै। विचित्र हलचलक कारण भेल विचित्र घटना। विचित्रक कारण भेल चित्र-विचित्र बनि गेल। तँए गामक सबहक मनकेँ कुचित्र-सुचित्र बनबए लगल। जते जेकर रंग-गाढ तेहेन तेकर चित्र गढ़गर। तँए एक रंगाह नै भेने आरो बेसी हलचल। मनक प्रेम तँ तखन ने बढ़ै छै जखन अनुकूल प्रेमी भेटै छै। प्रेमियो कि कोनो एक्के रंगक होइए जे ओहीपर नजरि पड़तै आ नजरि पड़िते धारक पानि जकाँ मोटाए लगतै। जँ से नै हेतै तँ जेहो छै तइमे सँ किछु रौदमे उड़तै, किछु धरती पीतै आ किछु लोको घटौतै। जहिना बिलंबसँ चलैवाली गाड़ी टीशने-टीशन विलमैते चलै छै, भलहिं कुमेल भेने रस्ता-बाटमे छोड़ि आन-आन दौड़ैत चलैए। ओना गामक विचित्र घटना देखि सबहक मन उड़ैत मुदा जिनगीक काज पकड़ि-पकड़ि हटबैत गेल। कतबो हटल तैयो तँ बाकिये रहि गेल। सोलहन्नी नहिये हटल। नहिये हटल तँ कि हेतै? आधासँ बेसी तँ रहिये गेल, तँए बहुमते सँ ने समाज देश सभ चलै छै। तखन गामेमे कोन उनटन भऽ गेलै जे गाम-समाज नै चलतै। लेकिन गामो तँ सोलहन्नी नहिये मरि गेल जे कियो नामो लइबला नै रहतै। से तँ अछिये। सेहो तेहेन अछि जे हजार कानकेँ एक्के बेर भरि देत। जहिना पूजा करब काज छी तइसँ कि हल्लुक काज फूल तोड़ब छी। जखन नै छी तखन किअए दुनू दू रंग हेतइ।

चौबट्टी परक इनारक चलती सभसँ बेसी भऽ गेल। नवकी पनिभरनी सभ थैर-गोबर छोड़ि-छोड़ि पहिने पानिये भरए इनारपर पहुँचि गेल। मुदा तँए कि पुनियो दादी आ घुरनियो दीदी ओहने अगुताएल जे पहिने पानिये भरए पहुँचती। एक तँ बेटा-पुतोहुकेँ डाकनि देतीह जे ऐसँ निपुत्रे नीक। ने तँ ऐ चौथापनमे अपने घैल उठाबी। तहूमे नवका आगि गाममे पजड़ल। माघमे अनको धधगड़ घूर भेटए तँ ओकरा छोड़ि देब बेवकुफिये छी, भलहिं अपनो धिया-पुता किअए ने घरमे कठुआए। ओना दुनू गोटेक घर इनारसँ बहुत हटल नै मुदा लग-दूर कोन बात भेल? लगोक बाटमे दसटा गप करैबला भेटल तँ बेसिये समए लागत आ नहिये भेटने दूरो लग भऽ जाइ छै। सएह दुनू गोरे, पुनियो दादी आ घुरनियो दीदीकेँ भेलनि। जबाबदेहियो तँ कम नहिये छन्हि अनकर बातसँ ऊपर उठा अपन बात नै रखती तँ पुनिया दादी

आ घुरनी दीदी कथीक। तइसँ नीक तँ नवकी जे कम-सँ-कम अपनो हित-अपेछित रसगर बात बजै छथि।

संजोग तँ संजोगे छी। चाहै काज करैक संजोग हुअए आकि भोज खाइक, नीके होइ छै। भलहिं ओ चालि बदलि कुसंजोगे किअए ने भऽ जाए। पूबसँ पुनिया दादी आ दछिनसँ घुरनी दीदी पहुँचली। पुन्यिा दादी घुरनी दीदीसँ जेठ। तँ जेठक आदर करैत घुरनी दीदी इनारपर चढ़ैसँ पहिने स्वागत करैत पुनिया दादीकेँ टूसि देलखिन-
“जहिना पावनि दिन परिवार हड़बड़ा जाइत तहिना दादीकेँ देखै छिअनि?”
अपन स्वागत देखि पुनिया दादीक मन खुशीसँ खुशिया गेलनि। टुटल दाँतक मुँहसँ मुस्की दिअए लगलखिन। अखन धरि पुनिया दादीकेँ धेनहि जे गामक बात हमरा छोड़ि दोसर बुझबे ने करैए। भलहिं सात पुतोहु हाथे मारि-गारि किअए ने खाथि होथि। पहिने तँ आँखि उठा इनार दिसि तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे जिज्ञासु बेसी अछि। घुरनी दीदी दिस देखैत बजली-
“गै घुरनी, कहुना भेलँ ते बेटिये भेलँ, आइ-काल्हिक नव-नौतुक हमर-तोहर बात सुनतौ। देह देखि सभ अपने-मोटाएल अछि। मुदा तोरा नै कहबो से केहेन हएत?”
जिज्ञासा भरैत घुरनी दीदी मलसारि दैत बाजलि-
“कोनो तेहेन गप छन्हि दादी।”
पुनियाकेँ सभ दादी कहैत आ घुरनीकेँ दीदी। ओना उमेरो हिसाबसँ उचिते छलैक। मुदा दुनू गामक पुतोहुए बनि गाम आएल रहथि। दीदीक आदरसँ दादी आरो अह्लादित होइत। जहिना संज्ञाक संग सर्वनाम, विशेषण आदि सभ अगुआ-पछुआ बनि रथकेँ खिंचैत तहिना दादीक मनमे सेहो उठलनि। सोझे बजैसँ नीक बूझि पड़लनि जे अलंकार-छन्द बनबे किअए कएल जखन ओकर बेवहारे नै हेतै। अलंकार शैलीमे गामक चौहद्दी बान्हि बाजए लगलीह-
“एहेन अतहतह ते एक गामक के कहए जे परोपट्टामे कतौ ने देखै छी, जे.......।”
दादीकेँ विह्वल होइत दीदीक जिज्ञासा तेज भेलनि। लपकि कऽ पुछलखिन-
“से की, से की दादी?”
जहिना, आमक गाछक डारि-गाछ पाकल आम देखि झमाड़ि-झमाड़ि डोला पाकल आम खसबए चाहैत, मुदा डोलौन्हिार ई नै बूझि पबैत जे पाकले खसत आ काँच नै खसत। हँ एहनो होइ छै जे बेसी पाकलक डंटीक रस सूखने असानीसँ खसैत मुदा जे डमहा पाकल छै ओ तँ ओहिना छै जहिना

डमहा काँच होइ छै। तहिना दादीक मन छगुन्तासँ छनकैत जे एहेन तँ कतौ ने भेल से गाममे केना हएत? मुदा भऽ तँ गेल।

भेल ई जे ज्ञानचन काकाकेँ तीन बेटा आ दू बेटी छन्हि। तीनू बेटा पढ़ि-लिखि कऽ आने जकाँ नोकरी करए गाम छोड़ि देलनि। भीन भऽ गेलखिन कि साझियेमे से नै कहि। मुदा ज्ञानचन काकाकेँ एको पाइ मदति नै केलखिन। ओना तीनू भाँइ उपरा-उपरी पढ़लो-लिखल आ नीक नोकरियोमे। पहिल बेटी डॉक्टर पतिक संग सेहो बाहरे रहै छथिन। छोट बेटी वैधव्य भऽ गेलखिन। असमए बेटीकेँ विधवा भेने ज्ञानचन काकाकेँ जबरदस धक्का मनमे लगलनि। अपनोसँ बेसी काकीकेँ लगलनि। एहेन कोन माइक छाती हएत जे अपने सुहागिन आ बेटीकेँ वैधव्य देखए चाहत। मुदा उपाइये की? दुखक तँ सभसँ पैघ दवाइ नोर छी। जते नोर झड़त तते भारी दुख मेटाएत।

जहिना रहीक संग मक्खन, छाहली मोहि आगिपर लोहियामे चढ़ा घी बड़कौल जाइत से दादीकेँ बड़कौले ने होन्हि तँए क्षुब्ध रहथि। बजलीह-

“आब तँ अपनो उमेर ढेरी भेल तइपर नाना जनम एहेन काज नै देखने छलौं से गाममे देखै छी।”

दादीक बात सुनिन्हिारकेँ आरो जिज्ञासा बढ़ा देलकनि। एक्के-दुइये सभ पनिभरनी एक्के बरे दादीपर जोर देलकनि। थकथकाइत दादी बजए लगलीह-

“ज्ञानचनक तीनू बेटा रूपचन, गुनचन विचारचनकेँ जखन नोकरी छुटलनि तखन गाम आबि साझी भऽ गेलखिन।”

दादीक उत्तरसँ संतुष्ट नै भऽ दादीक जबाबसँ दीदीकेँ संतोष नै भेलनि। पूरब प्रश्न केलखिन-

“तइसँ पहिने भीन भेल छेलखिन?”

दीदीक प्रश्नसँ दादीकेँ क्रोध उठलनि बजलीह-

“जेना लोक केबाड़ चौकी काटि-काटि बॅटबारा करैए तेना होइतै, तखन तँ बुझितहक। आकि मनुखकेँ इशारा होइ छै। मझिला बेटा अपन बेटीक बिआहमे चालीस लाख रूपैया खर्च केलकै, मुदा छोटका भाएकेँ पाइ नै देलकै तँ नून-तेल लगा केलक। कि यएह सझिया भैयारी छिऐ।”

दीदी- “तखन तँ कमाइयो ने सबहक सभ रंग हेतै। ओ केना मिलाओत।”

दादी- “सएह ने देखहक। जेकरे बेसी दै सएह पहिने कहलकै जे हमरा एत्ते अछि। सभ मिला कऽ परिवार चलौ।”

~

सतभैंया पोखरि

पोखरि कहिया खुनौल गेल, के खुनौलनि? मिथिलांचलक इतिहासे जकाँ अखन धरि हराएले अछि मुदा एते गामक सभ मानैत अछि जे पोखरिक बतारी ने एकोटा गाछ-बिरीछ अछि आ ने आन कोनो। ओना पोखरि नमहर रहने रंग-बिरंगक किस्सा-पहानी अछिये। कियो दैंतक खुनौल कहैत अछि तँ कियो राजा-रजवारक। मुदा जे होउ, हजार बर्खसँ ऊपरक पोखरि जरूर अछि जे सभ मानैत अछि। शुरूमे पोखरिक महार वा अग्नेय जेहेन रहल हुअए मुदा अखन महारो झड़ि-झुड़ि गेल अछि आ पोखरिक पेटो गदियाह भऽ गेल अछि। गाममे एकेटा पोखरि मुदा एहेन अछि जे एते सघन गाम रहितो पोखरिक अभाव गौआँकेँ नै हुअए दैत अछि। चाकर-चौड़गर पेट अखनो अछिये। मुनहर जकाँ दर्जनो ठेक-बखारी सदृश तँ अछिये।

गाममे सभसँ पुरानो आ झमटगरो परिवार मात्र सतभैंयाकेँ रहलनि। पोखरियो हुनके सबहक छियनि। केना भेलनि से तँ नीक जकाँ किनको नै बूझल छन्हि मुदा जहियासँ देखै छी तहियासँ हुनके सबहक कब्जामे रहलनि अछि। ओना पोखरि तँ गामे-गाम अछि मुदा आन गामक पोखरिसँ अलग पहिचान अखनो अछिये। ने एते नमहर कोनो गामक पोखरि अछि आ ने एना चारू महार घाट अछि। एक घाट रहने पारो नै लगैत जेना आन-आन गामक पोखरिमे अछि। आन गामक पोखरिमे बड़ बेसी अछि तँ एकटा दूटा घाट अछि। एकटा मरद लेल आ दोसर जनाना हेतु। तहूमे रंग-बिरंगक बेवहार बनल अछि। जइक चलैत जँ कहियो गाममे आगि-छाइ लगैए तँ गामे सुन भऽ जाइए, मुदा एकोटा पोखरि आइ धरिक इतिहासमे कहियो ऐ गाममे नै भेल अछि। ओना गामक बनाबटि आन गामसँ भिन्न अछि। कते गाम पूबे-पछिमे सूर्यमंडल गढ़निक बनल अछि जइसँ पूर्बा-पछबाक झोंकमे, आगि लगने धुआ-पोछा जाइए।

बिनु जाठिक पोखरि रहने, अनगौआँ तँ पोखरि मानबे ने करैत मुदा पोखरिक सभ काज पूर्ति होइत, तँए गौआँ लेल धैन-सन। कियो अनगौआँक गपपर धियानो ने दैत। सभ यएह मानि चलैत जे कियो अपन मुँह दुइर करैए। नीककेँ अधला कहने थोड़े अधला भऽ जाएत आ अधलाकेँ नीक कहने थोड़े नीक भऽ जाएत जँ एहेन बजनिहार अछि तँ ओ अपन मुँह दुइर करैए। सभकेँ अपन-अपन गुण-धर्म होइ छै से तँ अछिये। चारू महार घाट

रहने सबहक काजो चलिते अछि। तहूमे आन गाम जकाँ कोनो रोक-राक अछिये नै जे ई घाट पुरुखक छिऐ तँ ई घाट जनानाक। ई फल्लांक खुनौल छियनि तँए दोसरकेँ नहा देथिन आकि नै, ई हुनकर मन-मरजी छियनि। कियो जाठि गाड़ि पोखरिक पहिचान बनौने छथि तँ छथि। पोखरिक पहिचान भलहिं जाठि होउ मुदा झील-सरोवर धारमे जाठि कहाँ रहैए। तँए कि ओकरा कुमार कहि कात कऽ देबै। आम खेनिहारकेँ आम चाही आकि गाछ आ गाछी गनत। हँ, ई बात जरूर जे आमक गाछ केना होइ छै, केना लगौल जाइ छै, केना ओकर सेवा कएल जाइ छै एकर जानकारी जरूर रहक चाही। जइ जाठि लऽ लऽ अनगौआँ नचै छथि ओ तँ ईहो कहता ने जे जाठिक काज की होइ छै। जँ बीच पोखरिक पानिक नाप मानल जाए तँ जइ पोखरिक किनछड़ियेमे उपयोग करै जोकर -नहाइ-धोइ-क पानि रहत ओकर बीचक नाप नपैक जरूरते की रहत। ओहन पोखरिक मानिये कते हएत जे एकटा घाट जे भलहिं सिमटिये-ईटाक किअए ने होउ, बना बाकी भागमे मोथी रोपि खेत बना लेब। जँ कहीं आगि लागत तँ छूत-अछूत कहि गामे जरा देब, मुदा आगि लगबे ने करै से ने सोचब आ करब। जनियेँ कऽ पोखरिकेँ अघट बना दुइर कऽ लेब, नहाइ-धोइ जोकर नै रहए देब तँ ओइमे दोख केकर? खएर जे होउ मुदा चारू महार घाटो आ बिनु जाठिक पोखरि तँ अछिये।

शुरूहेसँ गामक सतभैंया परिवार जोतल-चौकिऔल खेत जकाँ समतल रहल अछि। बीच-बीचमे बाढ़ि-भुमकममे थोड़-बहुत ऊवर-खावर बनबो कएल तँ ओकरा पुन: सरिया समतल बना लेल गेल। मुदा भविष्य दिस नै देखि, भूते दिस देखने तँ भूत लगबे करै छै। मुदा तेकरो भगबैक तँ उपाए होइते अछि। बाबेक अमलदारीसँ सतभैंया अपन परिवारक पहिचान परोपट्टामे बनौने रहल अछि। ओना सात भाँइक भैयारीमे तीन भाँइक परिवार नावल्द भऽ गेलनि जइसँ अगिला पीढ़ी अबैत-अबैत सातसँ चारि भैयारी रहि गेल। सात भाँइसँ सतरह हेबाक चाहै छल से नै भऽ चारिपर उतरि गेल तेकर कारण भेल जे एक भाँइ बेटीक बाढ़िमे दहा गेलाह। ढेनुआर नक्षत्र जकाँ बेटीक आगमन जोड़ा-पल्ला जे आबए लगलनि से ठीके सातसँ सतरह तँ नै मुदा एकसँ एगारह जरूर भऽ गेलनि। मुदा एकसँ एगारह होइतो हुनकर मुँह कहियो मलीन नै भेलनि। मनक विश्वास अंत धरि बनले रहि गेलनि जे प्रकृतिकेँ अपन गति छै, ओ अपन निअम-निष्ठासँ चलैत अछि। से नै तँ एक कम्पनीक वस्तु एक रंग होइ छै मुदा तइमे ओहन मेल-पाँच केना भऽ जाइ छै जे मेल-पाँच भेलोपर चारि-पाँच वा पाँच-छहसँ आगू-पाछू नै होइत

अछि। भऽ तँ ईहो सकैत छल जे एक रंगाहे होइत वा एकसँ पाँचो होइत वा आरो अन्तर भऽ सकैत छल। मुदा से कहाँ होइए। जहिना एकसँ सय धरि गनू आ सएसँ एक दिस गनू पचास तँ बीचेमे रहत। तँए बेटा-बेटीक बाढ़ि आबौ कि रौदी होउ, मुदा अपन व्यासक अनुकूले रहैत आएल अछि आ रहबो करत।

दोसर भाए जे बच्चेमे कुभेला भेलासँ गाम छोड़ि परदेश गेलाह। से पुन: घूमि कऽ नहिये एलाह। बाल-बोधकेँ सेवाक जरूरति होइ छै, होइत एलैए आ सभ दिन होइत रहतै। मुदा जखन वएह बाल-बोध चेतन भऽ जाइ छथि तखन हुनक विवेक कि कहै छन्हि से तँ आनक-आन नै बूझि सकत। ओ अपने अपन कर्तव्यकेँ निर्धारित कऽ जीवन-पथपर चलताह। खैर जखन धड़तिये भूमि छी तँ जतए बास करब ओकरे मातृभूमि बना लेब। तहूमे ओइ बच्चाक तँ अधिकार बनिये जाइए जेकर जन्म जतए बनि गेल हुअए। मुदा प्रश्न तँ अहूसँ आगू अछि। जँ धरती स्वर्ग वा वैकुण्ठ बनए चाहए तखन अपनामे बँटि कऽ बनत आकि सम्मलित भऽ कऽ। जँ से नै तँ हम कतए छी, ई तँ देखए पड़त। मुदा मिथिलांचलोक भूमि तँ वएह भूमि छी जे सभ दिन प्रकृति प्रदत्त रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत। जँ से नै तँ कहाँ अरब-करोड़पर लटकल वा करोड़ लाखपर। सभ दिन जहिना रहल तहिना अखनो अछि। भलहिं कतौसँ हमहूँ कहिऐ जे छीहे।

तेसर भाइक परिवार ऐ लेल आगू नै बढ़लनि जे शरीरसँ निरोग रहितो मन सनक बच्चेसँ भऽ गेलखिन। जइसँ ने बिआह केलनि आ ने कोनो भाइक बात-विचारमे कहियो रहलनि। तहिना बाँकी भाय मिलि घरक मोजरे समाप्त कऽ देलकनि। मुदा तइले हुनको मनमे कहियो दुखो नहिये जन्म लेलकनि। जखन भाय सभ लगमे बैसथि तँ गरजि-गरजि बजथि जे मने सभ किछु छी। जे मनक मालिक ओ सबहक मालिक। मुदा भाइयो सभ बिना किछु टोकारा देने चुपे-चाप सुनि लैत जे अनेरे टोकने आरो बरदिआएब। से नै तँ एक झोंक बाजि नारद जकाँ वीणा हाथमे लेताह आ जेमहर मन हेतनि तेमहर विदा हेताह। असगरूआ परिवारमे एककेँ बौड़ने परिवारेक उसरन होइए मुदा गन्गुआरि जकाँ एकटा टाँग टुटनहि कि हएत। एक तँ परिवार, टोल, समाज गढ़ि लइए। हम सभ तँ कहुना तैयो चारि भाँइ बँचल रहबे करब। बॉझी लगने डारि फड़ै नै छै मुदा तँए ओ गाछसँ हटल रहैत एहेन तँ नै होएत।

पिताक अमलदारीमे चाकर-चौड़गर, चौघारा घरक आंगन हथिसार सन दरबज्जा, चन्द्रकूप सदृश इनार सरोवर सदृश बिनु जाठिक पोखरिक बीच जिनगियो संयमित तँए हर-हर खट-खटक प्रश्ने किअए उठत। ओना सातो भाँइक सातो काज सात रंगक। जिनगीक लेल सातो उपयोगी मुदा गुण, बेवहार आ उपयोगक हिसाबसँ छोट-पैघ। हर-हर खट-खट नै होइक कारण एकटा दोसरो छल जे अपन-अपन बुधिक उपयोग कऽ स्वतंत्र रूपसँ अपन-अपन काज सम्हारैत छलाह। एक काजमे ने करैक बखेरा ठाढ़ होइत जे एना-हेतइ, एना नै हेतइ। मुदा एक विचारमे तँ से नै होएत। समटल बिछानक सुख जेहेन सुतिनिहारकेँ होएत, तहिना ने समटल परिवारोकेँ होएत। छोट ओसार रहत आ बच्चा बेसी रहत तँ ओंघरा-ओंघरा खसबे करत। खाइ काल भिन्ने छिपली-बाटी फुटत जहिना वस्तु व्यापारक सहायक छी तहिना व्यापार उपयोगक। जइ वस्तुक जते उपयोग जिनगीक लेल होएत ओ व्यापार ओते चतड़ैत अछि। मुदा प्रश्न अछि जँ सभ फूल फूले छी तँ देवताक बीच बटाएल किअए अछि? जँ देवताक परसाद परसादे छी तखन महादेव किअए बाॅतर।

अखन धरि सतभैंया परिवारमे घराड़ीसँ लऽ कऽ बाध धरिक जमीनमे दुइये बेर बटबारा भेल छलनि जे खूटे-खूट भेल छलनि मुदा ऐबेर रूप बदलि गेलनि। भीतरिया गुमराहटि आबि गेल छलनि। मुदा खुलि कऽ आगू भऽ बजैले कियो डेग आगू नै बढ़बए चाहैत। जहिना सूखल जरनाक बीच आगि हवा पबिते लहरि उठैए तहिना पोखरिक लहरि जकाँ उठए लगलनि। कारणो छन्हि जे कहिया कतए जे कँचका ईटापर खपड़ा घर बनौलनि सएह अखनो धरि चलि अबैत छन्हि। निच्चा जहिना मुसहनि माटि भरल तहिना अकासक तरेगन जकाँ फुटल खपड़ा लग इजोत होइत। शुद्ध किसानक घर। चाहे खेतमे रहि बरखा हुअए आकि सुतली रातिक बरखा हुअए कोनो अन्तर नै। जहिना गोनरिक दुनू भाग एक्के रंग भेने उनटा-पुनटाक प्रश्ने नै। पहिलुका चद्दरिक चारू भाग बराबरे होइत छलै आ जे बँचल अछि ओ अखनो अछिये। तहिना धोतियोक मुदा आजुक जे सिंह-मांगबला चद्दरि वा अन्य जे वस्त्र अछि ओ एक भग्गुए नै, संयुक्त परिवारक एकांकी रूप जकाँ बनि गेल अछि। जहिना जनमौटी बच्चा छोटसँ पैघ बढ़ैत सिर्फ मानवे नै महाभानवो बनैत अछि मुदा वएह मनुष्य मृत्युक पश्चात अछियामे जखन जरबए जाए लगैत अछि तँ पैघसँ छोट बनैत-बनैत लोथरा जकाँ बनि जाइत अछि तहिना ने भऽ रहल अछि। ओना खूटे-खूट बटनौं छुतकाक केश कटबैकाल सभ बराबरे भऽ जाइत छथि। बाधक जमीनमे कनी घटियो-बढ़ी

भेलनि मुदा घराड़ी आ पोखरिमे कोनो तरहक कमी-बेशी नहिये भेल छलनि। अपन-अपन उपयोगक अनुकूल रहैत आएल छथि। मुदा सतभैंया परिवारकेँ गामक लोक एके परिवार बूझि ने कियो किछु बजैत आ ने किछु पुछैत। जइसँ पूर्बा-पछबाक कोने लसरि नहिये लगल छलनि। जखन लसरिये नै तँ असरि किअए। ततबे नै ईहो बुझैत जे जहिना गाछक डारि फुटने -छिटकने- फूल-फड़ थोड़े बदलि जाइ छै। अनेरे देह रगड़ने तँ अपनो रगड़ा लगबे करै छै। मुदा से नै भेल, भऽ ई गेल जे सात भैयारीमे तीन भाँइकेँ सुखने गाछक डारि जकाँ चारिये टा रहि गेलनि। तहू चारिमे दूटा बँझिआइये गेलनि तँए फल-फूलक असे नै रहलनि। मुदा दुइयो भाँइ रहने चारि भैयारीक परिवार पसारै जोकर तँ भइये गेलनि। गड़बड़ एतबे भेल जे एक भायकेँ एक आ एक भायकेँ तीन बेटा भेलनि। एक रहितो मानवीय विचार आर्थिक विचारमे बदलिते रगड़ा-रगड़ी शुरू भेल। जखने तीन भाँइ एक दिस हएत आ दोसर दिस कियो असगरे पड़त तँ निश्चिते छह हाथ पएरक जगह दूटा हाथ-पएर झँपेबे करत। मुदा चद्दरि तँ ओइठाम ने झाँपि चारूकात अड़िअबैत जइठाम ओढ़िनिहारसँ डेढ़िया-दोबर होइत, से तँ परिवारमे भइये गेल छन्हि।

विचारवान परिवार सभ दिनसँ रहलनि जँ से नै रहलनि तँ आन-आन गाममे एहेन-एहेन परिवार मटियामेट भऽ गेल। मटियेमेट नै कते जहल भोगलक तँ कते अस्पताल, कते फाँसीपर लटकल तँ कते कपार फोड़ा मरल। मगर विचारेक चलैत ने परिवारमे ने कहियो सम्प्रादायिक आ ने जातिक हवा कनियो डोलौलकनि। समैक प्रभाव तँ सभ किछुपर पड़िते अछि से तँ परिवारोमे भेलनि। ओना जेकरा समए कहै छिऐ -दिन-राति- ओइमे ओते बदलाव कहाँ आएल, किएक तँ अखनो बारहो मास आ छबो ऋृतु होइते अछि। अपन-अपन गुण-धर्म तँ सभ बचौने अछि। मुदा एकटा गड़बड़ तँ परिवारमे भइये गेलनि। ओ ई जे एक भाइक बेटा श्याम, भैयारीमे असगरे छथिन। असगर भेनाइ तँ बड़ पैघ बात नहिये भेल मुदा पिताक भैयारीमे छोट भाइक बेटा रहने किछु गड़बड़क संभावना तँ जनमिये गेलनि।

बाबाक अमलदारीमे सातो भाँइक बीच बटबारा भेलनि मुदा ओ पुन: समटा गेलनि। कारण ई जे शुरूमे तँ बटबारा भेलनि मुदा तीन भाँइक परिवार घटने फेर समटा गेलनि। केना नै समटाइत, तीनूकेँ कियो पानियो देनिहार तँ नहिये रहलनि।

चारू भाँइक बीच एहेन संबंध बनल रहलनि जे भीन-भीनौजीक परिस्थितिये पैदा नै लेलकनि। तेकर कारण भेल जे चारू भाइक चारि तरहक कारोबार रहलनि। एक काजमे चारि गोटोकेँ रहने वैचारिक मतभेद होइक संभावना रहै छै। किएक तँ एक्के काज कते ढंगसँ कएल जा सकैत अछि। तहूमे जखन समैक मोड़ अबै छै तखन काजोमे मोड़ अबै छै। सभठाम भलहिं नै आबौ मुदा नहिये अबै छै सेहो नै कहल जा सकैए। चारू भायकेँ परोछ भेने परिवारमे भिनौजिक संभावना बनलनि। संभावनाक कारण भेलनि जे एक भायकेँ एकेटा बेटा जखन कि दोसरकेँ तीन भेलनि। दू भाँइ तँ मेटाइये गेलखिन।

छोट भाइक बेटा रहितो श्याम भैयारीमे सभसँ जेठ खाली भैयारियेमे जेठ नै पढ़ै-लिखै दिस विशेष झुकान रहनि। एक तँ पढ़ैक लगन दोसर सुभ्यस्त परिवार रहबे करनि। मुदा तीनू भाँइ घनश्याम खेलौड़िया बेसी। सदिखन सिनेमे-पत्रिका आ खेले पत्रिका उनटा-पुनटा देखैत। पढ़ैपर तँ ओते नजरि नै, मुदा फोटोपर बेसी नजरि पड़ैत। ओना अखन धरि श्यामक विचारमे कोनो दूजा-भाव नै आएल छलनि जइसँ कोनो तरहक नीक-अधलाक प्रश्न नै उठल छल। जे किछु कारोबार छलनि सामूहिक छलनि। तहूमे एकटा जबर्दस्त गुण श्याममे छन्हि जे घरसँ बाहर धरिक जे कोनो काज होइ छन्हि ओ तीनू भाँइ -अपना लगा चारू- केँ जरूर जानकारीमे दइये दैत छथनि। मुदा भैयारीक संग दियादन्यिो तँ बराबर भइये जाइत अछि। एक बाप-माए वा सहोदर पीती-पितिआइनिक बीच जे सिनेह रहैत ओ तँ चारि गामक चारि दियादिनी एने तँ किछु-ने-किछु गड़बड़ भइये जाइत अछि। कारणो अछि मिथिलांचलोमे एक सीमा कातक गाम आ दोसर सीमा कातक गामक बीचक दूरी किछु-ने-किछु खान-पान, रहन-सहन, बोली-वाणीमे किछु-ने-किछु दूरी बनले आबि रहल अछि। तहूमे जइ इलाकामे बाढ़िक उपद्रव कम छै आ जइ इलाकामे बेसी छै, दुनूक जीवन शैलीमे बदलाब अबै छै। जखने जीवन-शैली बदलत तखने जीवन पद्धति बदलत। जखने जीवन पद्धति बदलत तखने जीवन लीला बदलए लगैत अछि। तहिना गाममे अखड़ाहा रहने किछु-ने-किछु लूरि कुस्तीक भइये जाइ छै।

तहिना मध्य मिथिलांचलक भाषामे पश्चिम भोजपुरी सीमा क्षेत्रक सुआसिन एने भाषामे किछु-ने-किछु रूप बदलले रहै छै। जइसँ भाषा -बोली-वाणी- मे प्रभाव पड़ै छै। तहिना पूवरिया इलाका वा दछिनवरिया इलाकाक प्रभावसँ पड़िते आबि रहल अछि। जहाँ धरि कुटुमैतीक प्रश्न अछि ओ तँ भागलपुरसँ

मोतिहारी आ जनकपुरसँ सिमरिया धरि होइते आबि रहल अछि।

एकाएक श्यामक मनमे भाइक प्रति सिनेह किछु कमए लगलनि। सिनेहमे कमी एने काजमे कमी आबए लगलनि। जेना शुरूसँ परिवारक काजक जानकारी सभकेँ दैत अबैत छेलखिन तइमे किछु कमी आबए लगलनि। तीनू भाँइ खेलौड़िया स्वाभावक रहबे करनि, तइ बीच काजक आदेश कम पाबि आरो खेलौड़िया भऽ गेल। अखन धरि घनश्यामक नजरिमे श्याममे कोनो कमी नै देखि पड़नि। हिसाबक जरूरते ने बुझथि। श्यामक मनमे सिनेह कमैक कारण भेल जे पत्नी सदति काल कानमे घोरि-घोरि पिअबनि जे सम्पत्ति अपन आ सुख-मौज दियाद सभ करैए। पहिने तँ श्याम पत्नीकेँ सेवक बुझैत आबि रहल छलाह। ई नै बुझैत छलाह जे दिआदिनीसँ दियादियो ठाढ़ करैत अछि। मुदा विचारो तँ किछु छिऐ अड़ि कऽ पत्नी पूजे करैकाल खिसिया-खिसिया बाजए लगलखिन-

"जइ पुरुखकेँ कोनो बात बुझैक ज्ञाने ने छै, ओ पुरुख नै पुरुखक झड़ छी।"

पत्नीक बात श्यामकेँ छातीमे धक्का देलकनि। मन कहए लगलनि जे झड़क अर्थ तँ ओ होइत जे कखन अछि आ कखन अपने झड़ि जाएत तेकर कोनो ठेकान नै। जे पाछू दिस ससरत ओ पौरुष केना पाबि सकैए। मुदा अखन मुँह खोलैक तँ समए नै अछि सिर्फ सुनैक समए अछि। जहिना बाल्टी भरि पानिमे नेबो आ चीनी रखिये देने तँ सरबत नै बनैत अछि। नेबोकेँ काटि कऽ गाड़ि रस मिलौल जाइत अछि तहिना चीनियोक अछि। जँ एक शब्द वा एक पाँति पढ़लासँ बूझिमे नै अबैत तं या तँ दोहरा-दोहरा पढ़लासँ वा अगिला-पछिला पाँतिक मिलानसँ बूझल जाइत अछि तहिना अगिला बातक प्रतीक्षामे श्याम आँखि उठा पत्नीपर देलनि। नजरिक पानि देखि पत्नी बूझि गेलखिन जे अगिला बात सुनैक प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। जहिना मधुमाछीक सभ छत्तामे एक्के रंग मधु नै रहैत छैक, कोनोमे कम तँ कोनोमे बेसियो रहैत आ संग-संग नव-पुरान -पहिलुका-पछिला- सेहो रहैत अछि। तँए ठिकिया कऽ ओइ छत्ताकेँ पकड़ब बुद्धियारी छी जइमे डगडगी भरल नवका मधु रहैत अछि। पुरना तँ दवाइ-दारूक लेल नीक, खेबा लेल तँ नवके नीक। वकील जकाँ अपन पक्ष रखैत पत्नी बजलीह-

"अखन धरि अहाँ एतबो ने बुझै छिऐ जे चारू भाँइक बीच पनरहटा बाल-बच्चा आंगनमे अछि। पनरहोक खर्च तँ सम्मिलितेसँ चलैए। एके रंग लत्ता-कपड़ा, खेनाइ-पीनाइ अछि मुदा ई बुझै छिऐ जे ऐमे अपन कते हएत आ दियाद-वादक कते हएत?"

श्यामक नजरि धसए लगलनि। पत्नीक विचारमे किछु तत्व बूझि पड़लनि मुदा स्पष्ट नै भऽ सकलनि। प्रतीक्षाक नजरि उठा आगू तकलनि। अवसरक लाभ उठबैत पत्नी दोहरैलनि-

"पनरहटा बाल-बच्चामे अपन तीनटा अछि। बाकी बारह तँ भैयारियेक भेल। तइ संग अपने दू परानी छी आ ओ छह परानी अछि। कनी जोड़ि कऽ देखियौ जे अधा हिस्सामे अपन कते हएत आ कते हुनका सबहक।"

श्यामक मन सहमलनि। मन कहलकनि जे पत्नी अक्षरत: सत्य कहलनि। सम्पत्तिक अर्थ होइत छै सुख-भोग आकि परसादी बाँटब।

पूजासँ उठि भोजन कऽ श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"घनश्याम, दुनियाँक तँ बेवहारे भैयारीमे भीन होएब रहल अछि। अपनो सभकेँ कम नै निमहल। गाममे देखै छिऐ जे कते छौड़ाकेँ मोछक पम्हो ने आएल रहै छै आ बापसँ भिन भऽ जाइए अपना सभ तँ सहजहि धीगर-पूतगर भेलौं। भीन भऽ जाह।"

जेना धनश्यामो प्रतीक्षेमे रहए तहिना धाँइ दऽ बाजल-

"भैया, सभ दिन अहाँक आदेश मानैत एलौं, आइ नै मानब से उचित हएत। मुदा अहाँ जहिना जेठ भाय छी तहिना तँ रामो-बलराम छी। भलहिं ओ छोट भाए छी, जे कहबै से करत। मुदा तैयो बिना पुछने किछु नै कहब।"

"बड़ बढ़िया, अखन जा कऽ पूछि लहक। सुति कऽ उठै छी तखन फेर गप करब।"

घनश्याम उठि कऽ विदा भेल।

भाइयो आ तीनू दियादन्यिो आ दुनू भाइयोक एकत्रित कऽ घनश्याम बाजल-

"सबहक बीचमे कहै छी। भैया बजा कऽ कहलनि जे भीन भऽ जाह। से कि विचार?"

बलराम- "विचार की भैया, ओ असगर छथि तँ जीवियै लेताह आ हम तँ सहजहि तीन भाँइ छी। हुनका जे मनो खराप हेतनि तँ ने कियो डॉक्टरो ऐठाम लऽ जाइबला नै हेतनि आ ने बजारसँ दवाइ कीनि कऽ अनैबला हेतनि।"

घनश्याम- "अहाँ सबहक की विचार?"

पहिल दियादिनी- "अपन परिवार बूझि नौरी जकाँ दिन-राति खटै छी तइपर जे पाँचो मिनट चाहमे देरी हेतनि तँ साँढ़-पाड़ा जकाँ गर्द करए लगताह। भने नीक हएत। जानो हल्लुक हएत।"

सुति उठि चाह पीब पान खा श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़लखिन। अबिते घनश्याम लगमे बैसि बाजल-

“जे विचार अहाँक अछि भैया, से हमरो अछि। अखने बाँटि लिअ।”

घनश्यामक बोली सुनि श्याम सहमलाह। मनमे उठलनि जे हम जे बुझै छिऐ तइसँ भिन्न ने तँ बुझैए। मुदा बात तँ आगू बढ़ि गेल आब जँ पाछू हटब सेहो नीक नै।

श्याम- “बटवारामे कोनो व्यवधान तँ छहै नै। सभ किछु अधा-अधी भेलह। तखन बाप-पुरुखाक बनौल जेठांश होइए से तँ तोंही बजबह।”

श्यामक विचार सुनि घनश्याम बाजल-

“अहाँ पितासँ हमर पिता जेठ छलाह। संयोग नीक रहलनि जे भिनौजी नै भेलनि। जखन पिताक अधिकारक हिसाबसँ आइ बटै छी तँ हुनकर जेठांश कते हेतनि से तँ हमर हएत किने।”

श्याम- “देखह, तमसा कऽ नै बाजह। सभ दिन अपन सतभैंया परिवार विचारक परिवार मानल जाइत रहल अछि, तइठाम कनी-मनी चीज ले झगड़ब नीक नै।”

घनश्याम- “बात तँ बड़ सुन्दर आ बड़ सोझगर कहलौं मुदा एक वंशक सभ रहितो अहाँ अइल-फइलसँ रही आ हम सभ बटाइत-बटाइत एते बँटा जाइ जे घसाएल सिक्का जकाँ सभ किछु रहितो चलबे ने करी, से केहेन हएत?”

श्याम- “तोहर की विचार?”

घनश्याम- “तीनू भाँइक विचार अछि जे घरसँ घराड़ी, खरिहानसँ खेत धरि चारू भाँइ एकरंग कऽ लिअ। से नै तँ.....।”

श्याम- “तँ की?”

घनश्याम- “ई तँ माटिक चर्च केलौं। पोखरि सेहो तहिना बाँटब। जँ से दइले तैयार नै हएब तँ जमीनक फैसला जमीनपर हएत।”

श्याम- “सएह।”

घनश्याम- “हँ, सोलहन्नी सहए।”

~

न्याय चाही

झुनाएल धान जकाँ पचासी बर्खक शंभु काकाकेँ ओछाइन छौड़ैसँ पहिनहि मनमे उठलनि जे आब तँ चल-चलौए छी से नै तँ जिनगीक अपन हिसाब-किताब दइये दिअनि, सएह नीक। नै तँ शासनक कोन बिसवास केकरो दोख गारा मढ़ि सजा केकरो भेटै छैक। मुदा सोझामे एते तँ जरूर हएत जे अपन बात अपने रखि सकै छी। तइपर जँ नै मानत तँ हमहूँ नै मानबै। लड़ि मरी कि सड़ि, शेषे कि बचल अछि। जहिना नमहर काजमे समयो अधिक लगैत अछि आ छोट काजमे थोर मुदा काज तँ दुनू कहबैत अछि। कियो काहू मगन कियो काहू मगन, मगन तँ सभ अछिये। गंभीर प्रश्नमे ओझराएल शंभु काका, तँए मन-चित्त-देह एकबट्ट भेल रहनि।

पत्नी कुमुदनीक मनमे उठलनि जे भरिसक सूतले तँ ने रहि जेताह। लगमे पहुँचि छाती डोलबैत बजलीह-

"अखन धरि किअए बिछान पकड़ने छी?"

पत्नीक स्वरलहरीमे लहराइत शंभु काका हलसि बजलाह-

"अखन धरि यएह बुझै छलौं जे अपने केलहाक भागी कियो बनैए, मुदा....?"

बजैत शंभु काका ओछाइनपरसँ उठि जहिना उगैत सूर्जक दर्शन लोक दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत करैए तहिना दुनू हाथ जोड़ि पत्नी-कुमुदनीक आगूमे ठाढ़ होइत बजलाह-

"माफी मंगै छी। गल्ती भेल अछि मुदा दोसराक गल्ती ऊपर मढ़ल गेल अछि।"

अकचकाइत कुमुदनी, बिनु किछु सोचनहि बाजि उठलीह-

"से की, से की, एना किअए भोरे-भोर पाप चढ़बै छी।"

"पाप नै चढ़बै छी जिनगीक जे घटल-घटना अछि, तइ निमित्ते मांगि रहल छी।"

"जखन एते कहबे केलौं तखन किअए ने मनो पाड़ि देब। अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे बसिया भात खेन्हिारि बिसराह होइए मुदा रतुका उगड़ल अन्न फेकि देब नीक हएत।"

पतालसँ अबैत बलुआएल पानि जहिना छन्न-छनाइत पवित्र भऽ अबैत अछि तहिना कुमुदनीक विचार सुनि प्रोफेसर शंभु काकाकेँ भेलनि, बजलाह-

"अपना दुनू गोटेक एक जिनगी ऐ धरतीपर रहल अछि। आकि नै?"

"हँ से तँ रहले अछि। तँए ने अर्द्धांगिनी छी।"

“हमर देहक अर्द्धांगिनी छी आकि जिनगीक?”
“ई बात अहाँ बुझैलौं कहिया जे पुछै छी।”
पत्नीक प्रश्न सुनि प्रोफेसर शंभु काका सकदम भऽ गेलाह। मुदा लगले मनमे उठलनि जे टटको घटना बसिया जाइ छै आ बसियो घटना टटका भऽ जाइ छै। ई निर्भर करैए कारीगरपर। जेहेन कारीगर रहत तेहेन टटकाकेँ बसिया आ बसियाकेँ टटका बनबैत रहत। खएर जे होउ। पत्नीकेँ पुछलखिन-
“अपना दुनू गोटे एकठाम केना भेलिऐ?”
“एना अरथा-अरथा किअए पुछै छी। जे कहैक अछि से सोझ डारिये कहूँ। एना जे हरसीकार दीरघीकार लगा-लगा बजै छी से नै बाजू। जेकरा नीक बुझबै तेकरा नीक कहब आ जेकरा अधला बुझबै तेकरा अधला कहब। अहाँ लग जे कनी दबो-उनार भऽ जाएत तँ हारि मानि लेब। सएह ने हएत आकि छाउर-गोबर जकाँ छिट्टामे उठा बाध दऽ आएब।”

जहिना पोखरिक पवित्र जलमे स्नान कऽ पूजाक मूर्ति गढ़ि मंत्र पढ़ैत दान कएल जाइत तहिना शंभु काका बड़बड़ाए लगलाह-
“जखन हम चौबीस बर्खक रही तखन अहाँ चौदह बर्खक छलौं। दस बर्खक अन्तर। आइ धरि कहाँ कतौ देखि पेलौं जे पुरुष-नारीक बीच उमरोक विभाजन भेल। जँ से नै तँ....? जँ एको औरूदे दुनू गोटे जीब तैयो तँ अहाँ दस बर्ख विधबे बनि रहब। ऐ विधवाक सर्जक के? समाजमे कलंकक मोटरी देनिहार के? की ई बात झूठ जे जइ घरमे जते कम वस्तु रहै छै आगि लगलापर ओतबे कम जरै छै मुदा जइ घरमे अधिक वस्तु रहै छै, आगि लगलापर जरबो बेसी करै छै। पचास बर्खक तपल-तपाएल जिनगीक अन्त केना हएत।”
दुनू हाथ जोड़ि पत्नीसँ माफी मंगलनि। मुदा जहिना बच्चाकेँ नव दाँत रहने अधिक-सँ-अधिक काज लिअए चाहैत, नव औजार हाथमे एने अधिक-सँ-अधिक काजो आ अधिक-सँ-अधिक समेओ संग मिलि बितबए चाहैत तहिना कुमुदनीक सिनेह आरो जगलनि। बजलीह-
“मॉफी-तॉफी नइ मानब? पति छी तँए पुछै छी। एहन गल्ती भेल किअए, से जाबे नै कहब ताबे किछु ने मानब।”
पत्नीक प्रश्न सुनि शंभु काका स्तब्ध भऽ गेलाह। मन कछमछाए लगलनि। सत् बड़ कटु होइत अछि। मुदा जँ पत्नियो लग सत्यक उद्घाटन नै कऽ सकब तँ दुनियाँमे दोसरठाम कइये कतए सकै छी। शम्भुकाका साँप-छुछुनरिक स्थितिमे पड़ि गेलाह। एहेन कोनो विचार मनमे उठबे ने करनि

जइसँ मन मानि लइतनि जे ऐसँ पत्नी मानि जेतीह। अल्ल-बल्ल किछु बच्चाकेँ कहल जाइ दै, एक तँ सियान कि सियानोक अगिला खाड़ीमे पहुँचल छथि दोसर अर्द्धांगिनी सेहो छथि। कोनो विचारकेँ बलजोरी थोपि नै सकै छियनि, जँ थोपियो देबनि तँ मानिये लेतीह सेहो नै कहल जा सकैए। जेत्ते दबाब दऽ कऽ बजबाक अधिकार हमरा अछि तत्ते तँ हुनको छन्हिये। जँ किछु नै कहबनि तखन तँ आरो स्थिति बिगड़ि जाएत। जहिना हुनका मनमे गेँठी जकाँ जन्मगाँठ पड़ि जेतनि तहिना तँ अपनो मन नहिये बचत। जँ से नै बचत तँ आँखि उठा देखि केना पेबनि। जँ से नै देखि पाएब तँ पति कथीक। सिर्फ रंगे-रभस टा तँ पत्नीक संबंध नै छी। जँ ओतबे मानि बुझबनि तँ पति-पत्नीक संबंध बुझब थोड़े हएत। पति-पत्नीक संबंध तँ ओ छी, जहिना जनकक एक हाथ हवन-कुंडमे आ दोसर पत्नीक करेजपर रहैत छलनि, मुदा जहिना नव जीवनक दिशा विपत्तिक अंतिम अवस्थामे भेटैत अछि तहिना शंभुओकाकाकेँ भेटलनि। थालमे गड़ल मोती जहिना जहुरी हाथमे देखिते नयन कमलनयन बनि जाइत तहिना कक्कोक नजरिकेँ भेलनि। मन मुस्किएलनि। पतिक मुस्की देखि कुमुदनी मने-मन नमन केलकनि। जिज्ञासु छात्र जकाँ पत्नीक जिज्ञासु नजरिकेँ देखि प्रो. शंभु कहलखिन-

“देखू, प्रश्न एकेटा नै घनेरो अछि, जँ एक-एक प्रश्नक उत्तरो दिअए लगब तँ प्रश्ने छूटि जाएत। जँ प्रश्ने छूटि जाएत तखन उत्तरे केना देब। किछु नै, बुढ़िया फूसि।”

पतिक विचार सुनि कुमुदनी अधखिल्लू कुमुदनी जकाँ जइ अवस्थामे भौंरा फस्च्छि तँ देखैत मुदा अधखिल्लू कपाटसँ न्किलि नै पबैत तहिना कुमुदिनी असमंजसमे पड़ि गेलीह।

पत्नीकेँ असमंजसमे पड़ैत देरी प्रो. शंभुक मनमे उठलनि जे जहिना माटिक ढेपा, गोला, चेका जोड़ि-जोड़ि पैघसँ पैघ बान्ह बान्हल जाइए तहिना जँ बान्हि दिअनि तँ जरूर ठमकि जेतीह। मुदा मन नै मानलकनि। पत्नीक बातमे तँ अखन धरि ओझराएल रहलौं। जरूर माए-बापक काज मानल जाएत। मुदा कि हमरे टा परिवारमे एना भेल आकि दोसरो-तेसरो परिवारमे? जँ एक समाज नै, एक गाम नै अनेक समाज आ अनेक गाममे होइत अछि तँ जरूर दोषक जड़ि कतौ अन्तै छै। अन्तए कतए छै से कहि देबनि, मानती तँ मानती नै आगू कहबनि नेति-नेति।

जहिना उगैत गुज्जर, उगैत कलशकेँ कहैत जे दुनू गोटे संगे-संग रहि दुनियाँ देखब। तहिना प्रो. शंभु कहलखिन-

“सुनू, सभ बात सबहक नजरिपर सदिखन नै रहै छै, भऽ सकैए जे जे

बात दस-बीस बर्ख पहिने कहि देबाक चाहै छल, से नै कहलौं। अपनो धियानमे नै रहल। जहिना असगरे धान तौलिनिहार गनि-गनि तौलबो करत आ उठि-उठि लिखबो करत तँ गिनती-गिनतीमे झगड़ा हेबे करैत, जे जोरगर रहैत ओ मन रहैत जे अब्बल रहैत ओ हरा जाएत। तहिना ने अपनो दुनू गोटेक बीच अछि।''

''दुनू गोटे'' सुनि कुमुदनी कछमछेलीह। पाछू उनटि-उनटि देखए लगली। प्रो. शंभु बूझि गेलाह जे शिकारीक वाण सटीक बैसल। जहिना बाल-बोधक उनटा-पुनटा काज देख सियानकेँ हँसी-लगैत तहिना प्रोफेसर शंभुकेँ हँसी लगलनि। मुदा लगले मनमे उठलनि जे अपनो पछिला कएल काज मन पड़ने तँ से होइए। एकाएक मुँह बन्न भऽ गेलनि। आने-आन पुरुख जकाँ अपन पुरुषत्व देखबैत प्रो. शंभु बजलाह-

''आइ धरि, अखन धरि कहियो हमरा मुँहसँ फुटल जे हम न्यायालयसँ दण्डित भेल जिनगी जीब रहल छी। कियो एको दिन पुछाड़ियो करए आएल जे केना जीबै छी। समाजमे जाधरि बूढ़-बुढ़ानुसक पूछ नै हएत, ताधरि समाजक पछिला पीढ़ी नागरि पकड़ि वैतरणी पार केना हएत। हँ ई जरूर जे साँपकेँ डोरी नै कही, मुदा विचार तँ हेबाके चाही।''

घरमे चौंकल बर्तनक ढनमनी जकाँ कुमुदनी ढनमनाइत बजलीह-

''जखन अहाँ दुनियाँक नजरिमे दण्डित छी तखन....?''

पत्नीक चिन्तासँ चिन्तित भऽ प्रो. शंभु कहलखिन-

''अखन धरि तँ छिपेने रहलौं जे अपन दोख अहाँकेँ किअए दी।''

पतिक बेथासँ बेथित भऽ कुमुदनी बजलीह-

''कनी फरिच्छा कऽ कहू?''

प्रो. शंभु- ''सेवा-निवृत्त होइसँ छह मास पहिने प्रिंसिपल बनाओल गेलौं। कॉलेजक भार बढ़ल। परीक्षा विभाग सेहो छै। सुननहि हेबे जे कते हो-हल्ला भेल। मामला न्यायालय चलि गेल। गोल-माल जरूर भेल रहए, जानकारीमे नै रहए। मुदा तैयो जबाबदेहक रूपमे फॅसलौं।''

कुमुदनी- ''अहाँक किछु दोष नै रहए?''

प्रो. शंभु- ''एकदम नै।''

कुमुदनी- ''फैसला केना भेल?''

प्रो. शंभु- ''सेवा निवृत्त लग देखि न्यायालय दोषी बना छोड़ि देलक।''

कुमुदनी- ''हुनका सभकेँ?''

प्रो. शंभु- ''कमो दोखबला बेसी सजा पौलक आ बेसियो दोखबला कम सजा पौलक।''

कुमुदनी- ''एना किअए भेल?''

प्रो. शंभु- ''जँ पहिने बुझितौं तँ ऐ भीर जेबो ने करितौं मुदा से नै भेल। जाधरि लिखित-मौखिक रूपमे बेवस्था चलत ताधरि एहिना हएत।''

~

पनियाहा दूध

आंगन बहारि, बाढ़नि धोय पछबरिया दावा लगा राखि, सुनयना दरबज्जा दिस तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे मास्टर सहाएब (पति) भरिसक सुतले छथि उठा देब उचित हएत मुदा मन ठमकि गेलनि। आठमे दिन गाम आएल रहथ तँ चारि बजे भोरेसँ हरविड़ों केने रहै छलाह जे घरमे कोढ़ियाक बाढ़ि आबि गेल अछि, जे काजक बेरमे सूतल रहत ओकरा कहियो भाभन्स हेतइ? मुदा आठे दिनक दूरीमे एना किअए देखै छी। फेर मन घूमि कहलकनि उमेरोक दोख होइ छै, ओना सठिया तँ गेले हेताह। तत्-मत् करैत सुनयना दरबज्जा आंगनक बीच ठकुआ कऽ ठाढ़ भऽ गेली, ने आगू डेग उठनि आ ने पाछू।

ओना जीवानन्दक नीन समैयेपर टूटि गेल रहनि, एक तँ ओहुना उमेर बढ़ने खूनो पनिया लगै छै आ नीनो पतरा जाइ छै। नीन टुटिते जीवानन्दक मनमे उठलनि जे उठिये कऽ की करब? काजे कोन अछि जइ पाछू लागब। आँखि बन्न केने सोचैत रहथि। जहिना चिन्तक चिन्तन अवस्थामे निस्तेज भऽ जाइत तहिना रहनि। ओना आँखियो खुजैक आ बन्न होइक ढेरो कारण अछि मुदा हुनका से नै रहनि। मनमे कतेको रंगक विचार टकराइत रहनि, तँए अगिला रास्ता देखैमे एकदिशाह भऽ गेल रहनि। आलमारीक किताब जकाँ रंग-रंगक विषयक एकेठाम सैंतल रहनि, असल विचार परिवारमे गड़ल रहनि। मुदा परिवारसँ पहिने जे अपनापर नजरि पड़लनि ततए गड़ि गेलाह। सेवा-निवृत्त भऽ गेलौं, जीवैक उपाय भलहिं जे हुअए मुदा काज तँ हरा गेल। काजे की अछि जइ अनमेनामे समए गुदस करब। जखन काजे हरा गेल तखन जिनगी केना चलत। जँ जिनगी चलत नै तँ जीवित-मृत्युमे अन्तरे की भेल? मनमे लधले रहनि आकि दोसर उठि गेलनि जे करबो केकरा ले करब? पैछला (पूर्वज) कियो छथिये नै अगिलो उड़िये गेल। बीचमे अपनाकेँ पाबि मन दहलि गेलनि। सेवा-नवृत्तिक तँ एक अर्थ ईहो होएत ने जे काज करै जोगर नै रहलौं। फेर मन ओझरा गेलनि। अंधेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजाक पइर भऽ गेल। काजो तँ दू रंगक होइत अछि, एक शरीरक शक्तिसँ कएल जाइत अछि दोसर बौद्धिक शक्तिसँ। हम तँ शरीरक शक्तिसँ नै बौद्धिक शक्तिसँ करैत छलौं तखन किअए नै करैबला रहलौं। आमक ऑठी जहिना कोइलीसँ धीरे-धीरे सक्कत बनि सृजन शक्ति प्राप्त करैत, से कहाँ भेल? जँ बौद्धिक शक्तिकेँ

शरीरक शक्तिक सीमांकन कएल जाएत तँ केहेन हएत? खैर जे होउ, ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए। मुदा सेहो तँ नै भऽ रहल अछि। जे ठनका शरीरक के कहए जे घरो-दुआर आ गाछो-विरीछकेँ तोड़ि-फाड़ि दइए ओही ठनकाकेँ हाथ कते काल बचा सकैए।

फेर मन ठमकलनि। मुइल धार जकाँ परिवारो भऽ गेल अछि, कि हमरा बचौने बचत। बचबो केना करत? ने पछिला घूमि औताह आ ने अगिला आबए चाहत। लऽ दऽ कऽ दू प्राणी भेलौं, तहूमे तेहेन पाकल आम जकाँ भऽ गेल छी जे कखन तूबि खसब तेकर कोन ठेकान अछि। खैर जे होउ, जाबे आँखि तकै छी ताबे तँ जीबए पड़त आ जाबे जीब ताबे जीबैक उपाए करै पड़त। अपने जीने जिनगी आ अपने मुइने मृत्यु।

गुन-धुनमे पड़ल जीवानन्दक मन समाज दिस बढ़लनि। समाजे ले की केलिऐ जे हमरा ले करत। जहिना देवस्थान दस गोटेक सहयोगसँ ठाढ़ो होइत आ चलबो करैत तहिना तँ समाजो अछि। मुदा से तँ किछु ने केलिऐ। थकथकाएल मन कहलकनि-

“कि ओछाइने धेने रहब आकि उठबो करब?” मुदा लगले दोसर मन कहलकनि-

“उठिये कऽ की करब?”

मन आगू बढ़ि शिक्षक समाज दिस बढ़लनि। सभ सेवा-निवृत्ति होइ छथि। मुदा कि हमरे जकाँ सभकेँ हेतनि। भलहिं सभकेँ होन्हि वा नै किछु गोटेकेँ तँ हेबे करतनि। जखन सबहक जिनगी एक वृत्तमे बीतल तखन किअए सभकेँ सभ रंग हेतनि। परिवारो आ समाजो तँ सबहक सभ रंग छन्हि। से तँ छन्हिये। दीनानाथ बाबूकेँ देखै छियनि जे सेवा-निवृत्तिक उपरान्तो विद्यालय छोड़ि नै रहलन्हिँ। जखन कि सुखदेव बाबू सेवा-निवृत्ति होइसँ पूर्वहि जे तीन बर्ख ओछाइन धेलनि से अखनो धेनहि छथि। परिवारमे जँ केकरो किछु अढ़बै छथिन तँ मुँह दूसि कहै छन्हि जे भरि दिन कौआ जकाँ काँइ-काँइ करैत रहै छथि। मनुक्खकेँ जँ कौआ मानि लेल जाए तँ बोलकेँ की कहबै? जीवानन्दक मन आरो घुरिया गेलनि। फेर मनमे उठलनि जे अनेरे औनाइ छी। जतबे रहए ततबे टाँग पसारी नै तँ पओल जाएब। सुतले-सूतल पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन-

“कनी एमहर आउ?”

आंगन-दरबज्जाक बीच जे सुनयना ठाढ़ छलीह से आगू डेग बढौलनि। केबाड़ लग ठाढ़ भऽ हिया-हिया देखए लगलीह। पहिलुका (सेवा-निवृत्तिसँ पूर्वक) अपेक्षा बदलल-बदलल रूप बूझि पड़लनि। एना केना भेलनि, अखन धरि तँ किछु कहबो ने केलनिहेँ। तखन किअए पानि उतरल बूझि पड़ै छन्हि। केबाड़क एकटा पट्टा खोलि देने रहथिन आ दोसर ओहिना लगल रहै। तही बीच जीवानन्दक मनमे उठलनि जे जाबे नोकरी करै छलौं ताबे बाहरसँ कमा कऽ आनि पत्नीक हाथमे दैत छलियनि, आ अपने अपनाकेँ गारजन बुझैत छलौं। से तँ आब नै हएत। जँ से नै हएत तँ परिवार आगू मुँहे केना ससरत? पाहुन जकाँ आठ दिनपर अबै छलौं आ कमासुत बनि जाइ छलौं।

पतिक बदलल रूप देखि सुनयनाक मनमे उठलनि जे अखन धरि किछु करबो ने केलनिहेँ आ तरे-तर फटि रहल छथि। नवकविरयाक चुटकीक अवाज जकाँ सुनयनाक आगमन बुझितो जीवानन्दकेँ उठैक हूबा देहमे नै रहलनि। मनोक बोझ तँ माथकेँ ओहिना भरिया दैत जहिना कोनो वस्तुक बोझ भरिअबैत। मनकेँ जिनगीक बोझ ऐ रूपे दबने जेना सवारी कसल घोड़ा वा खलीफा होइत। जाबे धरि बाहरसँ कमा घर अनैत छलौं, जइ बले परिवार ससरैत छल ओ तँ टूटि गेल। ओहीपर ने अपनो छहर-महर आ घरो-परिवारक छल। मुदा से नै भेने तँ ओहिना भऽ जाइ छै जहिना माटिक बनल रास्ताकेँ पानिक धार काटि अवरूद्ध कऽ दैत अछि। की कमाइयेपर गारजनी छल? पत्नियेकेँ की सुख हमरासँ भेलनि? घर-गिरहस्ती सम्हारैमे दिन-राति एकबट्ट केने रहै छथि। एक तँ मिथिलांचलक किसान परिवारक अजीव गढ़नि अछि, जइठाम एलापर देवियो-देवता भोथिया गेलाह। सौंसे जनकपुरमे जनकेक दरवार जकाँ बूझि पड़लनि। नान्हिटा बात थोड़े छी। गाम-गाम व्यास भागवत बचै छथि, गाम-गाम कीर्तन-भजन, भोज-भनडारा होइत रहैत अछि, तइठाम समाज विपरीत दिशामे बहि गेल, मुदा देखलनि कोइ ने। दरबाजाक सौभाग्य छल नीक-नीक बात-विचार करब। तइठाम दरबज्जा टूटि आंगन घरक कोठरी बनि गेल अछि, जइठाम कम-सँ-कम लोकक पैठ रहैए, जइठाम आनक सुख-दुख सुनैक आ सुख-दुखक दबाइ बुझैक अवसर नै भेटैत तइठाम पति-पत्नीक संबंधक आधार कि बनि सकैए। देखा-देखीक दुनियाँमे चिन्ता चिन्तन किअए रहत। जँ से नै रहत तँ मनक सुखक दिशाक धारा किअए ने बदलत। जीवित-मृत्युक निर्णए के करत? केना हएत? कोनो मुसरा गाछ होइ आकि लतिआएल लत्तीक होइ, ओकर बाढ़ि ताधरि समीचीन होइत जाधरि ओकरा अनुकूल वातावरण भेटैत

रहैत। ओना लाखो कीड़ी-मकौड़ी कोमल किसलयकेँ नष्ट करैबला अछि मुदा प्रकृतोक तँ गजब गढ़नि अछि, एक-दोसराक नष्ट करैबला सेहो मौजूद अछि। बिनु मुँहक गाछ वा लत्तीक दशा तँ ओहने होइ छै जेहेन साँपक मुँह थकुचेलाक पछाति होइ छै।

जीवानन्दकेँ एहसास भेलनि जे हमरापर नै पत्नीपर घर-ठाढ़ अछि। जँए घर ठाढ़ अछि तँए समाजक परिवार कहबैक लाली अछि। मुदा समाज तँ ओहिना नै केकरो महत दैत? सेवाक अनुकूल केकरो महत दैत अछि। से हमरा से की भेलै? जखन किछु ने भेलै तखन कते महत हेबाक चाही? मुदा जकरा घर-परिवार गाम बुझै छी, तेकरा छोड़िये केना देब। मुदा ई प्रश्न तँ गामक छिऐ, अपन नै। परिवारमे जे छहर-महर भेल ओइमे हमरा कमाइसँ की भेल? यएह ने भेल जे बेटीक बिआह केलौं, बेटाकेँ पढ़ेलौं-लिखेलौं। अंतिम अवस्थामे अपन घर बनेलौं। मुदा बेटीक बिआह, पढ़ाइ-लिखाइ एते भारी किअए अछि जे जिनगी भरिक कमाइसँ लोककेँ पारो ने लगै छै। जँ एतबेमे सभ ओझरा जाए तँ समाजक गति केहेन हएत? जँ समाज दुरगतिक चालि पकड़ि चलत तँ मनुष्यक पैदाइस केहेन हएत। जइठामक जेहेन मनुष्य तइठाम तेहने दुनियाँ।

करोट फेरते जीवानन्दक मनमे उठलनि जे हारि मानी झगड़ा पड़िआए। पत्नीसँ क्षमा माँगि लेब। जँ से नै माँगब तँ हुनकर विचार छियनि जे घरमे रहए दथि वा नै। समाजक संग तँ वएह रहलीह। पत्नीक प्रति जे प्रेम हेबाक चाही से कहाँ कहियो भेल। क्षण-पलक संबंध रहल जीवन-लीलाक संबंध कहाँ रहल। हुनकर दुनियाँ हमरासँ भिन्न रहलनि। मुदा आइ तँ ओही दुनियाँक जरूरति हमरो भऽ गेल अछि। खंड विकसित देशमे जहिना जनता-सरकारक बीच संबंध रहैत, तहिना ने भऽ गेल अछि। जेना पति रूपमे ओ सेवा केलनि तेना कहाँ केलियनि। जँ से करितियनि तँ ओ ओहिना ओतै अँटकल रहितथि, जतए नाओं-गाँवो नै सीखि पेलीह। जतबो समए गाममे बितेलौं, हुनकर कमाइ खेलियनि ततबो तँ हुनका नै कऽ सकलियनि।
ततबे नै, दरबज्जापर जे माल अछि, हुनका (पत्नी) देखि भूख-पियास कहए लगै छन्हि मुदा हमरा देखि घिरनी जकाँ नाचि भगबए चाहैए। अठबारेयो जँ अबैत रहलौं तैयो तँ अपन बूझि खाइ-पीबै ले किछु ने केलिऐ। कोनो कि मनुख छी जे घड़ी-मोबाइल देखि मिनट-सेकेण्ड बूझत, ओकरा लेल तँ

अठबारैओ सटले-दिन भेल। तहिना तँ गाछियो-बिरछीक अछि। जूरशीतल दिनसँ ओकरा जलढार हेबाक चाही, से अनका तँ कहलिऐ, मुदा...?
.....किअए ओ अपन बूझत?

जहिना सासुरमे जमाए सासु-ससुरक आगू लाड़-झाड़ करैत जे ई नै अछि ओ नै अछि। तहिना जीवानन्द ओछाइनसँ उठि, बैसैत पत्नी दिस देखि बजलाह-
''एते दिनक जिनगीमे कहयो निठूर दूध नै खेलौं? आब अहाँक दरबारमे छी, जेना राखी।''
पतिक बात सुनि सुनयना विह्वल भऽ गेलीह। अपन कर्तब्यक बोध भेलनि। पतिक सेवा पत्नीक पहिल दायित्व। लटारम्ह करैत बजलीह-
''एना संस्कृतमे नै कहू, भखिऔटीमे कहू जे कि कहै छी?''
पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन हरा गेलनि। जइठाम सुग्गा-मेना संस्कृत पाठ करैत छल तइठाम मनुष्यक दूरी एते किअए भेल? प्रश्नमे ओझराइते बुकौर लगि गेलनि। बोली नै फुटलनि।

आजुक शिक्षक जकाँ जीवानन्दक जिनगी नै रहलनि। शिक्षक समाजक प्रति समर्पित छलाह। ओइ समाजक बीच पढ़ाइ-लिखाइ प्रतिष्ठाक मूल बिन्दु छल। ओ सभ मानैत छथि जे जइ विषयक जरूरति विद्यार्थीकेँ टयूशन पढ़बाक होइ छै ओइ विषयक पढ़ाइमे कमी छै। विद्यार्थीक लेल किछु सहज विषय होइत अछि किछु कठिन। मुदा जइ विषयक जे शिक्षक होइ छथि हुनका लेल तँ ई समस्या नै भेल। जँ हुनकामे शिक्षण-कलाक पूर्णता हेतनि तँ विद्यार्थीकेँ किअए समस्या ग्रस्त रहए देथिन। की वजह छैक जे अपना ऐठाम अदौसँ लऽ कऽ अखन धरि शिक्षण-संस्थानमे छड़ीक चलनि नै रहल मुदा तँए कि कियो पढ़ि-लिखि विद्वान नै भेलाह। भेलाह।

जइ हाइ स्कूलमे जीवानन्द शिक्षण कार्य करैत छलाह ओइ विद्यालयकेँ अपन छात्रावास सेहो छैक। जइमे पचाससँ ऊपर छात्रो आ आधासँ बेसी शिक्षको रहैत छथि। मेसमे भोजन बनै छैक आ जएह विद्यार्थीक लेल सहए शिक्षको लेल होइत छैक। ओना शिक्षक सभ अलगसँ दूध कीनि रातिमे सुतै बेर पीबै छथि। जीवानन्दो पीबै छथि।

जहिना बाटमे हराएल बटोही दोसरकेँ पुछैत, मुदा उत्तर देनिहारो बटोही तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। कियो एहनो होइत जे अपने हरेबाक चर्च करैत तँ

कियो हराएब छिपबैत आरो दोसरकेँ हराएल बाट देखा दैत आ कियो एहनो होइत जे कहैत जे संगे चलू। ऐ आशाक संग चलैक बात कहैत जे जँ किछु नै कहबै तँ गोंग कहत, मुदा बिनु बूझलमे कि जबाबो देल जा सकैए। ओ संग केने ताधरि चलैत रहैए जाधरि आँखिगर नै भेट जाइत अछि। अर्द्धांगिनीक रूपमे सुनयना पुछलखिन-

"कि सुच्चा दूध कहलिऐ?"

जीवानन्द- "पैंतीस सालक नोकरीमे कहियो सुच्चा दूध नै पीब सकलौं। पीलौं जरूर मुदा एकरा आधासँ बेसी खाएब थोड़े कहल जेतैक।"

जहिना मृत्तासनपर चढ़ल राहीकेँ सर-समाज आ कुटुम-परिवारक लोक आबि-आबि जिज्ञासा करैत जे भैया, कि काका, आकि बाबा की खेबा-पीबाक मन होइए तहिना सुनयना पुछलखिन-

"एते दिन जतए अहाँ छेलौं छेलौं, हम छेलौं छलौं। मुदा आब तँ ओतए अहुँ रहब जतए हम छी।"

पत्नीक विचारक गांमीर्यसँ जीवानन्द आँखि पड़ल अजगर साँपक सोझसँ पड़ा नै पाबि, बजलाह-

"कहलौं तँ बेस बात मुदा मनुष्य तँ मनुष्यक बीच किछु बंधन निर्धारित कऽ रहैत अछि। डोरी-पगहाक जरूरति तँ पशुक लेल होइत। मुदा बान्ह तँ एकमुड़िया नै भऽ सकैए। ओकरा लेल तँ जाधरि दू-मुड़िया नै लटपटौल जाएत, ताधरि गीरह केना पड़तै। जाधरि कुशियारक गाछ जकाँ गीरह नै बनत ताधरि रस-जल केना समटाएल रहत।"

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जिनगीक ओझरी देखए लगलाह जे ई बन्धन छूटल कहिया। तड़सैत मन पत्नीक करेजमे पहुँचलनि। जहिना निशाएल लोक अपने अड़-दड़ बजैत तहिना जीवानन्द बाजए लगलाह-

"कामिनी, सेविकाक रूप छोड़ि संगी कहिया बुझलयनि। ई दोख केकर। मुदा दोख तँ दुनू दिस देखए पड़त। पत्नी कोन रूप देखलनि। सभ दिन ओ पति बूझि सेवा करैत एली। कहियो किछु नै मंगलनि। अपन परिवारक स्तर बूझि अपनाकेँ सम्हारि रखलीह।"

बड़बड़ाइत पतिकेँ देखि सुनयना बजलीह-

"हारि मानी झगड़ा फड़िआए। एके बेर बाजि जाउ जे जे हूसल से हराएल। जे जीबए से खेलए फागु।"

मरैत रोगी जकाँ जीवानन्द बजलाह-

"सुच्चा दूध आबो नै पीब सकै छी?"

“पीब सकै छी। जखन गाए पोसैक लूरि अछि तखन किअए ने पीब सकै छी। मुदा जइठाम दिन-राति लुटनिहार लूटि रहल अछि तइठाम थनक दूधक कंठ लग पहुँचत कि नै, तेकर कोन बिसवास अछि।”

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जी-जी कऽ उठलाह। बिसरल बात मन पड़लापर जहिना ओकर रूपो-रेखा सोझमे आबए लगैत तहिना भेलनि। बजलाह-
“शुद्ध-अशुद्ध दूध ने एक परिवारक समस्या छी आ ने एक गामक। दूधमे पानि देब चलनि भऽ गेल अछि। ओना जे अपने गाए-महींस पोसि दूध खाइ छथि तिनकर संख्या कम छन्हि। जे बेचिनिहार छथि ओ दूध बेचि चाउर-दालि, तरकारी इत्यादि कीनै छथि, खाली दूधेटामे पानि नै देखै छथिन। आनो-आनो तहिना, तखन कएल कि जाए। कुल-मिला कऽ देखलापर यएह ने देखि पड़ैत जे ताड़ी पीयाक गांजा पीयाककेँ गारि पढ़ि कहैत जे फोकटिया अछि। एहिना एक-दोसरमे सटल संबंध अछि। सभकेँ सभ गारि पढ़ैत आ सबहक सभ सुनैत अछि। तहूसँ टपि अपने मुँहे गरिया अपने सेहो सुनैत अछि।”

विह्वल भऽ सुनयना पुछलखिन-
“तखन उपाय?”
“उपाय एतबे जे जते परिवारमे खर्च हएत कम-सँ-कम तते उपारजन कऽ लेब तखन परिवारक पाड़ लगि जाएत। गाममे जते खर्च अछि ओते गौआँ मिलि उपारजन कऽ लेताह तँ गामक पाड़ लगि जाएत। समाजेक कल्याण ने देशक कल्याण छी।”

~

कर्ज

जमीन निलामीक नोटिश पाबि बरीसलालक सभ आशा ओहिना झड़ए लगल जहिना वसन्तसँ पूर्व गाछक पतझर होइत वा फलसँ पहिने फूल झड़ए लगैत अछि। हलसैत जिनगीक आशा देखि बरीसलाल खेती लेल, बैंकसँ कर्ज लऽ बोरिंग-दमकल करौलक। मुदा समैपर कर्ज अदा नै कए पाबि, जइले कर्ज लेलक सएह हाथसँ निकलैत देखि सोगसँ सोगाएल अखड़े चौकीपर पेटकान दऽ मने-मन सोचैत जे की करैत की भेल। साओनक मेघ जकाँ दुनू आँखि नोरसँ ढबढबाएल।

बीसम शताब्दीक आठम दशकमे हरित-क्रान्तिक हवा घुसकैत-घुसकैत गाम धरि पहुँचल। नव हवाक सुगंध नाके-नाक खेत-खरिहानमे पहुँचल। गामक किसानक सीमांकन शुरू भेल। ओना सीमांक नाम-मात्रेक भेल मुदा भेल तँ। नाम-मात्र ऐ लेल जे सैद्धान्तिक रूपमे तँ सीमांकनक रूप रेखाा तैयार भेल मुदा जमीनक ओझरी कँटहा बाँस जकाँ ओझराएल। कड़चीसँ बेसी काँट। एक-एक कड़चीमे सइयो काँट। सोरगर-मोटगर पाकल देखि भलहिं आरीसँ जड़ि काटि दियौ मुदा झोझसँ निकालब तँ असान नै। जइसँ बेवहारिक पक्ष कमजोर पड़ल।

चारि श्रेणीक अन्तर्गत किसानकेँ राखल गेलनि। ढाइ एकड़सँ निच्चा एक श्रेणी, चारि एकड़सँ निच्चा दोसर श्रेणी, दससँ निच्चा तेसर आ तइसँ ऊपर चारिम। निचला किसानक लेल सरकारी खजाना खुजल। रंग-रंगक प्रोत्साहनक घोषणा भेल। सरकारी घोषणा तँए सभले भेल। मुदा बैंकक माध्यमसँ भेटत। जइ माध्यमसँ भेटत सएह नगण्य। एक दिस फौज जकाँ किसान दोसर दिस जइठामसँ भेटत, सएह नै। मुदा तैयो गोटि पंगरा तँ छलैहे। सरकारी सुविधा सब्सिडीक रूपमे भेटत। तेकर कार्यालय भिन्न बनल। किसानक बीच प्रोत्साहनक घोषणासँ नव जागरणक संचार भेल। गाम-गाममे भी.एल. डब्लूक माध्यमसँ काजक सूत्र तैयार भेल। आने किसान जकाँ पाँचम किसान बरिसालोक डेग बढ़ल। एक-तिहाइ सब्सिडी सुनि केना ने बढ़ैत। जखने किसानक हाथ पानि औत तखने चौमसिया खेती बारहमसिया बनि जाएत। जखने बारहमसिया बनत तखने ने किसान डारि-

डारि झूला लगा बारहमासा गाओत। नै तँ छह मासे, चौमासे ने गाओत। जे चौमास किसानक बखारी छी, तेहीमे ने भाँग-धुथुर उपजैए।
वस्तुगत काज तँ नै मुदा चौरीसँ चौमास धरिक, चारि गुणा उपजाक नक्शा तँ किसानक मनमे बनबे कएल। बीघा-एकड़क हिसाब भलहिं अखनो धरि नै फड़िआएल मुदा-एकड़-हेक्टेयर तँ आबिये गेल। किछु एनए किछु ओनए कऽ किसान हिसाब तँ बैसाइये लेलक।

अखन धरिक जे छोट आ मध्यम किसान महाजनीक कर्जमे डूबल छल ओइमे पूँजीपतिक प्रवेशक दुआर खुजल। कम सूदिक बात तँ आएल मुदा छह मास पछाति सूद मूड बनि जाइत से एबे ने कएल। अखन धरि सूदिक-सूदि प्रथा नै छल से आएल। भलहिं कतौ महाजन सप्पत खा केकरो घराड़ी लऽ लेने होइ आकि कतौ सप्पत खा कर्जा डूमल होइ, ई अलग बात। आजुक दहेज ओते भारी नै छल जते माए-बापक सराध। ओना दहेजोक जड़ि मजगूत बनि रहल छल, किएक तँ शहरक आमदनी गाम दिस आबए लगल छल।

गाममे छोट -सीमान्त-माध्यम- पैघ लगा किसानोक संख्या बेसी मुदा बोन्हिारक संख्यासँ कम अछि। ओना सभ गामक रूपो-रेखा एक रंग नहिये अछि। कोनो गाम एहेन जइमे पाँच प्रतिशतसँ कम जनसंख्या नवे-पनचानबे प्रतिशत जमीन पकड़ने, तँ कोनो गाम एहेन जइमे दस पनरह-प्रतिशतक अंतर। एहनो किसान जिनका अपन जमीनक अता-पता नै बूझल तँ एहनो किसान जे अपने सबतूर मिलि खेती करैत। तइ संग एहनो जे खेतक आड़िपर पहुँचि जूति-भाँति तँ लगबैत मुदा अपने हाथे किछु नै करैत। गाछी-खरहोरि, बँसबाड़ि, घराड़ी लगा बरीसलालकेँ पाँच बीघा जमीन। दू बीघा बेख-बुनियादिमे फँसल बाकी तीन बीघा जोतसीम। एकटा बड़द रखने। सफटैती कऽ खेती करैत। ओहू तीन बीघा जोतसीम जमीनमे तीन मेल। पनरह कट्ठा चौरीमे मलगुजारीक संग लगतो साले-साल डुमैत। मुदा छोड़ियो केना देत, आखिर खेत तँ खेत छी। रौदी भेने ओहीमे ने उपजा होइ छै। बाकी सवा दू बीघा मध्यमसँ भीठ धरि। दसो कट्ठा भीठमे मरूआ, भदै-गदैरक संग कुरथी-तेबखा होइत। गहुमक खेती तँ आबि गेल मुदा खेतीक लेल पानि चाही। पटबैक साधन पोखरि, जइसँ करीनसँ किछु अगल-बगलक खेती होइत। लोकक बीच ने पढ़बै-लिखबैक जिज्ञासा रहै आ ने सुविधा। गनल-गूथल विद्यालय-महाविद्यालय। बरीसलालो दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा खेतिएक काजमे लगौने। मिथिलाक किसान खेतक

ओहन प्रेमी बनल रहला जेहन पतिव्रता नारी जे बाल विधव होइतो प्रतिष्ठाकेँ कमलक माला बना गरदनिमे लटका हँसि रहली अछि तहिना किसानो। जँ से नै रहल छथि तँ भागि-पड़ा अर्थशास्त्री बनि किअए अपन खेत-पथारकेँ सम्पति नै बूझि प्रतिष्ठाक वस्तु बूझि रहल छथि। की ओहिना खेतीकेँ उत्तम आ नोकरीकेँ मध्यमक विचार देलनि। जँ एकरा मुहावरा-कहावत बना देखब तँ मिथिलाक चिन्तनधारा धरि नै पहुँचि पाएब। जइठाम खेतकेँ अपन अधिकारक वस्तु बूझि अपना हाथक हथिहार बना अपन स्वतंत्रताकेँ अक्षुण्य रखैक विचार सेहो देलनि। ई तँ अपन-अपन विचार होइ छै जे कियो हथियारकेँ बम-बारूद बुझैत तँ कियो हाथक यार माने प्रेमी बूझि विचारक बाट बनबैक विचार व्यक्त करैत अछि। तहिना अस्त्र शस्त्र सेहो अछि।

मध्यम किसान वा लघु किसानक जीबैक जिनगी ब्लौटिंग पेपर सदृश बनि गेल छन्हि जेकरामे लालो रोशनाइ सोंखैक शक्ति छै आ करियो रोशनाइक। बाढ़ि-रौदी एकैसम शताब्दीक ऊपज नै अदौसँ रहल अछि। भलहिं कहि सकै छी जे धार-धूड़क बान्ह-छान्ह दुआरे हुअए लगल अछि, भऽ सकै छै कतौ-होइत हेतै, मुदा प्रश्न धारेक पानिक नै अछि। तहिना रौदियो रहल अछि। धारोक कटनी-खोंटनी कम नै अछि। मिथिलांचलकेँ कोसी-कमला तेखार कऽ दुब्बरसँ धोधिगर धरि अछि। पान्कि एक साधन भेल, दोसर बरखा भेल। ओहन-ओहन बरखा होइत रहल अछि जे पनरह दिन हथियाक बरखाक ओरियान कऽ कऽ पूर्वज रखैत छलाह। हथिया मात्र एक नै जेकरा बरखा ॠतुक अंतिम नक्षत्र कहि टारि देब। ओना पानिक कोनो ठेकान नै, माघोमे पाथर खसि उपजल उपजाकेँ नाश करैत रहल अछि। अंतिमक जन्म ताधरि नै होइत जाधरि आदि नै होइत बरखा ॠतुक आदि आद्रा छी। तँए "आदि आद्रा अंत हस्त" ई भेल बरखाक आँट-पेट। पूर्वज सभ स्पष्ट विचार देने छथि जे बरखाक कोनो बिसवास नै, कते हएत। १९७१ ई.मे बंगला देशक लड़ाइक लगभग सालो भरि बरखा होइते रहल, ओहन-ओहन बरखा होइत रहल अछि जइमे सएक-सए घर खसैत रहल अछि। घरमे दबल-बाल-वृद्ध, धन-सम्पति नष्ट होइत रहल अछि मुदा तैयो ब्लौटिंग पेपर जकाँ सोखि किअए जीबैक बाट धेने आबि रहल अछि। दुनियाँमे ने साधकक कमी आ ने साधना भूमिक, मुदा मिथिलांचल श्रेष्ट किअए? कतौक जाड़क साधना तँ कतौक तापक तप, जइमे तपि तपस्या करैत, तँ कतौ पान्कि सौभरी ॠषि बनि करैत। मुदा मिथिलांचल साधनााक फुलवाड़ी लगा रखने अछि। ओइ फुलवारीक फूल सजबै छलीह सीता।

ने मिथिलाक भूमि बदलल, आ ने बदलल ॠतु ॠतुराज, बदलि रहल अछि खाली बोतलक रस। घरक समस्या कहाँ? समस्या तँ तखन उठैत जखन रहैक घरसँ घर भाड़ा असुलैक विचार जगैत। गाछक निच्चा सात-हाथ नौ हाथक घरमे जीवन-यापन कऽ वेद-पुराण सिरजलनि। की दुनियाँ देखिनिहार मिथिलांचल छोड़ि देखि रहला अछि, जँ से नै तँ समस्याकेँ कोन रूपे देखलनि। यएह ने सरकारी योजना जहिना कागजपर औषधालय बना साले-साल मरम्मतक नामपर योजना लुटाइत रहैत आ पान सालक बाद माटिपर खसा मलबा हटबैक खर्च होइत। खेतसँ उपजल खढ़, बाँस साबेक घर बना समस्याक समाधान करैत छलाह। ओ सभ अपन विचारकेँ स्वतंत्र रखि स्वतंत्र जीवन व्यतीत करैत छलाह। पढ़ै-लिखैक ओते समस्या नै, जेहन जिनगी रहत ततबे बुधिक ने जरूरत। बेसी भेलासँ तँ लोक छड़पि-छड़पि अनको गाछक आम तोड़ए लगैत अछि। भलहिं अपन पूर्वजक घराड़ीपर नढ़िया किअए ने भुकए, मुदा दुनियाँकेँ मातृभूमि कहि सेवारत् रहैत छी। ओही रूपक फूसघर बना जिनगीक गारंटी केने छलाह। अखुनका जकाँ नै जे एक दिस लग्गी लगा भाँटा तोड़ैक बाट धेने छी आ दोसर दिस हजार-दस हजार जीबैबला ॠषि-मुनिक दुहाइ दैत छी। एकैसम सदीमे कियो अपनाकेँ अगिला पीढिक नजरिक पुतली बना रहल छी। जहिना बरखा, तहिना जाड़ तहिना रौद-ताप, बाल जीवनसँ लऽ कऽ वृद्ध तकक अनुभव कऽ अपन जिनगीकेँ असथिर बना नीक-नीक उमेर पबैत रहला अछि।

पश्न उठैत जे की एहेन विचार मरि गेल आकि जीवित अछि? ने मरल आ ने स्वस्थ भऽ जीवित अछि। गाम-समाजमे लटपटाइत जीवित जरूर अछि मुदा.....। जीवित ऐ रूपे अछि जे अखनो खेतीकेँ उत्तम मानल जाइत अछि। कृषि जिनगीकेँ थाहि चलबैत अछि। तहूमे सामाजिक स्तरपर तँ आरो थाहल अछि। जँ जिनगीमे दोसराक जरूरत नै हुअए तँ ऐ सँ नीक जीवन ककरा कहबै। आजुक हवा भलहिं जते जोर मारए मुदा हवा असथिर वस्तुकेँ कहाँ किछु बिगाड़ि पबैत अछि। अनभुआर धारमे ने नमहर-नमहर जलचरक भय रहै छै किएक तँ धुमैत धारमे जे गहींर-गहींर मोइन खुना जाइ छै तइमे ने डुमैक डर, जँ से नै तँ डुमैक डर कतए। तहिना ने धरतियोक बीच अछि। जहिना पानिमे गोहि, नकार आदि रहैए तहिना ने धरतियोपर बाघ सिंह, नाग बास करैए। थाहल जिनगीक अर्थ ई जे जँ तीन बीघा वा दू बीघा जमीनकेँ जँ समुचित बेवस्था कऽ खेती कएल जाए तँ युगानुकूल मनुष्य बनब बड़ भारी नै। जिनगी तखन भारी बनैत अछि जखन गरथाहमे जिनगी पड़ि जाइत अछि। किसानक जिनगीकेँ पंगु

बना देल गेल अछि। जँ से नै तँ सरकारी बेवस्था कोन -किसान हितैषी- जिनगीक कोन जरूरतिकेँ पूरा नै कऽ पाबि सकैए, मुदा नीको-नीको -दस बीघासँ ऊपरबला किसान- परिवार ने अपना बेटाकेँ नीक शिक्षा दऽ पाबि रहल अछि आ ने जनमारा बेमारिक इलाज कऽ पाबि रहल अछि। जहिना सुति उठि सीता-राम, राधा-कृष्ण वा सतनामक नाम लेल जाइत तहिना ने आब टाटा-पापा लैत उठै छी। मुदा कि हम सभ नढ़रा मकैक सदृश जिनगी नै जीबै छी जे भोगार गाछ रहितो अन्नक कतौ पता नै। कृषि तँ आमक बगीचा वा खीराक लत्ती सदृश अछि। जहिना गाछक पल्लवक मुँहसँ गिरहे-गिरहे पल्लव निकालि डारि बनैत रहैए, खीरा लत्तीक मुँहसँ लत्ती बनि फुलाइत-फड़ैत रहैए तहिना ने जिनगियो छी जे धरतीसँ जनमि फुलाइत-फड़ैत विसरजन करत। खेत तँ ओहन सम्पत्ति छी जे जिनगीकेँ आगू-बढ़बैक शक्ति रखैए। कतबो शक्तिशाली किअए ने आगि हुअए मुदा जँ ओइमे नव ज्वलनशील वस्तुक समागम नै हेतै, तँ कते काल ओ जीवित रहि सकैए। जाधरि धार टपनिहार वा सरोवरमे स्नान केनिहारकेँ पानिक थाह नै लगि जाएत ताधरि धार टपब वा स्नान करब तँ अथाहे अछि। जाधरि अथाह रहत ताधरि शंका रहबे करत। जाधरि आशंका रहत ताधरि विचार प्रभावित हेबे करत। मुदा एतेकक बावजूद हम किअए.....? की हम नै जनै छी जे जाधरि कृषिकेँ सर्वांग्नि विकासक प्रक्रिया नै अपनौल जाएत ताधरि नचारी-सोहर कते काल सोहनगर हएत। हर आदमी हर परिवारकेँ ठाढ़ भऽ चलैक प्रश्न अछि, नै कि एक दोसराकेँ छिटकी मारि खसबैक।

पाँचटा किसानक संग बरीसलाल सेहो बोरिंग-दमकलक विचारकेँ आगू बढ़ौलक। प्रखण्ड कार्यालयसँ फार्म लऽ बैंकमे आवेदन केलक। संगीक जरूरति तँ पड़बे केलै किएक तँ जिनगीमे पहिल खेप प्रखण्ड कार्यालय आ बैंक पहुँचैक अवसर भेटलै। नव योजनाक काज बैंकमे आएल। ओना गामक आ गामक किसानक हिसाबे बैंकक संख्या दूधक डाढ़िये छल, मुदा छल तँ। बरीसलालक आवेदन स्वीकृति करैत जमीनक बौण्ड बना माइनर एरीगेशनकेँ काज करैक भार देलक। बैंक-कर्जक सूद शुरू भेल।

माइनर एरीगेशनक आँट-पेट छोट। एकाएक काजमे बढ़ोत्तरी भेल। ने काज करैक औजार अधिक आ ने करैबला। तँए ठीकेदारीक चलनि। तहूमे एक अनुमंडलक बीच एकटा कार्यालय। लेन्हिार हजार हाथ देन्हिार एक। मुदा तैयो बरीसलालक आदेश पत्रकेँ फाइलमे लगा देल गेल। एक-तिहाइ सब्सिडीक लेल सब्सिडी कार्यालयक जरूरत। सब्सिडी कार्यालय जिलाक

अन्तर्गत। दौड़-बरहा करैत बरीसलालकेँ खर्चक संग-संग साल बीत गेल। बरसातमे एक तँ धसना धसैक डर दोसर लोक खेती कहिया करत। बोरिंगक काज छोड़ि बरीसलाल खेतीमे लगि गेल। साल बीतल दोसर साल शुरू भेल। ताधरि बैंकक कर्जक चक्रवृद्धि ब्याजक दरसँ एते मोटा गेल जे सब्सिडी उधिया गेल।

दोसर साल शुरूहेसँ बरीसलाल काजक -वोरिंग-दमकलक- पाछू पड़ि गेल। आइ-काल्हि करैत माइनरो-गरीगेशनक काज आ सब्सिडीयो ऑफिसक काज लटकले रहलै। चढ़ैत बैसाख -दोसर साल- बरीसलाल रघुनन्दनकेँ कहलक-
“बौआ, छोड़ि दहक। बोरिंग नइ भेल तँ करजो तँ नहिये भेल। बुझबै जे एते दिन घुमबे-फिरबे केलौं।”

बैंकक प्रक्रिया रघुनन्दनकेँ बूझल। बरीसलालक बात सुनि अवाक् भऽ गेल। मन कलपि उठलै बाप रे, सूदि-मूड़ लदा गेलै, कोट-कचहरीक मुद्दा बनि गेलै। दोख केकरा लगतै। कोन मुँह लऽ कऽ समाजमे रहब। ग्लानिसँ मन बिसाइन भऽ गेलै। साहस बटोरि रघुनन्दन बाजल-
“काका, जँए एते दिन तँए दू मास आरो। बैसाख-जेठ बचल अछि। काल्हि चलू या तँ अपन काज वापस लेब वा हाथ पकड़ि काज कराएब। तइले जे हेतै से देखल जेतै।”

रघुनन्दनक बात सुनि बरिसलाल ठमकि गेल। बाजल-
“बौआ, हम तँ तोरेपर छी, आगिमे जाइले कहह आकि पानिमे तोरासँ बाहर थोड़े हएब।”

बरीसलालक विचार सुनि रघुनन्दनक मनमे उत्साह जगल। दोसर दिन दुनू गोटे -बरीसलाल, रघुनन्दन- माइनर एगरीगेशनक कार्यालयसँ बोरिंग गाड़ैक सामान नेने आएल। गाड़ैक दिन तकबए गेल तँ आगूमे भदबा पड़ैत रहए। जोड़-घटाओ करैत आठ दिन पछाति बोर करब शुरू भेल। सिर्फ ठीकेदारे टा आएल बाकी सभ काज गामेक मजदूर करत। ओना बोरिंगक काजमे गामक मजदूर अनाड़िये छल मुदा अनाड़ियो तँ कते रंगक होइ छै। जते काज तते जीवनी तते अनाड़ी। जखने काजक लूरि भऽ गेल तखने जीवनी, जाधरि नै भेल ताधरि अनाड़ी। ततबे नै एक काजक जीवनी दोसर काजक अनाड़ी सेहो होइत। तँए जीवनी-अनाड़ीक भेद करब कठिन अछि। ओना काजक भीतरो जीवनी-अनाड़ी होइत। जहिना एकपर सए खड़ा

अछि। कहैले तँ एक पहिल सीमा भेल आ सए दोसर सीमा मुदा दुनूक बीच अंतर ओते अछि जते एक प्रतिशत आ सए प्रतिशत। तहिना काजोक अछि। एके काजक भीतर सइयो रंगक काजक अंश होएत। किछु अंशक बादे जीवनी मानल जाए लगैत मुदा जीवनी -लूरिगर- होइतो पूर्ण लूरिगर नै मानल जाएत। पूर्ण लूरिगर तखन मानल जाएत जखन काज समए सीमाक भीतर होइत। ओना काजोक सीमाक निर्धाणरण व्यास पद्धतिक अनुकूल होएत। जँ से नै होएत तँ किछु एहनो काज केनिहार होइत जे समयो-सीमासँ पहिनहि कऽ लैत आ किछु एहनो होइत जे काज तँ कऽ लैत मुदा समए सीमा टपि कऽ करैत। तँए कि ओकरा अनाड़ी कहल जेतैक।

मुलाइम माटि रहने सबा साए फीट बोर आठे दिनमे भऽ गेल। लेयरो बढ़ियाँ। चालीस फीट लेयर। ओना जँ नीक लेयर होइत तँ पनरहो फीटमे पाँच हार्स पावरक इंजन पूर्ण पानि दैत, मुदा लेयरोक तँ ठेकान नै। नीक-अधला संगे होइत। कोनो बालु -सौतबी- एहेन होइत जइमे पानिक मात्रा पनरह प्रतिशतक आस-पास होइत आ कोनो एहेन होइत जइमे अस्सी प्रतिशत धरि पानि रहैत। मुदा बरीसलालक बोरक लेयरक स्थिति किछु भिन्न छल। निच्चाक तीस फीट लेयरमे अस्सी प्रतिशत पानि छल आ ऊपरकामे कम। तँए ठीकेदार बाजल-

“बरीसलालबाबू, अहाँक तकदीर नीक अछि। कहियो बोरिंग भथन नै हएत। किएक तँ तेहेन निचला बालु अछि जे सभ दिन पानि दनदनाइते रहत। तँए नीक हएत जे जहिना भीत घरमे ठेमा-ठेमा रद्दा पड़ैए तहिना किछु दिन जे बोर ठेमा जाएत तँ धँसना धसैक संभावना समाप्त भऽ जाएत। ओना केसिंग-पाइपसँ बोर कएल अछि, पाइप लोड करैमे कोनो दिक्कत हेबे ने करत, मुदा अहीं हितमे कहै छी।”

ठीकेदारक मुँहसँ तकदीर सुनि बरीसलालक मन उधिया गेल। ठीकेदारक अगिला बात नीक नहाँति सुनबो ने केलक। अंतिम हितक चर्च सुनि बरीसलाल बाजल-

“ठीकेदार सहाएब, अहाँ कि कियो बीरान थोड़े छी जे अधला करब। अहाँ तँ सद्य: इन्द्र भगवान छी, जेमहर ताकि देबइ तेमहर ताड़ि देबै। जेना-जेना अहाँ कहब तेना-तेना करैले तैयार छी।”

ठीकेदार- “हमरो गाम गेना बहुत दिन भऽ गेल। अखन ऑफिसक छुट्टीक काजो ने अछि। किएक तँ बोर करैक सीमा जते अछि तइ पूरैमे एकबेर गामसँ घूमि आएब। अहूँक काज नीक हएत आ अपनो काज भऽ जाएत।”

कहि ठीकेदार गाम चलि गेल।

पनरह दिन बीत गेल। जेठ चलए लगल। रोहणि नक्षत्रक आगमन भऽ गेल। संयोगो नीक रहल जे अगते विहरिया हाल सेहो भऽ गेल। जहिना भक्त भगवानक मिलन होइत तहिना बरीसलालक मनमे भेल। अपनो हाथ पानि आबि गेल, ऊपरसँ भगवानो देताह। पानिक धनिक बनि जाएब। जहिना टिकुली अपन पाँखिक होश केने बिना हवामे उधिआइत ओतए पहुँचए लगल जतए ओकर पाँखि बेकाबू भऽ टूटि जाइत। माटिक चुट्टी वा गाछक घोड़नकेँ पाँखि होइते मरैक दिन लगिचा जाइत, मुदा बूझि नै पबैत तहिना बरीसलालोकेँ हुअए लगल।

रोहणिया हाल जहिना धरतीक शक्तिमे नव उर्जा दैत तहिना बरीसलालोक मनमे आएल। पत्नियो आ दुनू बेटोकेँ शोर पाड़लक। तेल विहीन बच्चाक मुँह लाली धरैत अनरनेबा जकाँ हरिअरसँ लाल होइत जाइत देखलक। तहिना पत्नियोक ओ दिन मन पड़लै जइ दिन हाथ पकड़ि जिनगीक भार उठौने रहए। मुदा, किअए ने लोक भार उठाओत? एकटा नव शब्द - word- ताधरि संग पूरैत जा धरि ओकर मथन होइत। नै तँ कअए रहत। बड़ीटा दुनियाँ छै कतौ बौरु जाएत। पत्नीक नव रूप देखि बेटाकेँ सम्बोधित करैत बरीसलाल बाजल-

“बौआ, तोरा सभकेँ जहिना कोरा-काँखमे खेलेलियह तहिना हँसी-खुशीसँ जीबैक ओरियान सेहो कऽ देलियह।”

पतिक बात सुनि पत्नी सुशीलालक मन पहाड़क झरनासँ झड़ैत पनिक चमकैत रेत जकाँ चमकए लगलनि। बजलीह-

“सोझे दीक्षा देने नै हाएत। एक-एक दिन, एक-एक क्षणक काजक बात बुझा दिऔ तखन हएत?”

अखन धरि बरीसलाल कोट-कचहरी करैत बहुत किछु सीख नेने छल। गाम-गामक खेती-पथारी, गाम-गामक माल-जाल पोसब, गाम-गाम फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक खेती, माछ पोसब इत्यादि सुनि चुकल छल। जहिना मिड्ल स्कूलक बच्चा हाइ स्कूलमे प्रवेश करैत नव-नव पोथी देखि ललाए लगैत तहिना बरीसलालक दुनू बेटाक जिज्ञासा जगल। जिज्ञासा देखि बरीसलाल बाजल-

“बौआ, माटिमे धन छिड़िआएल छै, बीछिनिहार चाही।”

अखन धरि दुनू भाँइ आमक टिकुलासँ लऽ कऽ पाकल आम धरि बीछि चुकल छल तँए बीछैक बात सुनि जेठका बेटा महावीर पुछलक-
“केना बिछबै बाबू?”
बरीसलाल बेटाक प्रश्न सुनि खुशिया गेल। आजुक बेटा जकाँ नै जे नोकरियो करैत आ नोकरो रखैत। जखन अपने काज अछि तखन अपनासँ जे समए बचत सहए ने दोसरकँ देब। बाजल-
“बौआ, अखन तूँ सभ भारी काज करै जेकर नै भेलहहँ। ओना कनी-कनी कऽ हेन्डिल मारब सीख लेबह तँ दमकलो चलाएल भइये जेतह। मुदा जँ दस कट्ठामे सालो भरि तरकारीक खेती करबह तँ ओते कोन परदेशिया कमाएत। हँ समए बदलने लोक रंग-बिरंगक वृतियो बदलि लेलकहँ। जइसँ किछु अनाप-सनाप सेहो भऽ रहल छै। मुदा बुधिक संग पूँजी आ पूँजीक संग बुधि नै चलत तँ अनेरे दब-उनाड़ होइत रहत।”

जेठक पूर्णिमा दिन बोरिंग लोड भेल। लोड होइसँ तीन दिन पहिने अपन ऊषा मशीन आबि गेल रहै। बोरिंग लोड कऽ ठीकेदार-मजदूर मिलि माछक भोज खा, सोलह घंटा पानि चला काज सम्पन्न केलक।

अखाढ़ चढ़िते मानसून उतड़ि गेल। पहिलुके दिन एहेन बरखा भेल जे खेत-पथारमे पानि लगि गेल। नीचला खेती बुड़ैक लक्षण धऽ लेलक। तेसरे दिन बाढ़ि चल आएल। पोखरि-झाखड़ि, चर-चांचर भरि गेल। पानिपर पानि आ बाढ़िपर बाढ़ि कते बेर आबि गेल। दहार भऽ गेल। एहेन दहार भेल जे नवान पावनियो लोक बिसरि गेल। मुदा कातिक अबैत-अबैत रब्बी-राय छीटब शुरू भेल। गहुमक खोती नै भऽ सकल। अन्नमे गहुमक खेती सभसँ महग खेती होइत। मुदा धान नै भेने किसानक स्थिति बिगड़ि गेल। एक तँ ओहिना बरीसलालक स्थिति दू सालक दौड़-बरहामे विगड़ि गेल तइपर दाही आरो बिगाड़ि देलक। सालो भरि बोरिंग-दमकल बैसल रहि गेल।

तरकारी खेतीक ओहन दशा बनि गेल जे बजार नै। कच्चा सौदा, नष्ट होएत।

देखैत-देखैत सतासीक बाढ़ि आ अट्ठासीक भूमकम आबि गेल। जर-जर बसीसलाल फड़-फड़ करैत फड़फड़ा गेल। तही बीच बैंकक पक्षसँ जमीनक निलामीक नोटिश भेटलै।

~

परदेशी बेटी

उबानि होइते घटक काका दाँत पीसैत काकीपर बिगड़ैत घर छोड़ि विदा भेला। मनमे उठलनि जे एहेन पड़ाइन पड़ा जाइ जे दोहरा कऽ ने घरक मुँह देखी आ ने घरेवालीक। मुदा ओहन क्रोधे आकि हँसऽबे कि जे दोसरपर नै बिसाए। घरक बात (पति-पत्नीक बीचक) तँए अनका कहबो उचित नै। दुनियाँमे केकरो कोइ ने कहै छै। भलहिं बिनु कहनौ दुनियाँ किअए ने बुझैत होउ। मने मन घटक काकाक पकिया निर्णए भऽ गेलनि। लोकोकेँ कोन मतलब जे बताह जकाँ अनेरो अनका देखि हँसि देब आकि बिनु मतलबोक घंटा भरि सोखर पसारि देब। आन जकाँ नै जे आंगनसँ निकलि डेढ़ियोपर सँ पाछू घूमि-घूमि देखैत, देखबो केना करितथि? कोनो कि अदी-गुदी विचारक चोट लागल छन्हि, पुरुखे छियाह जे अखनो धरि बरदास केने छथि नै तँ मूसक दबाइ पीब नेने रहितथि।

एक तँ ओहुना अखन घटक काकाकेँ टोकैक लग्न नै, कारण लगनक समए नै छी, लगनक समैमे ने पतिआनी लागल काज रहै छन्हि कुसमैमे तँ दुनियाँक न्अिमे छै जे अपनो लोक पूछैले तैयार नै होइत अछि, घटक काका तँ सहजहि विदाइ लेन्हिार छथि। बिनु रेटक आमदनी। जेहेन मुँह तेहने आमद। नै टोकैक इहो कारण रहनि जे मध-असरेसक गिरहस्ती चलैत, जते समए लोक केकरोसँ गप करत तते काल जँ देहे कुरिया लेत तँ ओइसँ बेसी नीक। भगवान केकरो अधला बना पठबै छथिन, भलहिं रोगे-व्याधि किअए ने होउ। जँ सभ अधले रहैत तँ किअए कियो देह कुरिअबैले सोनाक सिक्का बना-बना आगूमे रखैत। ओहिना पैघ शैरीकार कहै छथि-

"हौहटिमे मजा है कि कलकलि में है,
खुदा ने दिया खुजली, कुरियाने में मजा है।"

खैर जे होउ। ओना किसकारक समए रहने देवियो देवता अखन छुट्टी लऽ लेने छथि, चौरचनक पछाति ज्वाइन करताह। जहिना फुलही थारीमे जते काल दही रहैत ओते बेसी कसाइन होइत, तहिना घटक काकाक मन कसाइन होइत जाइत रहनि। जहिना भरल पेटक प्रेम गीतक स्वर आ जरल पेटक प्रेम गीतक स्वरमे मात्राक भेद होइत तहिना घटक काकाक मनमे उठैत रहनि, जे आइ धरि कहियो नै उठल रहनि। केना नै उठितनि? सभ दिन दस गोटेक बीच हँसि-बाजि समए खटियबैत रहला आब जखन

शिव लिंग फुल जकाँ वा नारियल-ताड़ जकाँ फड़एबला भेला तँ आनक कोन गप जे जाँघ तर बसैवाली पत्नियो दुतकारि देलकनि। ई तँ हुनके चाबस्सी होन्हि जे जहर-माहुरक कोन गप जे केकरो लग बजौ नै चाहैत छथि। कसाइन बीच बिसाइन घटक काकाक मन उठलनि। जिनगी भरि घरे बसबैक काज करैत एलौं मुदा......?

बेटा प्रेमसँ चाहे बिगड़ि कऽ आकि पड़ा कऽ परदेश चलि गेल तँ चलि गेल। सबहक बेटी सासुर बास करैए, ओहो करह। मुदा पत्नी तँ पत्नी छी। जँ घरे नै तँ घरवाली की, आ घरेवाली नै तँ घर केहेन। भाड़ा घर जँ अपना घर सन होइतै तँ मुसे किअए घरमे घर बनबैत। ओकरो तँ पानिये पाथरसँ ने जान बँचबैक छै। मुदा किअए? अपन घर कियो अपन विचार अपन आँट-पेट आ लम्बाइ-चौड़ाइ नापि बनबैत तँए बेसी सुरक्षित होएत। मुदा गणेशजी अपन वाहनकेँ ई बात ने किअए बुझा देलखिन जे लोकक घरमे जे घर बनबै छैँ, से अपने जोकर बनबिहेँ। जइ भीतपर घर ठाढ़ अछि ओकरे किअए जंजल बना देइए। जखन भीते-जंजल भऽ जाएत तखन हथियाक झाँट केना बरदास करत। मुदा घर खसत घर बन्हनिहारकेँ ओ तँ बीलमे अन्नक ढेरीपर अरामसँ पड़ल रहत। अकाससँ धरतीपर घर खसत, मुदा ओ तँ पताल दिस बनौने अछि। किअए ने ओकर जान बँचले रहतै। तइ बीच घटक काकाक मनमे एकटा घटकैती आबि गेलनि। मन पड़िते मुस्की आबि गेलनि। ठोर वरदास नै कऽ सकलनि। खापड़िक तीसी जकाँ चनचना उठलनि। कहू जे बेंगबा सन छौड़ाकेँ इन्द्रक परी सन कन्या केकरा किरतबे भेलै। मुदा कलयुगक उपकार हत्या बराबरि। जौं से नै तँ जँ ओकरा अपन उपकार मन पाड़ि देबै तँ कि ओ नै कहत जे पाँचो टूक कपड़ा आ दैछना कथीक लेने रहिऐ। ओ खुशनामा देने रहए आकि काज करैक बोइन। मन घूमि पत्नीक ओइ बातपर आबि अँटकि गेलनि जे कहू ई केहेन भेल जे मुँह फोड़ि दुसैत कहलनि जे आगू-पाछू किछु सोचै नै छी आ जहाँ कोसीकातक बकेनमा दूधक दही आ तिलकोरक तरूआ आगू पड़ैए आकि बुद्धिये बिगड़ि जाइए। जइ परिवार लेल जिनगी भरि झूठ-फूसि बाजि, नीक-अधला काजक विचार नै केलौं तइ परिवारमे एहेन गंजन हुअए तँ मनुक्ख केना रहत? खौंझ आरो तेज भेलनि। ओ (पत्नी) रस्तामे रोड़ा अँटकौन्हिार के? दस गाम घूमै छी, दस लोकमे रहै छी हम आ उपदेश देती ओ? जे सभ दिन जाँघक निच्चा रहल ओ छड़पि कऽ छातीपर चढ़ि मुक्का देखाओत; एहेन पुरुष हम नै छी। जहिया जे हेतै से हेतै अखन घरसँ नै पड़ाएब। भक्क खुजलनि तँ देखलनि जे किलोमीटर हटि दोसर टोल लग पहुँचि गेल छी। घूमि कऽ आंगन केना जाएब? केतबो किछु भेल

तँ भेल पुरुष अपन पुरुखपाना केना छोड़ि देत? नेराओल थूक केना चाटत? मुदा अपने फुरने घुमऽबो केहेन हएत? मरदक बात वाण समान होइत जे धनुषसँ निकलि गेल निकलि गेल। कहि दुनू हाथक तरहत्थी माथपर लऽ बैसि रहलाह।

जहिना किसान, बिनु खुरपियोक गाछक जड़ि लग बैसि चुटकियेसँ खढ़ उपाड़ि कमठौन करए लगैत, तहिना घटक काका घुमैक ओरियान सोचए लगलाह। मुदा लगले मन तुरुछए लगलनि। ई तँ धोबियो कुकुड़सँ टपब हएत जे, घरक आ ने घाटक। जँ बलजोरी घरमे रहौ चाहब तँ ओ (पत्नी) कत्ते मोजर देतीह। मन घुमलनि। हमरो एते नै अगुतेबाक चाहै छल। गल्ती अपनो भेल। एना जे लोक छोट-छोट बातपर घरसँ पड़ाएत तँ कहियो कुकुड़-बिलाइ जकाँ अपन घर हेतै। साँझू पहर कऽ जखन लोक बाध-बोनसँ अबैए तखन केकरा घरमे ने हर-हर, खट-खट होइ छै, मुदा कहाँ कियो हमरे जकाँ फूलि कऽ पड़ा जाइए। जँ एक रत्ती दब-उनार बात पत्नी कहबे केलनि तँ कि होइतै। कोनो कि जड़ि भीरा कऽ टिक काटि लेलनि। अर्द्धांगिनी छथि, बाल-बच्चा आ परिवारपर जते अधिकार पतिक होइत तइसँ कम कि पत्नियोक होइत अछि। बेटा-बेटी तँ दुनूक छी। ई तँ समैक दोख छी जे कखनो गरमी चढ़ा (रौदमे) गरमा दैत अछि तँ कखनो ठंढा दैत अछि। सझुका झगड़ा राति खसैत-खसैत मेटाइये जाइए किने। आकि हमरे जकाँ दिन-राति धेने रहब। भोर होइते दुनू परानी घर-अंगनाक काजमे लगि जाइए। कहाँ एको मिसिया मान-दोख मनमे रखैए। जहिना डिक्शनरीक नवका शब्द अबितो अछि आ जाइतो अछि तहिना ने घरोमे किछु-ने-किछु अबैत रहैए आ किछु-ने-किछु जाइत रहैए। मन आगू घुसुकलनि। मन पड़लनि बिआहक दिन? समाजक बीच सरिआती-बरिआती, तँ हमहीं ने हाथ पकड़ि जिनगी भरि संगे रहैक वादा केने रही, से कि भेल? जहिना कटही गाड़ी कुमड़क रस्तामे कनी दब-उनार भऽ उनटिये जाइए तँए कि गाड़ीवान गाड़ी रखनाइये छोड़ि देत। जँ छोड़ि देत तँ आगू केना घुसकत? औगुताइमे एहेन भारी गल्ती नै करक चाही। कोन दुरमतिया चढ़ि गेल जे एना केलौं। एको रत्ती उम्रोक लेहाज-विचार केलौं। जुआन लोक जकाँ निर्णए केलौं। कहू जे आब हमर उमेर अछि जे संगी छोड़ि असकरे रहब। कोनो कि संयासी छी जे दोसर नै सोहाएत। अपने दिन-राति घीमे डूमल रहब मुदा दोसरकेँ कुत्ता जकाँ पचै नै देब। भरि दिन शनियाही गुड़-चाउर चिबबैत रहब आ अनका देखबे ने करब। मुदा कतौ जाएब तँ पेट संगे जाएत। पेटक आगि जेहने परिवारमे तेहने तीर्थ-स्थानमे

जगैत अछि। ओकरा तृप्ति करब आवश्यक होइत। जँ से नै तँ भूखे भजन किअए ने होइत। खाइले के देत? जँ देबो करत तँ एक मुट्ठी देत? एक दिन खेलासँ जिनगीक भूख मेटाएत। जँ से होइत तँ डिबियो लऽ कऽ तकलापर एकोटा भिखमंगा नै भेटैत। मन घुमलनि। हारि मानी झगड़ा फड़िआए।

जहिना बाढ़िक तेसरा दिन पानि ठाढ़ भऽ उनटा-पुनटा दिशा पकड़ए लगैत तहिना घटक काकाक मनमे सेहो भेलनि। अपन विचारक अनुकूल बात केकरा अधला लगै छै। संयोगो नीक रहलनि। मुदा मनमे खरोच लगलनि। समाजो तेहेन भऽ गेल अछि जे केकरा के पूछत? जहिना भोजक जएह बारीक मिठाइ पड़सैत अछि सएह माछो-मासु। कहू ई केहेन भेल। सभ तरहक पनचैती बड़के काका करताह। जमीनोक पनचैती आ दुनू परानियोक झगड़ा हुनके चाही। जँ जमीनक पनचैती अमीन नै करत, एहिना सभ गुणक आधार से आदमी नै करत तँ खीर-खिचड़ीमे कोनो भेद नै रहत। एते मनमे रहबे करनि कि देखिते सुनरलाल कहलकनि-

“भाय सहाएब, अहीं ऐठाम जाइ छी?”

अहीं ऐठाम जाइ छी सुनि घटक काका औना गेलाह। अपन ठौर कतए अछि जे जाएत। कि कहबै, भरमे-सरम आँखि मूनि लइ छी जे बूझत हवामे अलिसा गेल छथि। उत्तर नै पाबि सुनरलाल दोहरा देलकनि-

“भाय सहाएब झखाएल छी, भक्क खोलू।”

अकचकाइत घटक काका बजलाह-

“नै, नै! कनी आँखि लागि गेल। की कहलह?”

सुनरलाल- “घरपर चलू। निचेनसँ बुझा देब। रस्ता-पेराक गप नै छी।”

एक तँ राकश दोसर नौतल। घटक काका हरे-हरे कऽ घर दिस बिदा भेलाह। मनमे उठलनि जे कोनो विचार दोहराइयो कऽ होइत अछि, किअए ने दुनू परानी मिलि फेरसँ विचारि लेब। घर दिस विदा होइते घटक काका पुछलखिन-

“गपो शुरू करह। जते भेल रहत ओते तँ काजे ने भेल रहत?”

छुब्द होइत सुनरलाल बाजल-

“देखिऔ भाय, बिआह भेल केकरो आ जहलमे अछि हमर बेटा।”

अकचकाइत घटक भाय बजलाह-

“से कि, से केना?”

मने-मन महावीरजी कँ गोड़ लगलनि। निसाँस छोड़ैत, सोचए लगलाह जे बाप रे एकटा काजमे जँ एना भेल, हम तँ जिनगी भरि इएह केलौं। खुनी

केसमे बेसी दिनक सजा होइ छै। मुदा खुदरो-खुदरी केश मिला तँ ओहूसँ बेसिआइये जाइ छै। हे भगवान रच्छ रखलह। आबो छोड़ि देबाक चाही। मुदा जइ इंजीन्यिरकेँ जइ मशीनक बोध भऽ गेल अछि, जँ मशीनक तकनीक बदलि जाएत तखन की हएत? दोसर काजक लूरि कहिया भेल जे करब। हे भगवान जनिहह तूँ।

सुनरलाल कहए लगलनि-

''भैया देखियौ, हमरे बेटा फुलबाक बिआह बंगलोरमे करा देलकै। ओहन-ओहनकेँ गाममे के पूछै छै। मुदा ट्रन्सपोर्टमे नोकरी भेने दिन-दुनियाँ बदलि गेलै। भषो सीखि लेलक। अलगरजा कमाइ हुअए लगलै। बी.ए. पास लड़ीक संग बिआह करा देलकै।''

घटक काका- ''बी.ए. पास लड़की गछलकै केना?''

सुनरलाल- ''केहेन गप करै छी। जखने लोक कमाए-खटाए लगैए तखने ने सर्टिफिकेटक ओरियान करए लगैए। एम.ए. पासक सर्टिफिकेट कीन लेने अछि।''

घटक काका- ''लड़कीबला कतक छिऐ?''

सुनरलाल- ''नवटोलीक छिऐ। तीस-पेइतीस बर्ख पहिने गामसँ पड़ा कऽ गेल। नोकरी करए लगल। ओतै परिवारो रखैए, घरो-दुआर बना लेलक। अपन इलाकाक जाति बूझि कुटुमैती कऽ लेलक।''

घटक काका- ''आब की भेल?''

सुनरलाल- ''बिआहक बाद लड़की जोर केलक जे गाम जाएब। एबो कएल। मुदा जहिना पढ़ल सुग्गा बौक होइत तहिना वेचारीकेँ भऽ गेलै। पनरहे दिनमे नाकोदम भऽ गेलै। जहिना सासु अल्हरि कहए लगलै तहिना ससुरो माथा ठोकैत। सर-समाजक तँ चर्चे कोन? ने भाषाक ताल-मेल बैसैत आ ने खाइ-पीबैक वस्तुक।''

घटक काका- ''जा, ई तँ भारी जुलुम भेल! तखन की भेलै?''

सुनरलाल- ''लड़की पड़ा कऽ दरभंगामे गाड़ी पकड़ि बंगलोर चलि गेल। हमरा बेटापर केश कऽ देलक। जेलमे पड़ल अछि।''

डेढ़ियापर अबिते घटक काका बजलाह-

''एहेन खच्चरपन्नी गाममे चलतै। अच्छा कनी ओहू पार्टीक बात बूझि लेब तखन कहबह। अखैन जाह, कनी हमहूँ औगुताएले छी।''

दरबज्जापर गल-गूल सुनि रेखा आंगनसँ आबि, खरिहानक मेह जकाँ बीचमे आबि ठाढ़ भऽ सोचए लगली जे केहेन पुरुख छथि जे थूक फेकि पड़ाएल रहथि जे घूमि कऽ ऐ घरक मुँह नै देखब, से सालक कोन गप जे दिनो

भरि नै निमाहि सकलाह। मुदा मन ठमकलनि। सप्पत-किरिया लोककेँ थोड़े टिक पकड़ि उखाड़ै छै, जँ से उखाड़ितै तँ भरि दिन लोक किअए सभ बातमे जय गंगाजी आकि माटि उठा-उठा बजैत अछि। जहिना लोक भात-रोटी खाइए तहिना ने सप्पतो-किरिया खाइक वस्तु भेल। खेलक पचलै फेर खेलक फेर पचलै। रसे-रसे एहेन पचान पचि जाइ छै जेहन झूठ-सच्चमे पचल अछि सच्च झूठमे। जँ तुकबन्दी करैक लूरि भऽ जाए तँ कवि, शायर बनबे करब आ जँ झूठ-सच्च पचबैक लूरि भऽ गेल तँ वक्ताक के कहए सेसर अनुभवी वक्ता बनबे करब। तहिना तँ हिनको (पतिक) जिनगी तेहने रहल छन्हि। तहूमे समाज तेहन लाइसेंस दऽ देने छन्हि जे साले-साल थोड़े रिनुअल करबए पड़तनि, ताजिनगीक लेल बनि गेल छन्हि। आँखि उठा घटक काकापर देलनि तँ देखलनि जे मुँह धुआँ केने लटकौने छथि आ जहिना कोयलाक धुआँमे चमकैत बिजली बनैत तहिना उपदेश झाड़ि रहल अछि। मन रोषा गेलनि। घरे परिवारक लोक किअए ने होथि मुदा गलत गलत छी तहिना सहियो तँ सही छिहे। गल्तीक कोनो पारावार छै रावण जकाँ लाख-सबा लाख धिया-पुता जहिना त्रेतामे छलै, जे घटि कऽ द्वापरमे सय-सैकड़ापर चलि एलै, तहिना ने अखनो अछि। तहूमे कलयुग छी। पापेक युग। देवतो सभ पड़ा कऽ उनीकुटी चलि गेल छथि। जाए तँ चाहलनि समुद्र दिस मुदा भोर होइते लाजे सभ रस्तेमे रहि गेला। रोषाएल रेखा झपटि कऽ बजलीह-

“बौआ, अहीं सभ ने सर-समाज छी। जेहने समाज रहैए तेहने लोक काजो-उदेम करैए।”

रेखाक बात सुनि सुनरलालक मनमे पंचक एहसास भेलै। पंचक एहसास होइते अपन बात बिसरि गेल। बिसरि गेल बेटाक जहलक उपाए। दमकलक चक्का जकाँ पहियाक रूप बदलि एक सूरे मुड़ी डोलबैत बाजल-

“हँ, से तँ छिहे। केकरो कटने समाज कटै छै। तेहेन लस्सा बनल छै जे कतबो कटतै तैयो सटिते रहतै।”

“नइ बुझलौं अहाँक बात?” रेखाक मुँहसँ निकलल।

जहिना नमहर नागड़ि नमहर जानवरक पहिचान छी तहिना ने काजक नागड़ि मनुक्खोक होइ छै। जँ से नै तँ रावणसँ पैघ आसन हनुमान कथीक बनौलनि। ओही नागड़िक बले ने सौंसे लंका जरा देलनि आ अपना किछु ने भेलनि। बूझल-बिनु बूझल दुनियाँमे केहेन हएत जे नै हएत। कोनो प्रश्नक उत्तर दुनूक एक भऽ सकैए। मुदा होइ छै। बुझिनिहार संग बुझिनिहार रहैत तँ बिनु बुझिनिहारोक संग तँ बिनु बुझिनिहार हेबे करतै। जइ काजमे सुनरलाल अपने ओझराएल तही काजक ओझरी छोड़बैक भार लैत बाजल-

“भौजी, अहाँ-हमरामे कोन भेद अछि। नीक-अधला सभ गप तँ दिओर-भौजीमे होइते अछि। से कि कोनो आइये अछि आकि अदौसँ आबि रहल अछि। देखियौ, जहिना करौटन फूलक पत्ता-पत्तामे गाछ पैदा करैक शक्ति अछि, तहिना ने समाजोक बनबै-मेटबैक दुनू शक्ति छै।”

सुनरलालक विचारमे सूर-मे सूर मिलबैत रेखा बजलीह-
“बौआ, पहिने कनी भैयाकेँ बुझा दिअनु जे रूसि कऽ जे भगलाह से कोन अनचित बात कहलियनि।”
नमहर झगड़ा देखि सुनरलालकेँ नमहर पंचक एहसास भेल। जहिना नमहर लबि जाइत, तहिना सुनरलाल लबैत बाजल-
“भौजी, केना कहबनि हम। सँए-बहुक झगड़ामे लबड़े टा पड़ैए। अहाँकेँ कहलौं से तँ भाइयो-सहाएब सुनबे केलनि।”

जहिना एक चुरुक जलसँ सौंसे घरक वस्तु पवित्र बनि जाइत तहिना घटक काका अपन गनजन सम्हारैत बजलाह-
“हौ सुनरलाल, जहिना तूँ छोट भाए भेलह तहिना ओहो घरेवाली भेलीह। तँए बजैमे थोड़े कोनो धड़ी-धोखा हएत। जुआनमे मौगी घरसँ पड़ाइत अछि आ उमेर बढ़ने पुरुख। तँ तोहीं कहह जे कोन गल्ती केलौं।”
मुड़ी डोलबैत सुनरलाल बाजल-
“से के कहैए जे अहाँ अधला केलौं।”
पाशा बदलैत देखि रेखा बजली-
“बौआ, नौंए-कौंए कऽ भगवान एकटा बेटा देलनि। अपने दुनू परानी ने सोचब जे केहेन पुतोहु एने घरक गाड़ी ससरत। सिनेमा-नाटक जकाँ थोड़े मनुक्खक जिनगी क्षणे-झण बदलि सकैए आकि क्षणे-झण आगू-पाछू भऽ सकैए।”
रेखाक बात सुनि, मुड़ी डोलबैत सुनरलाल बाजल-
“हँ, से तँ होइते छै। अहीं कहू भौजी, केकरा चलैत हमहीं एते तबाह छी। उएह छोड़ा माने हमरे बेटा एहेन किरदानी किअए केलक। जहिना बिआह भेने अनेरे लोक घटक बनि जाइए तहिना किअए बनल। नइ बनल तँ जहलमे किअए अछि।”
रेखा- “अहाँ अपनापर नै लिऔ। बेटा केलहा काजक दोखी बाप नै होइए मुदा माए-बाप.....। काल्हि भऽ कऽ जे कोनो दोख लगा बेटाकेँ कहबै तँ ओ नै मुँह दुसैत कहत जे केकर केलहा छिऐ। जहिना अपन बेटीकेँ पोसि-पालि

बिआह करै छिऐ तहिना ने सभ करैए। मुदा घरक मिलानी जँ नै करबै तखन पढ़ल सुग्गा बौक नै हेतै।''

पत्नीक बात सुनि घटक काका सहमलाह। पाछू घूमि तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे कते घूर-बहूर काज भेल अछि। ईहो हएत। यएह ने दस गोटेमे बजलौं। कोनो कि इएह टा बात बजलौं। सदिखन तँ एहेन-एहेन बात चलिते रहैए। बड़ हएत तँ बाजब जे पत्नीक विचार नै भेलनि। तहूमे के एहेन छथि जे पत्नीक बात काटि सकै छथि।

मन झिलहोरि खेलाए लगलनि। जहिना पघिलल कटहर गाछसँ खसिते छहोछित भऽ उड़ि जाइत तहिना घटक काकाक मन छहोछित भऽ गेलनि।

~

मान

तराजूक दुनू पलड़ा बीच डंडी लगल रहैत, जइ सहारासँ वस्तु-जातक वजन मानल जाइत तहिना जिनगीक तराजू सेहो होइत अछि। कमल फूलक डंटीक सहारासँ जहिना फूलक सभ अंग समान रूपे खिल-खिल खिलैत तहिना जिनगियोक होइत मुदा से कहाँ होइए?
जिनगीक तरजूक पलड़ा दू रंग होइए, एक सही दोसर घटबी। पलड़ाक घटी-बढ़ी भेने तरजू पसङाह भऽ जाइए जइसँ घटैत-बढ़ैत जिनगी जीवनक दू धारामे प्रवाहित होइत चलए लगैए।

एक महिना अखार रहितो दू नक्षत्रमे विभाजित होइत, ओना एक पूर्ण होइत दोसर अपूर्ण भेने तेसरो चलि अबैत। ऊपर ऐ बीच आद्रा नक्षत्र अपन पूर्ण जिनगी बितबैत अछि। भलहिं अखाढ़क पहिल भाग हो वा मध्य वा अंत। पनरह दिन अन्हार बीत आठ इजोरिया मास टपि गेल। हाजरी भुकबए लेल मौसम जोगार लगा नेने अछि मुदा आद्राक उपस्थिति दर्ज नै भेल अछि। ओना कहैले सालक पाँच बरखा भऽ चुकल अछि मुदा तैयो आद्रक जगह उम्मस अपन पूर्ण जुआनीमे जगमगा रहल अछि। गोनू झाक हरबाहिक जलखैक खीर जकाँ हाल धरतीकेँ छुछुओनहि अछि।

दिन उगिते जेना दीनानाथक दर्शन होइत तहिना किसानक बीच नव दर्शन आएल। ओ थिक श्री-विधिसँ खेती करब। मास दिन पूर्व धानक बीआ, जैविक खाद, कीटनाशक दबाइ इत्यादिक बँटबारा, पछिला हिसाबे इमानदारीसँ भेल। इमानदारी ऐ लेल जे जहिना बैंकक कर्जकेँ लोक चौक परक भुज्जा खा सठा दैत तहिना अखन धरिक बीआ-बालिक हिसाब रहल। वैचारिक रूपमे बीआ पाड़ि खेतीक करैक समए सेहो पौलक। संयोगो नीक रहल जे एकटा बरखा सेहो भेल। बरखा हाथ लगने किछु गोटे बीआ खसौलनि। देखबामे बरखा भेल, मुदा बीआ पाड़ैक नै भेल। जइसँ बीआ अधा-छिधा जनमल। किछु गोटे कल आ घैलसँ पटा डूमा हाल बना खसौसनि। जनमबैमे ओ जीतलाह। मुदा किछु गोटे अखनो बीआ घरेमे आद्राक आशापर रखने छथि। ओना अद्रोसँ रोहिणीक बीआकेँ निरोग मानल गेल अछि। मुदा रोहिणीक पछातिक हिसाबकेँ अनदेखी केने बीरारेमे बीआ जरबो करैत। खेतीक एक उपाय तँ हाथ आएल मुदा मूल उपाय पानि नै आएल। एक पाशापर भगवान बैसल दोसर २००८ ई.क कोसीक विभिविषिका

नहर खा गेल, तइ लागल १९८७क बाढ़ि आ अठासीक भुमकम बीस-पच्चीस बर्ख पहिनहि बोरिंग खा गेल छल। जूर-शीतल पावन्कि चलती कमने पोखरिक उड़ाही रूकि गेल जइसँ ओ अपने तेहेन रोगा गेल अछि जे जान लेल रविक संग एकादशियो करैए।
मनुष्यक जन्म संस्कार ओतए पनपब शुरू होइत जतए ओकर जन्म होइत अछि। ई दीगर बात जे कतौ पेटक बच्चाक सेवा पोनगैक पहिनेसँ हुअए लगैत आ कतौ रस्ते पेड़े जन्मो लैत आ पाललो-पोसलो जाइत।

आद्राक कर्त्तव्यक लापरवाहीसँ जन-जनक बीच तबाही तँ अछिये श्रमक घटबी सेहो बेसिआइये गेल अछि। मुदा किछुओ किअए ने हुअए आखिर वसन्तक उनाड़ियो मास तँ छी। किअए ने बाग-बगीचामे बगवार वसन्तक संग चैतावर आ बारहमासा गाऔत। आमक संग-संग जमुनिया धार सेहो बहिते अछि।

टोलक पाँच गोटेक गाछी एकठाम। साधारण परिवार तँए छोट-छोट गाछी। मुदा कलमी-सरही सभ आम लुबधल। करीब पच्चीस तीस गाछ सभ मिला कऽ पाँचो परिवारक जीवन-शैली एक रंग तँए विचारोमे एकरूपता छन्हि। एते जरूर छन्हि जे बिनु कहने कियो कोनो गाछपर ने ढेला फेकैत आ ने हाथसँ तोड़ैत। मुदा खसल आमक कोने रोक नै। जइसँ चेतन तँ अपन-आनक ठेकान जरूर बुझैत, मुदा बाल-बोध नै। पाँचो परिवारक धिया-पुता एकेठाम खेलबो करैत आ आम खसलापर पबैले दौगबो करैत। ओना अबोध बच्चा रहने, अवाजकेँ ठीकसँ नै अकानि कियो केम्हरो कियो केम्हरो दौग जाइत मुदा केकरो भेटलापर एते खुशी सभकेँ जरूर होइत जे हराएल भेटल।

रातिक दू बजैत। उमस भरल दिनक संग अधा रातियो बीत गेल। एक बजेक बाद पूरबाक लहकी उठल। दिन भरिक गुमराएल मन नीन दिस दौगल।

दुनू बेटाक संग गुलजारी आमक गाछी विदा भेल। अष्टमीक चान लुप्त भऽ गेल छल। जइसँ अन्हारक साम्राज्य पसरि गेल। आठ गोटेक परिवार गुलजारीक। तीनू बापूत मिला आठटा पाकल आम भेटलै।

आंगन आबि डिबियाक इजोतमे आठो आम गनि छोटका बेटा राधेश्याम बाजल-

“जते गोरे घरमे छी एक-एकक हिसाबसँ आमो अछि।”

राधेश्यामक बात सुनि जेठका भाय गौरीशंकर बाजल-

“जहिना छोट-पैघ आम अछि तहिना तँ घरमे लोको अछि किने। तँए....।”

राधेश्याम- “अखन माएकेँ रखैले दऽ दहक। खाइ बेरमे खाएब।”

~

मनोरथ

जहिना शोभा काका सभ छुट्टी गामेमे बितबैत तहिना सभ रवियो बितबै छथि। सुविधो छन्हि। कोस पाँचेपर विद्यालय छन्हि, साइकिल छन्हिये तँए अबै-जाइमे असोकर्जो नहियेँ होइ छन्हि। शनिकेँ स्कूलो अधे होइ छन्हि, सेहो सुविधा भइये जाइ छन्हि। आने शनि जकाँ सात बजे साँझमे शोभा काका गाम पहुँचलाह। पछबरिया घरक दाबा लगा साइकिल ठाढ़ कऽ कैरियरपर सँ झोरा उतारि आंगन पएर रखिते छथि आकि पत्नी सुगिया काकीपर नजरि पड़लनि। जेठ-अखार मास तँए डिबिया नेसैक ओरियान करैत रहथि। ओना डेढ़ियापर जखने साइकिल खड़खड़ाएब सुनलनि कि बूझि गेली जे एहेन अबाज तँ अपने साइकिलक छी। आँखि उठौलनि तँ नजरि पड़ि गेलनि। जेठ-अखार मास ऐ लेल जे पूर्णिमा भऽ गेल मुदा संक्रान्ति पछुआएले। मुदा काकीक संयोग नीक रहलनि जे नजरिमे नजरि नै मिललनि। जँ नजरि मिलि जइतनि तँ चूल्हि पजारि डिबिया नेसब बाधित भऽ जइतनि। तेकर लाभ सुगिया काकी उठेबो केलनि। लाभ ई उठौलनि जे पतिक आगत-भागतकेँ एक नम्बर काजक सूचीसँ निच्चाँ उतारि दू नम्बरमे रखलनि। कुशल कारीगर-कलाकार जकाँ एक काजकेँ विसर्जन करैसँ पहिने दोसरक संकल्प लऽ लेलनि। विचारि लेलनि जे जाबे जारनक धुआँ फरिच्छ हएत ताबे साँझो घुमा लेब। काजमे लगल देखि शोभो काका बिनु किछु बजने कोनचरे लगसँ झोरा ओसारक चौकीपर रखि पानिक प्रतीक्षा करए लगलाह। केना ने करितथि जाधरि घरबैया दिससँ पएर धोइले पानि नै पहुँचैत ताधरि कारखाना जकाँ उपस्थिति केना बनैत। मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे अभ्यागतक सेवा योग्य परिवार नै हुअए। सुगिया काकीक मनमे ईहो उठैत रहनि जे भाषणक कलाकारी होएत जे एतबे समैमे एतेटा बात बाजि देब मुदा काज तइसँ बहुत दूर होइत। चलन्हिारकेँ पएरक गति रोकिनिहार सेहो बीचमे आबि सकैए। नहियो औत, तँए जइमे हँ-नै दुनूक संभावना होइ ओकर गारंटी शत-प्रतिशत नै कएल जा सकैए। तँए सुगिया काकीकेँ होन्हि जे जइठाम दुविधा अछि तइठाम सावधानी नै करब तँ रेलबेक ट्रेन जकाँ एकठाम बिलंम भेने गन्तव्य स्थान धरि बिलमिते ससरब। ततबे नै अधा दिनक चलल छथि, बाटमे कतए आ की देखने हेताह, जँ कहीं एहेन समस्या देखने आएल होथि आ रस्तापर अमती काँटक झाँगड़ि जकाँ रखि दथि तखन तँ जिनगीये ढंस भऽ जाएत। भोजन काल जँ पान्कि बर्तने फूटि जाए तखन पानि केना परसब।

सभ काज सम्हारि काकी शोभा काकाक हाथमे लोटा धड़बैत पुछलखिन-
"हाल-चाल सभ आनंद किने?"

काकी पूछब जेना शोभा काकाक मन हौड़ि देलकनि। मन सहमि गेलनि जे भरिसक कोनो आक्रोश छन्हि। मुदा अनुकूल समए नै पाबि, उत्तर देखखिन-
"पुरबते।"

शोभा काकाक उत्तर सेहो सुगिया काकी ताड़ि लेलनि। तँए उचित समए नै पाबि सुगिया काकी सोचलनि जे पएर धोइले दरबज्जापर जेबे करताह तँ किअए ने टिकमे चिड़चिड़ी लगा दिअनि जे जाबे चिड़चिड़ी छोड़ौता ताबे चाह बना लेब। काज औगतेने तँ नै होइ छै। बड़ भूख लगए तँ पातक बदला हाथे नै पसारि दिऐ! बजलीह-
"नीमक गाछमे गराड़ लगि गेल अछि से कनी देखि लेब?"

सुगिया काकीक बात सुनि शोभा काका बजला किछु नै, मुदा मनमे उठलनि जे नीमक गाछमे कतौ दिवार लगै। एहेन बात किअए कहलनि। गराड़कैँ मीठ जड़ि पचै छै। तीत केना पचत। मुदा फेर मनमे उठलनि जे पुरुखक नाड़ी, नारीक नाड़ीसँ भिन्न चलैत अछि तँए समए लगबै दुआरे जँ कहने होथि। मुदा से केना बूझब जे कते समए लगाएब। भऽ सकैए जे जेतबे समए जड़ि खोड़ि गराड़ देखैमे लगत ततबे ने मुदा अपने केना बूझब? तइसँ नीक जे जाबे बजबए नै औतीह ताबे नै जाएब। पैछलो शनिमे जखन आएल रही पएर धोलाक बाद चाह पिऔने रहथि। तहिना चाहे बनबै दुआरे जँ टारने होथि। नीक हएत जे ताबे धरि कड़ची लऽ कऽ जड़ि खोड़ैत-खाड़ैत रहब जाबे धरि बजबए नै औती।

चाह छानि ओसारक चौकीपर रखि काकी दरबज्जा दिस बढ़ैत बजलीह-
"जअ काटए गेलौं तँ शतुआइन केनहि एलौं। चाह सेरा कऽ पानि भऽ गेल। आ झूठै-फूसेमे लटकल छी।"

झूठ-फूस सुनि शोभा काका चौंकलाह, कहू जे अपने लटकल छी कि हुनके किरदान्यि लटकल छी। मुदा किछु बजलाह नै। मनमे उठलनि जे जइ शून्यक कोनो मोजर नै छै सेहो घुमैत-फिड़ैत कतए-सँ-कतए उड़ि जाइत अछि। मुदा ई तँ शब्दवाण छी, कागभुशुण्डी जकाँ सभ दुनियाँ देखाऔत।

बजलाह-
“केहेन चाह बनेलौं जे लगले पानि भऽ जाएत।”
जहिना मंदिरक बीच भक्त भगवानक आगू ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि अपन मनोरथ मनमे दाबि पहिने स्तुति करैत तहिना मनक बात मनेमे रखि सुगिया काकी बजलीह-
“तबधलमे तपते चाहक ने सुआद होइ छै जँ से नै तँ जहिना अधिक बोखारक आगू कम बोखार बोखार नै रहि जाइत तहिना ने चाहो होइ छै।”

भूखलकेँ जहिना पहिल कौर आ पियासलकेँ पहिल घोंट सुखद होइ छै तहिना चाहक घोंट लगबिते शोभा काका बजलाह-
“गाम-घरक कि हाल्-चाल अछि?”

गाम-घरक हाल-चाल सुनि सुगिया काकीक मन उड़ए लगलनि। बजैसँ पहिने सोचए लगलीह जे किम्हरसँ बाजी। गाम दिससँ आकि परिवार दिससँ। फेर सम्हारैत बजलीह-
“गाममे तँ ऐबेर साक्षात् सरोसतिये आबि गेली। एकोटा विद्यार्थी फेल नै भेल।”
सभकेँ पास सुनि शोभा काकाक मन ओझरा गेलनि। जखन सभ पास केलक तखन सुशीलक केना बूझब जे कतेसँ नीक कतेसँ अधला केलक। पाशा बदलैत बजलाह-
“केकरा कोन डिबीजन भेल?”

काकील मन पहिनेसँ उड़ले रहनि, जहिना दौड़ै काल पएरक ठेकान नै रहैत तहिना प्रश्नकेँ सुआदने बिना बजली-
“सभसँ बेसी नम्बर अपने सुशीलकेँ अछि।”
सभसँ नीक सुनि शोभा काका बजलाह-
“अपने जे हुअए मुदा सुशीलकेँ आगूओ पढ़ाएब।”
आगूक नाओं सुनि सुगिया काकी, भकरार फूल जकाँ बजलीह-
“रिजल्ट निकललापर जखन सुशील संगी-साथी सभसँ भेँट कऽ आएल तखनेसँ मन खसल देखै छी।”
“से किअए?”
“कहैए जे आगू पढ़ैले सभ बाहर जाएत....?”
सुगिया काकीक पत्नी विचारकेँ शोभा काका विचारक अलमारीमे चौपेतैत बजलाह-

“नीक हएत जे बौऔकेँ सोर पाड़ि लिऔ। परिवारक सभ मिलि किअए ने परिवारक काजक विचार करब। केकरो मनोरथकेँ किअए कियो दाबत?”

शोभा काकाक विचार सुनि सुगिया काकीक मन खापड़िक धान जकाँ ऐ भागसँ ओइ भाग करए लगलनि। मुदा पतिक बात बूझि हनछिन नै कऽ कन्हलग्गू बड़द जकाँ जू गेलीह।
सुशीलक संग आबि काकी अपन घरमे अभ्यागत जकाँ बजलीह-
“बौआ, पहिने बाबूकेँ गोड़ लगिअनु।”
ओना सुशीलक मनमे अपनो रहबे करै जे अपन कर्त्तव्यक पालन केना केने छी से तँ पितेक बताऔल रस्ता छियनि। तँए ओइ पगक पग-सँ-पग टपलौं तखन किअए ने ओकरे हथियार बना जीवन कर्म करब। पिताकेँ गोड़ लागि सुशील मुँह उठा असिरवादक प्रतिक्षा करए लगल।
शोभा काका- “बाउ, आगूक कि विचार होइए?”
सुशील- “सभ बाहर जा-जा नाओं लिखाऔत।”
शोभा काका- “मनोरथ अपनो अछि, माइयोक मन तेहने देखै छी। चारि-पाँच साल नोकरी रहल अछि। तइ बीच देखबे करै छी चारू भाए-बहिन पढ़ै छी, दिनो-दिन आगूए बढ़ब। जइसँ खरचो बढ़िते जाएत। कते कमाइ छी से केकरोसँ छिपल अछि। तखन तँ आमद-खर्च देखि कऽ जँ परिवारक गाड़ी नै खिंचब तँ कते दिन परिवार ठाढ़ रहत।”
पतिक बातकेँ अनसुन करैत सुगिया काकी बिच्चेमे टपकि उठलीह-
“हम केकरासँ मोर छी जे अपन मनोरथ पूरा नै करब। जहिना सबहक बेटा पढ़ैले बाहर जाएत तहिना हमरो जाएत।”
पत्नीक विचारसँ शोभा काका सकपकेलाह नै। अपनो मनोरथ, पत्नियोक मनोरथ आ बेटोक मनोरथकेँ पानि-चिन्नी-नेबोक रस जकाँ घोड़ए लगलाह। मनक बात कहथिन केकरा। नजरि उठा कखनो पत्नी तँ कखनो पुत्रपर दैत विचारए लगलाह। विचित्र स्थिति बनि गेल अछि। नोकरीक चाहमे लोक कतए-सँ-कतए भागि रहल अछि। किअए ने भागत? जे हवा बनि गेल अछि आकि बनल जा रहल अछि तइमे जिनगीक ज्ञान पाछू पड़ि रहल अछि। नव तकनीक संग नव मनुष्य पैदा लऽ रहल अछि जेकर दूरी एते-बढ़ि रहल अछि जे चिन्ह-पहचिन्ह समाप्त भऽ रहल अछि।

~

जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म ५ जुलाइ १९४७। गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकार (दीर्घकथा संग्रह- शंभुदास; लघुकथा संग्रह १.गामक जिनगी, २. अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि; आ तरेगन -बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह); नाटककार (१.मिथिलाक बेटी, २.कम्प्रोमाइज, ३.झमेलिया वियाह आ ४.एकांकी-संचयन); उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत) आ कवि (१.इन्द्रधनुषी अकास, २.गीतांजलि आ ३.राति-दिन)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। गामक जिनगी, लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ क मूल पुरस्कार, आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; आ बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल बाल साहित्यक विदेह सम्मान २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।
